अखण्ड त्रिक ज्ञ ज्योतिष
[ सहायक भृगुसंहिता ]
लेखक
भगवानदास मित्तल
देहाती पुस्तक भण्डार

श्री गणेशाय नमः

# अखण्ड त्रिकालज्ञ ज्योतिष

(सहायक भृगुसंहिता पद्धति)

अर्थात्

## ज्योतिष शास्त्र

लेखक :
**भगवानदास मित्तल**
नया बाजार, मथुरा (यू० पी०)

प्रकाशक—
**देहाती पुस्तक भण्डार**
**चावड़ी बाजार, देहली-६**

दूसरी बार ] १९६३ [ मूल्य ४॥)
चार रुपये पचास नये पैसे

प्रकाशक
देहाती पुस्तक भण्डार,
चावड़ी बाजार, दिल्ली-६



मुद्रक
आर० के० प्रिंटर्स,
कमला नगर, दिल्ली-६

## समर्पण

हे पूर्ण ब्रह्म परमेश्वर जगत्पिता, आपकी महान् सत्ता को बारम्बार नमस्कार करते हुए यह पुस्तक पुष्प, आपकी सेवा में सादर सप्रेम भेंट करता हूँ।

—भगवान दास मित्तल

## पुस्तक परिचय

जेयतिष प्रेमो पाठकगण ! या पण्डित समाज, एवं सर्वसाधारण, सभी मनुष्यों की उत्कट इच्छा प्रायः भूत, भविष्य, वर्तमान के समय का ज्ञान प्राप्त करने की ही हुआ करती है। इस प्रकरण में अधिकांश ज्योतिषी पण्डित गण केवल विंशोत्तरी दशा व अन्तर दशाओं के आधार पर ही अपना भूत, भविष्य और वर्तमान का फलादेश निर्धारित किया करते हैं। किन्तु ग्रहों की दैनिक आकाश गति पर ध्यान नहीं देते हैं, जिसके फलस्वरूप, भूत,भविष्य और वर्तमान का हिसाब ठीक न बैठने के कारण से ही जनता को, ज्योतिष पर एवं ज्योतिषियों पर श्रद्धा कम होती चली जा रही है, अतः केवल इसी भारी कमी को दूर करने के लिए इस पुस्तक की रचना की गई है और इस पुस्तक का दृष्टिकोण, जोकि एक लम्बे समय के अनुभव सिद्ध योगों से प्राप्त हुआ है, यही है कि, पंचांग की ग्रह गोचर प्रणाली से इन नवग्रहों का जब कभी एक राशि से दूसरी राशी में स्थान परिवर्तन होता है और जितने-जितने समय तक जो-जो ग्रह जिस-जिस राशि में ठहरता है, उतने-उतने समय में यह सभी नवग्रह बारह लग्नों के अन्तर्गत (जिसमें कि सारे संसार का जन्म होता है) किस-किस लग्न वाले व्यक्तियों को क्या-क्या फल प्रदान करते हैं और कौन-कौन से समय में किस-किस लग्न वाले व्यक्तियों का भाग्योदय, विविध प्रकार से किस-किस तरह से होता रहता है। इन नवग्रहों की गोचर गति अर्थात् जनरल चाल का प्रत्यक्ष असर एक-एक दिन तक का मालूम होता रहता है और कोई दूसरा इतना चमत्कारिक व सरल साधन विंशोत्तरी दशाओं से प्राप्त ही नहीं है कि जिसमें बगैर गणित का सहारा लिए हुए ही इतना प्रत्यक्ष फलादेश मालूम किया जा सके।

+ जिस-जिस समय में जौन-जौन-सा ग्रह अस्त या वक्री होगा उस-उस समय में उन-उन ग्रहों का पूरा-पूरा असर प्राप्त नहीं होता है और जन्म लग्न गलत होने पर फलादेश सही नहीं मिल सकता।

# फलादेश की कुछ जानने योग्य विशेष बातें

पंचांग के अन्दर जिस-जिस प्रकार इन नवग्रहों की एक-एक राशि में प्रायः ठहरने की जो निश्चत अवधि बनी हुई है वह निम्न प्रकार है :

सू०—एक राशि में एक मास ठहरते हैं।
चं०—एक राशि में २।। दिन ठहरते हैं।
मं०—एक राशि में डेढ़ मास ठहरते हैं।
बु०—एक राशि में पौन मास ठहरते हैं।
गु०—एक राशि में १३ मास ठहरते हैं।
शु०—एक राशि में पौन मास ठहरते हैं।
श०—एक राशि में २।। साल ठहरते हैं।
रा०—एक राशि में १।। साल ठहरते हैं।
के०—एक राशि में १।। साल ठहरते हैं।

किन्तु केवल सू०, चं०, रा०, के० को छोड़कर बाकी के पांचों ग्रह अक्सर कभी-कभी वक्री मार्गी, अतिचार हो जाया करते हैं जिसके कारण ये पाँचों अपनी-अपनी सीमित अवधि समय को एक साथ लगातार भोगकर कुछ आगे-पीछे भी भोग लिया करते हैं। इसका स्पष्टीकरण सदैव पंचांग से ही मालूम किया जाता है कि कौन-कौन ग्रह किस-किस समय तक कौन-कौन राशि में भ्रमण करेगा और हमारी इस पुस्तक की फलादेश शैली के आधार से वह नवग्रह किस-किस प्रकार का फल कौन-कौन से समय में किस-किस स्थान वाले को कैसा-कैसा देते रहेंगे।

## गलत कुण्डली संशय सुधार

प्रायः लोगों की जन्म कुण्डलियाँ गलत बन जाती हैं। इससे भी फलादेश लोगों का सही नहीं बैठता है। इसलिए इसका स्पष्टीकरण कर देना भी आवश्यक है। अस्तु जिस समय माता के गर्भ से बच्चे के जन्म का समय आता है उस समय निम्न

प्रकार की नीचे लिखी बातों में से ही कोई कारण से जन्म कुण्डली गलत बन जाया करती है—

१. घड़ियों की गड़बड़ व सूर्य घड़ी और लोकल घड़ी के सपय के अन्तर का ध्यान करना।
२. स्त्रियों की असावधानता से ठीक ममय का ज्ञान न होना।
३. बच्चे का गर्भ से प्रथम खिसकने का समय भी उसकी जन्म यात्रा का मुहूर्त्त है।
४. बच्चे का गर्भ से बाहर प्रथम दिखाई देने का समय भी मुख्य है।
५. बच्चे का पूर्णरूपेण बाहर निकल आने का समय भी मुख्य है।
६. वच्चे का बाहर निकल कर प्रथम स्थान से निवृत्ति होने का समय भी मुख्य है।

इन्हीं सब कारणों से प्रायः मनुष्यों की जन्म कुण्डलियाँ अशुद्ध वन जाया करती हैं। इसलिए इसका ठीक-ठीक स्पष्टीकरण ग्रहों के फलादेश से ही मनुष्य के जीवन को मिलान करना उचित है। इसलिए जिस मनुष्य की जन्म-लग्न गलत प्रतीत हो उसके लिए ऐसा करना उचित होगा कि मौजूदा जन्म-लग्न से पहले की एक लग्न जो कुछ समय ही पूर्व निकल गई हो उसे बना ले और मौजूदा जन्म-लग्न से एक लग्न जो आगे आने वाली है उसे बना ले। फिर तीनों कुण्डलियों में से उसकी जीवनी को मिलाकर देखे। इस प्रकार से यदि घण्टे के हेर-फेर से जो लग्न गलत बनी हुई होगी तो उसका फलादेश मिला कर देखने से लग्न बिलकुल सही हो जायेगी, जिसका फलादेशीय निर्णय पूर्णरूपेण हमारी भृगु संहिता पद्धति से ठीक-ठीक हर एक आदमी मालूम कर सकता है।

प्रत्येक मनुष्य की जन्म कुण्डलियों के इन बारह घरों में कौन-कौन से स्थान से क्या-क्या बातें देखी जाती हैं और इन बारह घरों की वस्तुओं का कौन-कौन से समय में किस-किस लग्न वाले व्यक्तियों को क्या-क्या फल जीवन भर मिलता रहेगा, इसी का फलित स्पष्टीकरण इस पुस्तक में बड़े सरल ढंग से अलग-अलग भावों में किया गया है।*
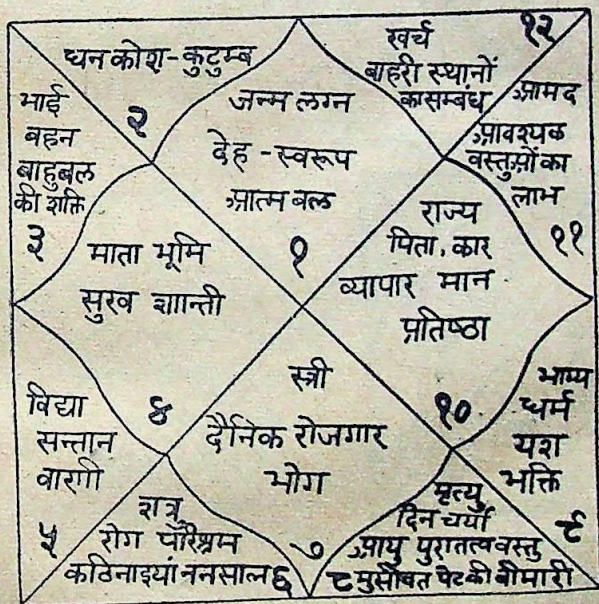
* आगे की भाग्योदय वाली कुण्डलियों के अन्तर्गत, पूर्ण भाग्योदय काल का समय तब ही समझना चाहिए, जबकि सभी ग्रह एक ही समय में उस कुण्डली के अनुसार मौजूद हों।

**खास नोट**—जन्म-लग्न से छठे और आठवें तथा बारहवें स्थानों के स्वामी ग्रह तथा छठे, आठवें, बारहवें स्थानों में आये हुए ग्रह तथा नीच राशि में आये हुए ग्रह यह सभी सदैव कष्टदायक सिद्ध होते हैं।

## फलादेश जानने के नम्बर
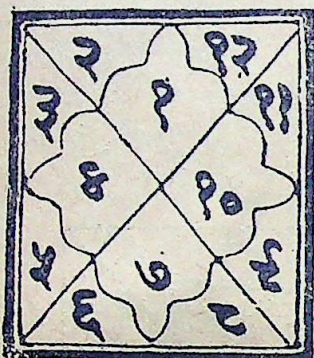
### मेष लग्न

इस प्रकार की मेष लग्न वाले प्राणियों को अपने जीवन के भाग्योदय आदि प्रत्येक समय की जानकारी करने के लिए फलादेश नं. १ से लेकर २५ तक के फारमूलों में देखना चाहिए।

### वृषभ लग्न

इस प्रकार की वृषभ लग्न वाले प्राणियों को अपने जीवन के भाग्योदय आदि प्रत्येक समय की जानकारी करने के लिए फलादेश नं० २६ से लेकर ५० तक के फारमूलों में देखना चाहिये।
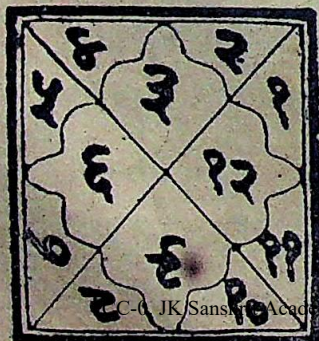
### मिथुन लग्न

इस प्रकार की मिथुन लग्न वाले प्राणियों को अपने जीवन के भाग्योदय आदि प्रत्येक समय की जानकारी करने के लिए फलादेश नं० ५१ से लेकर ७५ तक के फारमूलों में देखना चाहिये।

## कर्क लग्न
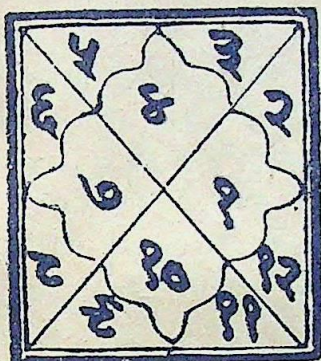
इस प्रकार की कर्क लग्न वाले प्राणियों को अपने जीवन के भाग्योदय आदि प्रत्येक समय की जानकारी करने के लिए फलादेश नं० ७६ से लेकर १०० तक के फारमूलों में देखना चाहिये।

## सिंह लग्न
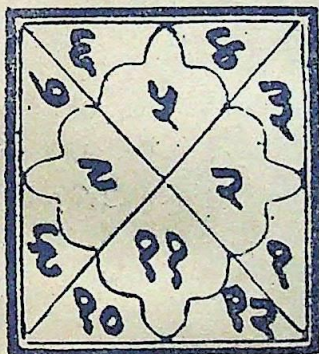
इस प्रकार की सिंह लग्न वाले प्राणियों को अपने जीवन में भाग्योदय आदि प्रत्येक समय की जानकारी करने के लिए फलादेश नं० १०१ से लेकर १२५ तक के फारमूलों में देखना चाहिये।

## कन्या लग्न
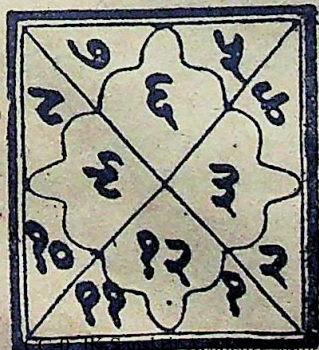
इस प्रकार की कन्या लग्न वाले प्राणियों को अपने जीवन के भाग्योदय आदि प्रत्येक समय की जानकारी करने के लिये फलादेश नं० १२६ से लेकर १५० तक के फारमूलों में देखना चाहिए।

### तुला लग्न

इस प्रकार की तुला लग्न वाले प्राणियों को अपने जीवन के भाग्योदय आदि प्रत्येक समय की जानकारी करने के लिये फलादेश नं० १५१ से लेकर १७५ तक के फारमूलों में देखना चाहिए।
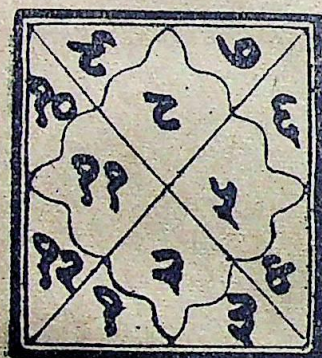
### वृश्चिक लग्न

इस प्रकार की वृश्चिक लग्न वाले प्राणियों को अपने जीवन के भाग्योदय आदि प्रत्येक समय की जानकारी करने के लिए फलादेश नं० १७६ से लेकर २०० तक के फारमूलों में देखना चाहिए।

### धन लग्न

इस प्रकार की धन लग्न वाले प्राणियों को अपने जीवन के भाग्योदय आदि प्रत्येक समय की जानकारी करने के लिए फलादेश नं० २०१ से लेकर २२५ तक के फारमूलों में देखना चाहिए।

## मकर लग्न

इस प्रकार की मकर लग्न वाले प्राणियों को अपने जीवन के भाग्योदय आदि प्रत्येक समय की जानकारी करने के लिए फलादेश नं० २२६ से लेकर २५० तक के फारमूलों में देखना चाहिए।
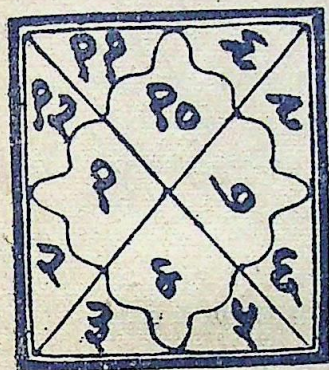
## कुम्भ लग्न

इस प्रकार की कुम्भ लग्न वाले प्राणियों को अपने जीवन के भाग्योदय आदि प्रत्येक समय की जानकारी करने के लिए फलादेश नं० २५१ से लेकर २७५ तक के फारमूलों में देखना चाहिए।
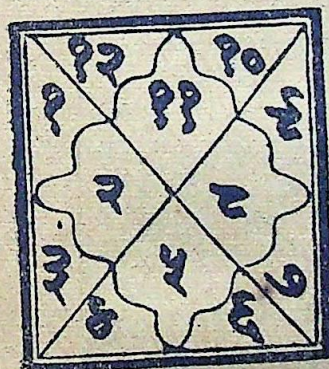
## मीन लग्न

इस प्रकार की मीन लग्न वाले प्राणियों को अपने जीवन के भाग्योदय आदि प्रत्येक समय की जानकारी करने के लिए फलादेश नं० २७६ से लेकर ३०० तक के फारमूलों में देखना चाहिए।
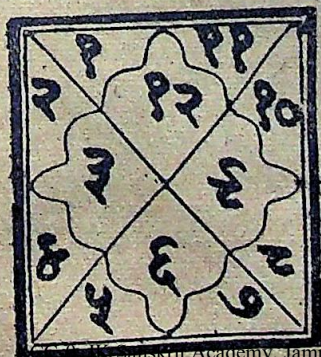
**आवश्यक नोट**—आगे की फलादेशीय फारमूलों वाली ३०० कुण्डलियों में जोकि बगैर ग्रहों वाली हैं, उनके अन्दर एक-एक निशान क्रॉस × का लगा हुआ है। उसका भाव यह है कि इस क्रॉस वाले स्थान पर ग्रहों की स्थिति का फलित वर्णन किया है अर्थात् अमुक-अमुक राशि पर जब ग्रहों की चाल आवेगी तब-तब वह इस क्रॉस वाले कोष्टिक में ही स्थित रह कर अपना-अपना फल प्रदान करेंगे।

## मेष लगनान्तर-भाग्योदय, कारक, नवग्रह व समय

मेष लग्न नं० १
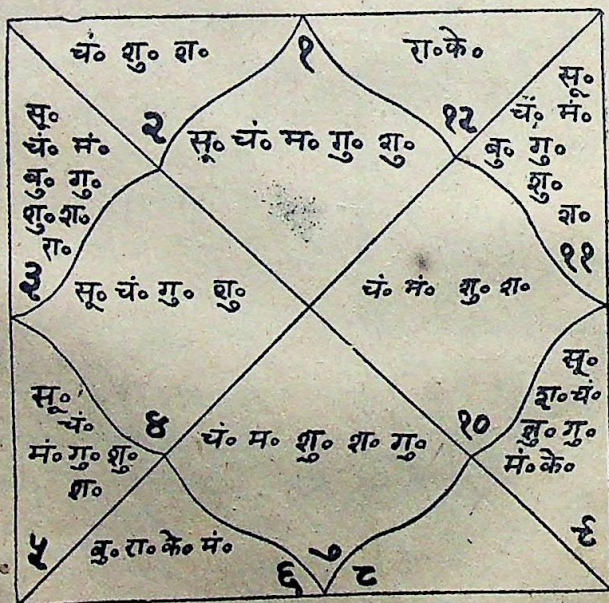
जिस समय मेष लग्न वाले प्राणियों को ऊपर स्थित कुण्डली के अनुसार यह नव ग्रह पंचांग गति की गोचर प्रणाली से जब-जब

कभी एक ही समय में प्रायः यह ग्रह सभी इस-इस प्रकार की राशियों में आवेंगे, तब-तब ही मेष लग्न वाले प्राणियों का भाग्योदय विविध प्रकार से होता रहेगा।

सू०—मेष, मिथुन, कर्क, सिंह, धन, कुम्भ राशियों पर।

च०—मेष, बृष, मिथुन, कर्क, सिंह, तुला, धन, मकर, कुम्भ राशियों पर।

मं०—मेष, मिथुन, सिंह, कन्या, तुला, धन, मकर, कुम्भ राशियों पर।

बु०—मिथुन, कन्या, कुम्भ राशियों पर।

गु०—मेष, मिथुन, कर्क, सिंह, तुला, धन, कुम्भ राशियों पर

शु०—मेष, वृष, मिथुन, कर्क, सिंह, तुला, धन, मकर, कुम्भ राशियों पर।

श०—वृष, मिथुन, सिंह, तुला, धन, मकर, कुम्भ राशियों पर।

रा०—मिथुन, कन्या, मीन राशियों पर।

के०—कन्या, धन, मीन राशियों पर।

अर्थात् जिस-जिस साल मास, पक्ष व दिनों में यह नवग्रह उपरोक्त २ राशियों में एक ही समय में जब २ भी आयेंगे तब २ भाग्यकारक व लाभकारक सिद्ध होंगे, किन्तु कोई भी ग्रह उस समय सूर्य से अस्त नहीं होना चाहिए और यदि ऊपर लिखी स्थिति के अनुसार ही कहीं कोई ग्रह जन्म कुण्डली में भी इसी प्रकार के बैठे होंगे तब तो बहुत ही सुन्दर फल प्रदान करने वाले ग्रह समझे जायेंगे।
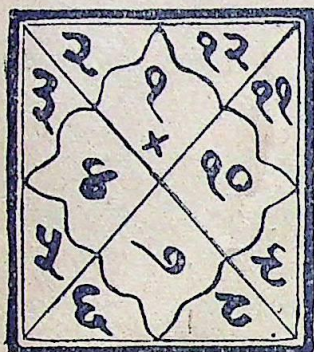
**मेष लगनान्तर अनुकूल ग्रह फलम**

**मेष लग्न फलादेश नं० २**

जिस समय में, मेष राशि पर सूर्य, शुक्र, गुरु, मंगल, चन्द्र, इन पांच ग्रहों में से जब २ कभी कोई ग्रहों आवेंगे तब २ देह को मान-सम्मान व प्रभुत्व और उन्नति प्राप्त कराते हैं। और यदि मंगल-देव, मेष, मिथुन, सिंह, कन्या, तुला, धन, मकर, कुम्भ इन आठ राशियों पर जब २ कभी आवेंगे तब २ कुछ अन्य विषयों के अतिरिक्त उपरोक्त विषयक फल भी प्रदान करते हैं।

**मेष लग्न फलादेश नं० ३**

जिस समय में वृषभ राशि पर शुक्र, शनि, चन्द्र, गुरु इन चार ग्रहों में से जब२ कभी कोई आवेगा तब-तब धन, स्थान की वृद्धि तथा कौटुम्बिक शक्ति का विकास पैदा करते हैं। और यदि शुक्रदेव वृष, मिथुन, कर्क, सिंह, तुला, धन, मकर, कुम्भ, मेष, इन नौ स्थानों पर भी जब २ कभी आवेंगे तब २ भी कुछ अन्य विषयों के अतिरिक्त उपरोक्त विषय फल भी प्रदान करते हैं।

**मेष लग्न फलादेश नं० ४**

जिस समय में मिथुन राषि पर शुक्र शनि चन्द्र सूर्य गुरु बुद्ध मंगल राहू इन आठ ग्रहों में से जब-जब कभी कोई आवेंगे तभी २ बाहुबल के कार्य और प्रभाव से लाभ व उन्नति की प्राप्ति करते हैं तथा बहन-भाइयों के स्थान में भी प्रभाव व शक्ति पैदा करते हैं। और यदि बुद्धदेव, मिथुन, कर्क, सिंह, कन्या, तुला, धन, मकर, कुम्भ, मेष इन नौ राशियों पर जब-जब कभी आयेंगे तब-तब भी कुछ अन्य विषयों के अतिरिक्त उपरोक्त विषयक फल भी प्रदान करते हैं।
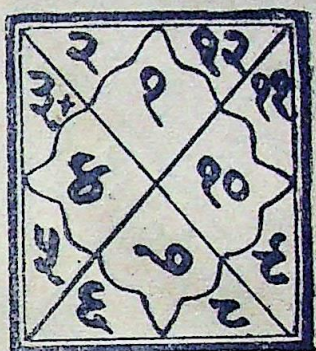
**मेष लग्न फलादेश नं० ५**

जिस समय में कक राशि पर चन्द्र, सूर्य, शुक्र, गुरु, शनि इन पाँच ग्रहों में से जब-जब कभी कोई आयेंगे तब-तब मातृ स्थान में शक्ति का संचार व सुख सम्बन्धी मामलों में वृद्धि का योग एवं भूमि आदि का सुख लाभ पैदा करते हैं। और यदि चन्द्रदेव, कर्क, सिंह, तुला, धन, मकर, कुम्भ, मेष, वृष, मिथुन इन नौ राशियों पर भी जब-जब कभी आयेंगे तब-तब भी कुछ अन्य विषयों के अतिरिक्त उपरोक्त विषयक फल भी प्रदान करते हैं।
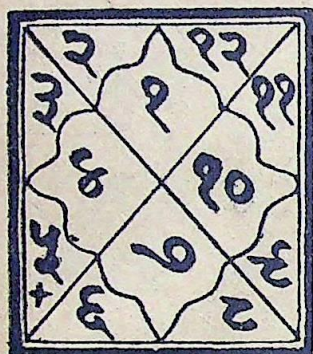
**मेष लग्न फलादेश नं० ६**

जिस समय में सिंह राशि पर सूर्य, चन्द्र, गुरु, शुक्र, शनि इन पाँच ग्रहों में से जब कभी कोई ग्रह आयेंगे तब-तब संतान पक्ष में शक्ति का उदय, विद्या तथा ज्ञान की वृद्धि और वाणी का विकास पैदा करते हैं और मंगल तथा बुद्ध दोनों भा जब सिंह, धन, मकर, कुम्भ, मेष, मिथुन, कर्क इन सात राशियों पर जब-जब कभी आयेंगे तब-तब भी कुछ अन्य विषयों के अतिरिक्त उपरोक्त विषयक फल भी प्रदान करते हैं।
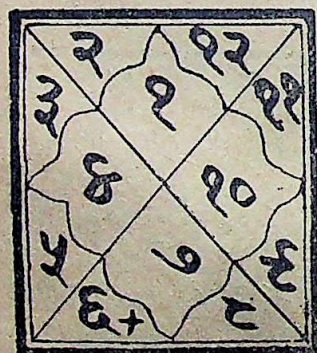
**मेष लग्न फलादेश नं० ७**

जिस समय में कन्या राशि पर बुद्ध, शनि, सूर्य, मंगल, गुरु, राहू, केतू इन सातों ग्रहों में से कोई जब-जब ग्रह आवेंगे तब-तब कुछ दिक्कतों के योग से प्रभाव की वृद्धि, शत्रु का दमन तथा 'दिक्कतों पर विजय प्राप्त करते हैं और यदि बुद्धदेव. कन्या, तुला, धन, मकर, कुम्भ, मेष, मिथुन, कर्क, सिंह इन नौ राशियों पर जब-जब कभी आयेंगे तब-तब भी कुछ अन्य विषयों के अतिरिक्त उपरोक्त विषयक फल भी प्रदान करते हैं।

मेष लग्न फलादेश नं० ८

जिस समय में तुला राशि पर शुक्र, शनि, चन्द्र, गुरु इन चारों ग्रहों में से जब-जब कभी कोई आयेंगे तब-तब दैनिक रोजगार की लाइन में फायदा और उन्नति तथा स्त्री स्थान में सुख भोग की व मान की प्राप्ति पैदा करते हैं। और यदि शुक्रदेव तुला, धन, मकर, कुम्भ, मेष, मिथुन, कर्क, सिंह इन आठ राशियों पर जब-जब कभी आयेंगे तब-तब भी कुछ अन्य विषयों के अतिरिक्त उपरोक्त विषयक फल भी प्रदान करते हैं।

मेष लग्न फलादेश नं० ९

जिस समय में वृश्चिक राशि पर मंगल, शुक्र, शनि, गुरु, सूर्य, इन पाँच ग्रहों में से जब-जब कभी कोई आयेंगे, तब-तब कुछ दिक्कतों के साथ किसी पुरातत्व लाइन से लाभ की सूरत तथा जीवन व्यतीत करने के कुछ मजबूत व सहायक साधन पैदा करते हैं। और यदि मंगलदेव, वृश्चिक, धन, कुम्भ, मेष, वृष, मिथुन, सिंह, तुला इन नौ राशियों पर जब-जब कभी आयेंगे तब-तब भी कुछ अन्य विषयों के अतिरिक्त उपरोक्त फल भी प्रदान करते हैं।

**मेष लग्न फलादेश नं० १०**

जिस समय में धन राशि पर शुक्र, शनी, चन्द्र, सूर्य, गुरु इन पाँच ग्रहों में से जब २ कोई आयेंगे तब-तब भाग्य स्थान की उन्नति व धर्म और यश की प्राप्ति करते हैं। और यदि मंगल, बुद्ध, केतू इन तीनों में से कोई भी ग्रह धन राशी पर आयें या गुरुदेव, धन, कुम्भ, मेष, मिथुन, कर्क, सिंह, तुला इन सात राशियों पर जब-जब कभी आयेंगे तब-तब भी कुछ अन्य विषयों के अतिरिक्त उपरोक्त विषयक फल भी प्रदान करते हैं।

**मेष लग्न फलादेश नं० ११**

जिस समय में मकर राशि पर शनि, शुक्र, मंगल, चन्द्र इन चार ग्रहों में से जब-जब कभी कोई आयेंगे तब-तब राज, समाज व कारोबार एवं पिता स्थान सम्बन्धी व मान प्रतिष्ठा सम्बन्धी उन्नतिदायक मार्ग में उत्तम कर्म के द्वारा सफलता पैदा करते हैं। और यदि सूर्य या बुद्ध इन दोनों में से कोई भी मकर राशि पर आवें या शनिदेव, मकर, कुम्भ, वृष, मिथुन, कर्क, सिंह, तुला, धन इन आठ राशियों पर जब-जब कभी आवेंगे तब-तब भी कुछ अन्य विषयों के अति-रिक्त उपरोक्त विषयक फल भी प्रदान करते हैं।

मेष लग्न फलादेश नं० १२

जिस समय में कुम्भ राशि पर शनि, शुक्र, मंगल, चन्द्र, सूर्य, बुद्ध, गुरु, राहू, केतू इन नौ ग्रहों में से कोई भी जब-जब कभी आयेंगे तब-तब आमदनी की वृद्धि और आवश्यकताओं की विविध रूप से पूर्त्ति करते हैं। और यदि शनिदेव, कुम्भ, वृष, मिथुन, कर्क, सिंह, तुला, धन, मकर इन आठ राशियों पर जब-जब आयेंगे तब-तब भी कुछ अन्य विषयों के अतिरिक्त उपरोक्त विषयक फल भी प्रदान करते हैं।
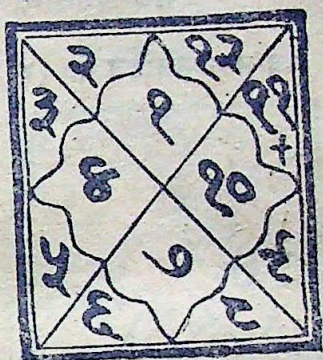
मेष लग्न फलादेश नं० १३

जिस समय में मीन राशि पर गुरु, शनी, चन्द्र, शुक्र, सूर्य इन पाँच ग्रहों में से जब-जब कभी कोई आयेंगे तब-तब खर्च की अधिकता की शक्ति और बाहरी स्थानों से अच्छा लाभप्रद संपर्क पैदा करते हैं और यदि गुरुदेव, मीन, मेष, वृष, मिथुन, कर्क, सिंह, तुला, धन, कुम्भ इन नौ राशियों में से जब-जब कभी आयेंगे तब-तब भी कुछ अन्य विषयों के अतिरिक्त उपरोक्त विषयक फल भी प्रदान करते हैं।

## मेष लगनान्तर प्रतिकूल ग्रह फलम्

**मेष लग्न फलादेश नं० १४**

जिस समय में मेष राशि पर शनि, बुद्ध, राहू, केतू, इन चार ग्रहों में से जब-जब कभी कोई भी आयेंगे तब देह को परेशानी व परिश्रम का योग पैदा करते हैं। और यदि मंगलदेव, वृष, कर्क, मीन, कन्या, वृश्चिक इन पाँचों राशियों पर जब-जब कभी कोई आयेंगे तब-तब कुछ अन्य विषयों के अतिरिक्त उपर्युक्त विषयक फल भी प्रदान करते हैं।

**मेष लग्न फलादेश नं० १५**

जिस समय में वृष राशि पर मंगल, बुद्ध, राहू, केतू इन चार ग्रहों में से जब-जब कभी कोई आयेंगे तब-तब धन स्थान में कुछ हानि, कुछ परेशानी और कुछ कौटुम्बिक अशांति का योग बनाते हैं। और यदि शुक्रदेव, कन्या, वृश्चिक, मीन, इन राशियों पर जब-जब कभी आयेंगे तब-तब कुछ विषयों के अतिरिक्त उपर्युक्त विषयक फल भी प्रदान करते हैं।

मेष लग्न फलादेश नं० १६

जिस समय में मिथुन राशि पर केतू जब-जब कभी आयेंगे तब-तब बहन-भाई के स्थान में परेशानी, बाहुबल के कामों में थकान पैदा करते हैं और यदि बुद्धदेव, वृश्चिक, मीन, वृषभ इन तीन राशियों पर जब-जब कभी आयेंगे तब-तब कुछ अन्य विषयों के अतिरिक्त उपरोक्त विषयक फल भी प्रदान करते हैं।
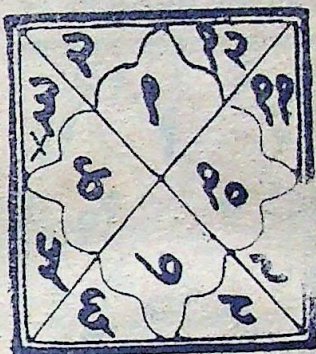
मेष लग्न फलादेश नं० १७

जिस समय में कर्क राशि पर राहू, केतू, मंगल, बुद्ध इन चार ग्रहों में से जब-जब कभी कोई आयेंगे तब-तब मातृ स्थान में कुछ परेशानी व सुख सम्बन्धी मामलों में व जमीन, जायदाद सम्बन्धी मामलों में कुछ परेशानी पैदा करते हैं। और यदि चन्द्रदेव, कन्या, वृश्चिक, मीन इन तीन राशियों पर जब-जब कभी आयेंगे तब-तब कुछ अन्य विषयों के अतिरिक्त उपरोक्त विषयक फल भी प्रदान करते हैं।

मेष लग्न फलादेश नं० १८

जिस समय में सिंह राशि पर राहू या केतू, दोनों में से कोई भी जब-जब कभी आयेंगे, तब-तब संतान पक्ष में क्लेश और दिमाग में अशान्ति पैदा करते हैं। और यदि सूर्यदेव, कन्या, तुला, वृश्चिक, मीन, धन इन पाँच राशियों में जब-जब कभी आयेंगे तब-तब कुछ अन्य विषयों के अतिरिक्त, उपर्युक्त विषयक फल भी प्रदान करते हैं।

मेष लग्न फलादेश नं० १९

जिस समय में कन्या राशि पर शुक्र, चन्द्र दोनों में से कोई भी जब-जब कभी आयेंगे, तब-तब शत्रु पक्ष से या कुछ दिक्कतों से अशांति पैदा करते हैं। और यदि बुद्धदेव, वृश्चिक, मीन, वृष इन राशियों में जब कभी आयेंगे तब-तब भी कुछ अन्य विषयों के अतिरिक्त उपरोक्त विषयक फल भी प्रदान करते हैं।

मेष लग्न फलादेश नं० २०

जिस समय तुला राशि पर सूर्य, मंगल, बुद्ध, राहु, केतू इन पाँच ग्रहों में से जब-जब कभी कोई आयेंगे तब-तब स्त्री स्थान में कुछ अशान्ति व दैनिक रोजगार की लाइन में कुछ परेशानी पैदा करते हैं और यदि शुक्रदेव, कन्या, वृश्चिक, मीन, वृष इन चार राशियों पर जब-जब कभी आयेंगे तब-तब भी कुछ अन्य विषयों के अतिरिक्त उपरोक्त विषयक फल भी प्रदान करते हैं।
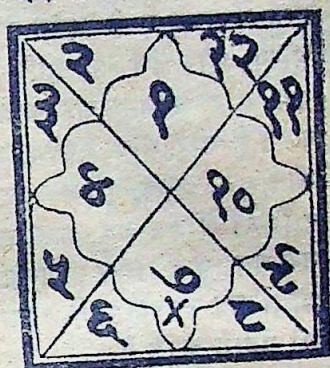
मेष लग्न फलादेश नं० २१

जिस समय में वृश्चिक राशि पर चन्द्रमा, बुद्ध, राहु, केतू इन चार ग्रहों में से जब-जब कभी कोई आयेंगे तब-तब किसी पुरातत्व वस्तु की हानि व उदर विकार और जीवन को अशान्ति व धक्का पहुँचता है। और यदि मंगलदेव, मीन, कर्क, वृषभ इन तीन राशियों पर जब-जब कभी आयेंगे, तब-तब भी कुछ अन्य विषयों के अतिरिक्त उपरोक्त विषयक फल भी प्रदान करते हैं।

जिस समय में धनराशि पर राहु जब-जब कभी आयेंगे तब-तब भाग्य और धर्म की हानि तथा यश और बरकत की कमी पैदा करते हैं और यदि गुरुदेव, मकर, मीन, वृष, कन्या, वृश्चिक इन पाँच राशियों में जब-जब कभी आयेंगे तब-तब कुछ अन्य विषयों के अतिरिक्त उपरोक्त विषयक फल भी प्रदान करते हैं।

मेष लग्न फलादेश नं० २२
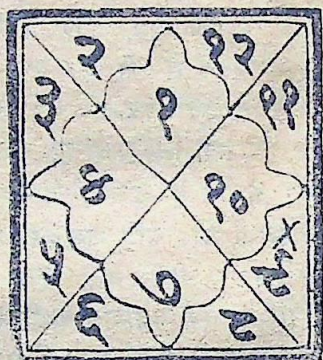
जिस समय में मकर राशि पर गुरु, राहु, केतू इन तीन ग्रहों में से जब-जब कभी कोई आयें, तब-तब पिता के स्थान, सम्बन्ध में तथा राज, समाज व कारोबार के सम्बन्ध में कुछ परेशानी व दिक्कतें पैदा करते हैं और यदि शनिदेव, मीन, मेष, कन्या वृश्चिक इन चार राशियों में भी जब-जब कभी आयेंगे तब-तब भी कुज अन्य विषयों के अतिरिक्त उपरोक्त विषयक फल भी प्रदान करते हैं।

मेष लग्न फलादेश न० २३
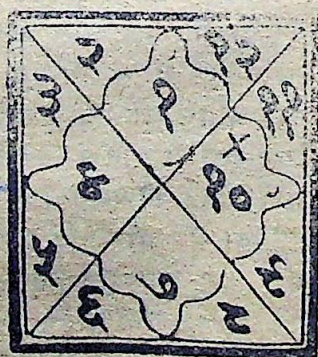
मेष लग्न फलादेश नं० २४

जिस समय में कुम्भ राशि पर केतू या बुद्ध, दोनों में से कोई भी ग्रह जब-जब कभी आयेंगे, तब-तब आमदनी के स्थान में कुछ परिश्रम का योग पैदा करते हैं और यदि शनिदेव मीन, मेष, कन्या, वृश्चिक, इन चार राशियों पर जब-जब कभी आयेंगे, तब-तब भी कुछ अन्य विषयों के अतिरिक्त उपरोक्त विषयक फल भी प्रदान करते हैं।
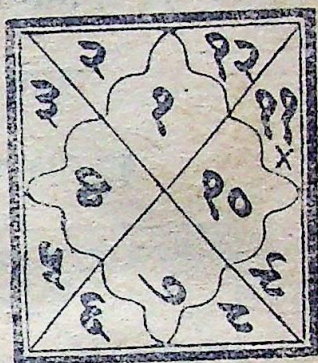
मेष लग्न फलादेश नं० २५

जिस समय में मीन राशि पर बुद्ध, मंगल, राहू, केतू इन चार ग्रहों में से जब जब कभी कोई आयेंगे, तब-तब खर्च के स्थान में परेशानी तथा बाहरी दूसरे स्थानों के सम्बन्ध में कुछ दिक्कतें पैदा करते हैं और यदि गुरुदेव, कन्या, वृश्चिक, मकर इन तीन राशियों में जब-जब कभी आयेंगे, तब-तब कुछ अन्य विषयों के अतिरिक्त उपरोक्त विषयक फल भी प्रदान करते हैं।

# वृष लगनान्तर भाग्योदय कारक, नवग्रह व समय फल

## वृष लग्न फलादेश नम्बर २६

जिस समय में वृष लग्न वाले प्राणियों को ऊपर स्थित कुण्डली के अनुसार यह नवग्रह पंचांग गति की गोचर प्रणाली से जब-जब कभी एक ही समय में प्रायः सभी ग्रह इस प्रकार की राशियों में आवेंगे तब-तब ही वृष लग्न वाले प्राणियों का भाग्योदय व लाभ विविध प्रकार से होता रहेगा। यानी—
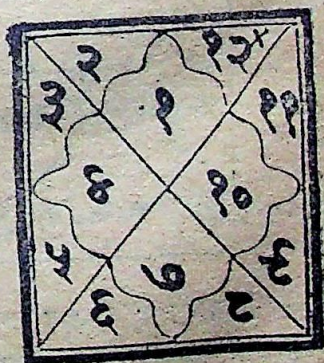
सू०—वृष, मिथुन, कर्क, सिंह, कन्या, वृश्चिक, कुम्भ, मीन इन-इन राशियों पर कहीं भी हों।

चं०—वृष, मिथुन, कर्क, सिंह, कन्या, मकर, कुम्भ, मीन इन-इन राशियों पर कहीं भी हों।

मं०—सिंह, वृश्चिक, मकर, मीन, इन-इन राशियों पर कहीं भी हों।

बु०—वृष, मिथुन, कर्क, सिंह, कन्या, वृश्चिक, मकर इन-इन राशियों पर कहीं भी हों।

गु०—कर्क, सिंह, वृश्चिक, मीन राशियों पर कहीं भी हों।

शु०—वृष, मिथुन, कर्क, वृश्चिक, मकर, कुम्भ, मीन इन-इन राशियों पर कहीं भी हों।

श०—वृष, मिथुन, कर्क, कन्या, तुला, वृश्चिक, मकर, कुम्भ, मीन इन-इन राशियों पर कहीं भी हों।

रा०—मिथुन, तुला, मीन, मेष इन-इन राशियों पर कहीं भी हों।

के०—तुला, धन, मीन, मेष इन-इन राशियों पर कहीं भी हों।

अर्थात्—जिस-जिस साल, मास, पक्ष व दिनों में यह नवग्रह उपरोक्त-उपरोक्त राशियों में एक ही समय में जब-जब आयेंगे तब ही भाग्यकारक व लाभकारक सिद्ध होते हैं किन्तु कोई भी ग्रह सूर्य से अस्त नहीं होना चाहिये।

## वृष लगनान्तर अनुकूल ग्रह फलम

वृष लग्न फलादेश नं० २७

जिस समय में वृष राशि पर शुक्र, बुद्ध, चन्द्र, सूर्य, शनि इन पाँच ग्रहों में से जब-जब कभी कोई आयेंगे, तब-तब देह को मान व प्रभाव और लाभ सुख की प्राप्ति करते हैं। और यदि गुरु वृषभ, राशि पर आये या शुक्रदेव, मिथुन, कर्क, सिंह, वृश्चिक, मकर, कुम्भ, मीन, वृष इन आठ राशियों पर जब-जब कभी आयेंगे, तब-तब भी कुछ अन्य विषयों के अतिरिक्त उपरोक्त विषयक फल भी प्रदान करते हैं।
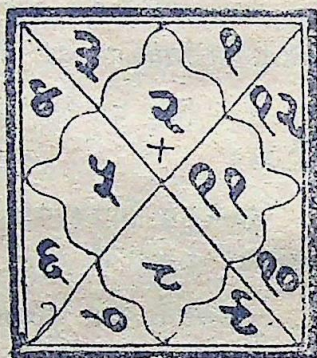
वृष लग्न फलादेश नं० २८

जिस समय में मिथुन राशि पर बुद्ध, शुक्र, चन्द्र, शनि, सूर्य, राहू इन छः ग्रहों में से जब-जब कभी कोई आयेंगे, तब-तब धन स्थान की वृद्धि तथा कौटुम्बिक विकास पैदा करते हैं। और यदि गुरुदेव, मिथुन पर आये या बुद्ध-देव मिथुन, कर्क, सिंह, कन्या, वृश्चिक, मकर, कुम्भ, वृष इन आठ राशियों पर जब-जब कभी आयेंगे तब-तब भी कुछ अन्य विषयों के अतिरिक्त उपरोक्त विषयक फल भी प्रदान करते हैं।

**वृष लग्न फलादेश नं० २६**
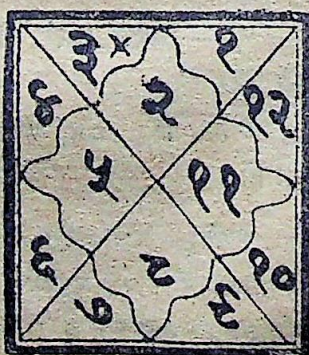
जिस समय में कर्क राशि पर चन्द्र, सूय, बुद्ध, शनि, गुरु इन पाँच ग्रहों में से जब-जब कभी कोई आयेंगे, तब-तब भाई बहन के स्थान में, बाहुबल सम्बन्धी कार्यों में सफलता पैदा करते हैं। और यदि शुक्रदेव कर्क राशि पर जब-जब कभी आवे या चन्द्रदेव, कर्क, सिंह, कन्या, मकर, कुम्भ, मीन, वृष इन सात राशियों पर जब-जब कभी आयेंगे, तब-तब भी कुछ अन्य विषयों के अतिरिक्त उपरोक्त विषयक फल भी प्रदान करते हैं।

**वृष लग्न फलदेश नं० ३०**
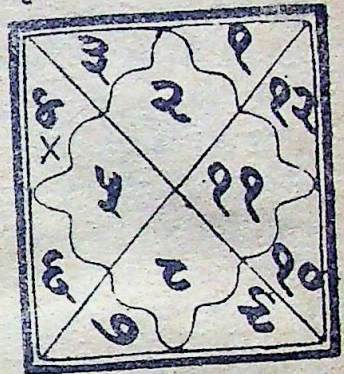
जिस समय में सिंह राश पर सूर्य, बुद्ध, चन्द्र, शनि इन चार ग्रहों में से जब-जब कभी कोई आयेंगे तब-तब मातृ स्थान सम्बन्धी, भूमि स्थान संबंधी एवं सुख संबंधी मामलों में लाभ का योग पैदा करते हैं। और यदि शुक्र, गुरु, मंगल इन तीनों में से कोई भी जब-जब सिंह राशि पर आयें या सूर्यदेव कन्या, वृश्चिक, मकर, कुम्भ, मीन, मेष, वृष, मिथुन, कर्क, सिंह इन दस राशियों पर जब-जब कभी आयेंगे, तब-तब कुछ अन्य विषयों के अतिरिक्त उपरोक्त विषयक फल भी प्रदान करते हैं।

जिस समय में कन्या राशि पर बुद्ध, सूर्य, चन्द्र, शनि, गुरु, इन पांच ग्रहों में से जब-जब कभी कोई आयेंगे तब-तब सन्तान पक्ष में शक्ति का विकास तथा विद्या और ज्ञान की वृद्धि एवं वाणी की कला पैदा करते हैं। और यदि बुद्धदेव कन्या, वृश्चिक मकर, कुम्भ, वृष, मिथुन, कर्क, सिंह इन आठ राशियों पर जब-जब कभी आयेंगे, तब-तब भी कुछ अन्य विषयों के अतिरिक्त उपयोक्त विषयक फल भी प्रदान करते हैं।

वृष लग्न फलादेश नं० ३१

जिस समय में तुला राशि पर शुक्र, शनि, गुरु, चन्द्र, बुद्ध, इन पांच ग्रहों में से जब-जब कभी कोई आयेंगे तब-तब कुछ दिक्कतों द्वारा शत्रु पक्ष से परिश्रम के योग से लाभ करते हैं और ननसाल पक्ष में प्रभाव पैदा करते हैं। यदि राहू या केतु, तुला राशि पर आयें तो ननसाल पक्ष की अच्छाई को छोड़ कर, शत्रु पक्ष में व दिक्कतों में विजय प्रदान करते हैं और यदि शुक्रदेव, तुला, वृश्चिक, मकर, कुम्भ, मीन, वृष, मिथुन, कर्क, सिंह इन नौ राशियों पर जब-जब कभी आयेंगे तब-तब कुछ अन्य विषयों के अतिरिक्त उपरोक्त विषयक फल भी प्रदान करते हैं।

वृष लग्न फलादेश नं० ३२

वृष लग्न फलादेश नं० ३३

जिस समय में कन्या राशि पर शनि, बुद्ध, सूर्य इन तीन ग्रहों में से जब-जब कभी कोई आयेंगे तब-तब स्त्री स्थान में व दैनिक रोजगार की लाइन में तरक्की, उल्लास, लाभ और यश पैदा करते हैं और यदि गुरु या शुक्र दोनों में से कोई आयेंगे तो कुछ प्रपंच व परेशानी के योग से स्त्री व दैनिक रोजगार के स्थान में लाभ पैदा करते हैं और यदि मंगलदेव, वृश्चिक, मकर, कुम्भ, मीन, मेष, वृष, सिंह, कन्या इन राशियों पर जब-जब कभी आयेंगे तब-तब कुछ अन्य विषयों के अतिरिक्त उपरोक्त विषयक फल भी प्रदान करते हैं।
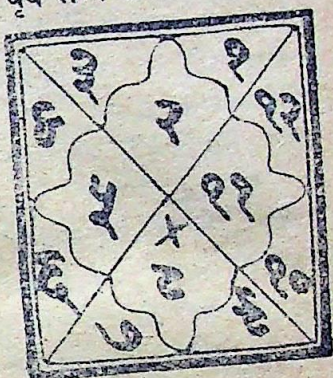
वृष लग्न फलादेश नं० ३४

जिस समय में धन राशि पर सूर्य, शनि बुद्ध, चन्द्र, शुक्र, गुरु, केतू, इन सात ग्रहों में से जब-जब कभी कोई आयेंगे तब-तब कुछ परेशानियों के साथ किसी पुरातत्व वस्तु के लाभ की योजना बनाते हैं और यदि गुरुदेव, धन, कुम्भ, मीन, वृष, मिथुन, कर्क, सिंह, कन्या, वृश्चिक इन नौ राशियों पर जब-जब कभी आयेंगे तब-तब कुछ अन्य विषयों के अतिरिक्त उपरोक्त विषयक फल भी प्रदान करते हैं।

वृष लग्न फलादेश नं० ३५

जिस समय में मकर राशि पर शनि, शुक्र, बुद्ध, चन्द्र, सूर्य, मंगल इन छः ग्रहों में से जब-जब कभी कोई आवेंगे तब-तब भाग्य स्थान की उन्नति, धर्म में श्रद्धा और दैवि-योग के लाभ की शक्ति पैदा करते हैं और यदि शनिदेव, मकर, कुम्भ, मीन, वृष, मिथुन, कर्क, सिंह, कन्या, तुला, वृश्चिक इन दस राशियों पर जब-जब कभी आयेंगे तब-तब कुछ अन्य विषयों के अतिरिक्त उपरोक्त विषयक फल भी प्रदान करते हैं।

वृष लग्न फलादेश नं० ३६

जिस समय में कुम्भ राशि पर शनि, शुक्र, बुद्ध, चन्द्र, सूर्य, इन पाँच ग्रहों में से जब-जब कभी कोई आयेंगे, तब-तब राज-समाज में मान-प्रतिष्ठा व कारोबार में सफलता तथा पिता स्थान में प्रभाव पैदा करते हैं और यदि शनिदेव, कुम्भ, मीन, वृष, मिथुन, कर्क, सिंह, कन्या, तुला, वृश्चिक, मकर, इन दस राशियों पर जब-जब कभी आयेंगे, तब-तब कुछ अन्य विषयों के अतिरिक्त, उपरोक्त विषयक फल भी प्रदान करते हैं।

वृष लग्न फलादेश नं० ३७

जिस समय में मीन राशि पर शुक्र, शनी, सूर्य, चन्द्र, गूरू इन पाँच ग्रहों में से जब-जब कभी कोई आवेंगे, तब-तब द्रव्य प्राप्ति के अच्छे साधन व अन्य आवश्यक पदार्थों का लाभ पैदा करते हैं और यदि गुरुदेव, वृष, मिथुन, कर्क, सिंह, कन्या, वृश्चिक, इन छः राशियों पर जब-जब कभी आवेंगे या, मंगल, राहू, केतू, मीन पर आवेंगे तब-तब कुछ अन्य विषयों के अतिरिक्त, उपरोक्त विषयक फल भी प्रदान करते हैं।

वृष लग्न फलादेश नं० ३८

जिस समय में मेष राशि पर गुरु, शुक्र, सूर्य, बुद्ध, मंगल, चन्द्र इन छः ग्रहों में से जब-जब कभी कोई आवेंगे तब-तब खर्च की शक्ति तथा बाहरी दूसरे स्थानों का अच्छा संबन्ध योग पैदा करते हैं और यदि मंगल देव, वृष, मिथुन, सिंह, कन्या, वृश्चिक, मकर, कुम्भ, मीन, इन आठ राशियों पर जब-जब कभी आवेंगे, तब-तब कुछ अन्य विषयों के अतिरिक्त, उपरोक्त विषयक फल भी प्रदान करते हैं।

## वृष लग्नान्तर प्रतिकूल ग्रह फलम

वृष लग्न फलादेश नं० ३९

जिस समय में वृष राशि पर मंगल, गुरु, राहू इन तीन ग्रहों में से जब-जब कभी कोई आवेंगे, तब-तब देह में कुछ परेशानी व थकान और कुछ कमजोरी पैदा करते हैं। और यदि शुक्रदेव, मिथुन, कन्या, धन, मेष इन चार राशियों पर जब-जब कभी आवेंगे तब-तब भी कुछ अन्य विषयों के अतिरिक्त उपरोक्त विषयक फल भी प्रदान करते हैं।
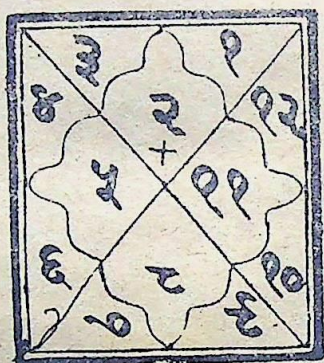
वृष लग्न फलादेश नं० ४०

जिस समय में मिथुन राशि पर केतू या मंगल इन दोनों ग्रहों में से जब-जब कभी कोई आवेंगे तब-तब धन स्थान की व कुटुम्ब स्थान की कुछ हानि व चिंता पैदा करते हैं और यदि बुद्धदेव, तुला, धन, मीन, मेष इन चार राशियों पर जब-जब कभी आवेंगे तब-तब कुछ अन्य विषयों के अतिरिक्त उपरोक्त विषयक फल भी प्रदान करते हैं।

वृष लग्न फलादेश न० ४१

जिस समय में कर्क राशि पर मंगल, राहू, केतू इन तीन ग्रहों में से जब-जब कभी कोई आवेंगे तब-तब भाई-बहनों के स्थान में परेशानी, बाहुबल के कार्यों में थकान व कुछ फिकर बनाते हैं और यदि चन्द्र देव, तुला, वृश्चिक, धन, मेष इन चार राशियों पर जब-जब कभी आवेंगे, तब-तब कुछ अन्य विषयों के अतिरिक्त उपरोक्त विषयक फल भी प्रदान करते हैं।
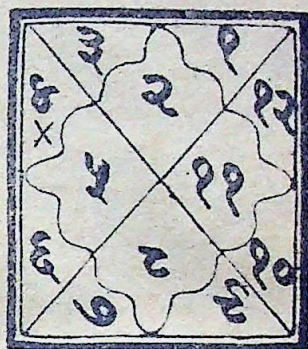
वृष लग्न फलादेश न० ४२

जिस समय में सिंह राशि पर मंगल, गुरु, राहू, केतू, इन चार ग्रहों में से जब-जब कभी कोई आवेंगे तब-तब मातृ स्थान में व सुख-शान्ति प्राप्ति के सम्बन्ध में कुछ कमी व फिकर पैदा करते हैं और यदि सूर्यदेव, तुला या धन इन दो राशियों पर जब-जब कभी आवेंगे, तब-तब कुछ अन्य विषयों के अतिरिक्त उपरोक्त विषयक फल भी प्रदान करते हैं।
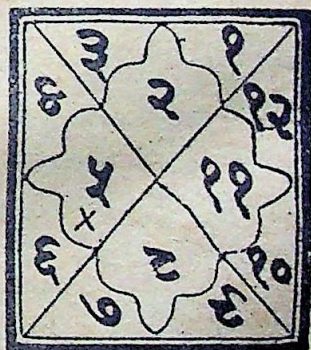
जिस समय में कन्या राशि पर शुक्र, मंगल, राहू, केतू इन चार ग्रहों में से जब-जब कभी कोई आवेंगे तब-तब दिमाग में कुछ चिंता व संतान पक्ष में कुछ फिकर व परेशानी तथा ज्ञान और विवेक में कुछ उथल-पुथल पैदा करते हैं, और यदि बुद्धदेव, तुला, धन, मीन, मेष इन चार राशियों पर जब-जब कभी आवेंगे, तब-तब भी कुछ अन्य विषयों के अतिरिक्त उपरोक्त विषयक फल भी प्रदान करते हैं।
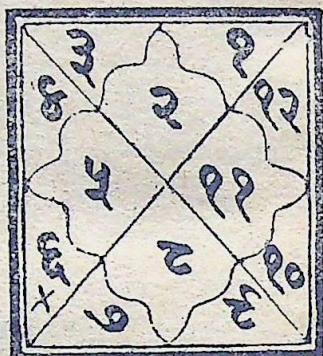
वृष लग्न फलादेश नं० ४३

जिस समय में तुला राशि पर सूर्य, मंगल, राहू, केतू इन चार ग्रहों में से जब-जब कभी कोई आवेंगे तब-तब ननसाल पक्ष में कुछ कमी व शत्रुपक्ष में कुछ मामूली फिकर पैदा करते हैं और यदि शुक्रदेव, धन, मेष, कन्या इन तीन राशियों पर जब-जब कभी आवेंगे तब-तब कुछ अन्य विषयों के अतिरिक्त उपरोक्त विषयक फल भी प्रदान करते हैं।

वृष लग्न फलादेश नं० ४४

वृष लग्न फलादश न० ४५

जिस समय में वृश्चिक राशि पर चन्द्र, राहू, केतू इन तीन ग्रहों में से जब-जब कभी कोई आवेंगे तब-तब स्त्री स्थान में व दैनिक रोजगार की लाइन में अशांति व क्लेश पैदा करते हैं और यदि मंगलदेव, धन, मेष, मिथुन, कर्क, तुला इन पाँच राशियों पर जब-जब कभी आवेंगे तब-तब कुछ अन्य विषयों के अतिरिक्त उपरोक्त विषयक फल भी प्रदान करते हैं।

वृष लग्न फलादेश नं० ४६

जिस समय में धन राशि पर मंगल या राहू इन दो ग्रहों में से जब-जब कभी कोई आवेंगे तब-तब परातत्व सम्बन्धो किसी प्रकार की हानि व उदर का कुछ विकार और जीवन में चिंता पैदा करते हैं और यदि गुरुदेव, मकर, मेष, तुला इन तीन राशियों पर जब-जब कभी आवेंगे, तब-तब कुछ अन्य विषयों के अतिरिक्त उपरोक्त विषयक फल भी प्रदान करते हैं।
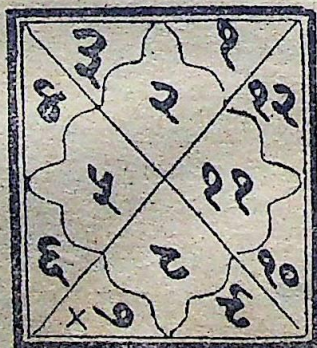
वृष लग्न फलादेश नं० ४७

जिस समय में मकर राशि पर गुरु, राहू, केतू, इन तीन ग्रहों में से जब-जब कभी कोई आवेंगे तब-तब भाग्य स्थान का कुछ हानि व फिकर तथा धर्म स्थान में व ईश्वरीय भावनाओं में कुछ कमी पैदा करते हैं और यदि शनीदेव, मेष या धन इन दो राशियों पर जब-जब कभी आवेंगे तब तब कुछ अन्य विषयों के अतिरिक्त उपरोक्त विषयक फल भी प्रदान करते हैं।
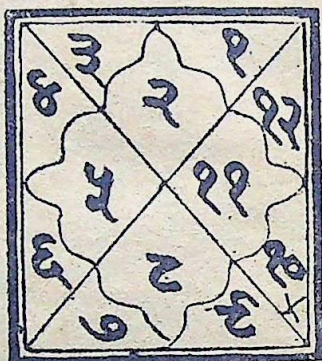
वृष लग्न फलादेश नं० ४८

जिस समय में कुम्भ राशि पर गुरु, मंगल, राहू, केतू, इन चार ग्रहों में से जब-जब कभी कोई आवेंगे तब-तब कारोबार के स्थान में व पिता स्थान में कुछ हानि और राज समाज के सम्बन्ध में कुछ परेशानी पैदा करते हैं और यदि शनीदेव, मेष या धन इन दो राशियों पर ज़ब-जब कभी आवेंगे तब-तब कुछ अन्य विषयों के अतिरिक्त उपरोक्त विषयक फल भी प्रदान करते हैं।
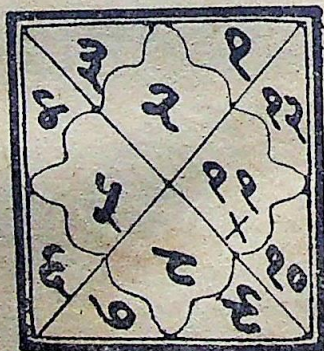
वृष लग्न फलादेश नं० ४९

जिस समय में मीन राशि पर बुद्धदेव जब-जब कभी आवेंगे तब-तब आमदनी के हिसाब में कुछ कमजोरी पैदा करते हैं और यदि गुरुदेव, मेष, तुला, धन, मकर इन चार राशियों पर जब-जब कभी आवेंगे तब तब कुछ अन्य विषयों के अतिरिक्त उपरोक्त विषयक फल भी प्रदान करते हैं।
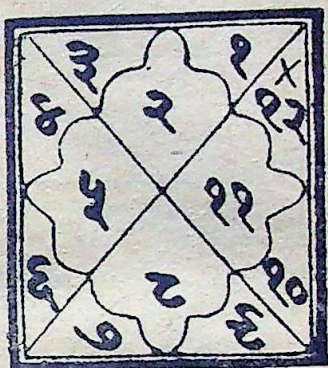
वृष लग्न फलादेश नं० ५०

जिस समय में मेष राशि पर शनी, राहु, केतु, इन तीन ग्रहों में से जब-जब कभी आवेंगे तब-तब खर्च के स्थान में व अन्य दूसरे स्थानों के सम्बन्धित संपर्क में कुछ कमजोरी व परेशानी का योग पैदा करते हैं और यदि मंगलदेव, कर्क, तुला, धन इन तीन राशियों पर जब-जब कभी आवेंगे तब-तब भी कुछ अन्य विषयों के अतिरिक्त उपरोक्त विषयक फल भी प्रदान करते हैं।
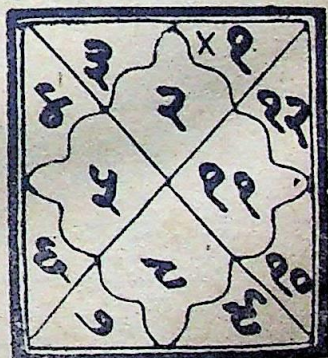
# मिथुन लग्नान्तर भाग्योदय कारक, नवग्रह व समय फल

## मिथुन लग्न फलादेश नम्बर ५१
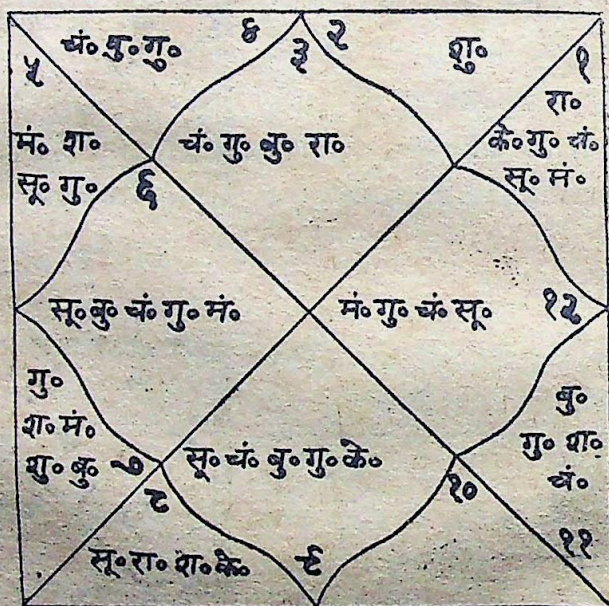
जिस-जिस समय मिथुन लग्न वाले प्राणियों को ऊपर स्थित कुण्डली के अनुसार यह नवग्रह, पंचांग गति की गोचर प्रणाली से जब-जब कभी एक ही समय में, प्रायः सभी ग्रह इस प्रकार की राशियों में आवेंगे, तब-तब ही मिथुन लग्न वाले प्राणियों का भाग्योदय एवं विविध लाभ होता रहेगा, अर्थात

सू०—सिंह, कन्या, वृश्चिक, धन, मीन, मेष इन-इन राशियों पर कहीं भी हों।

च०—कर्क, कन्या, धन, कुम्भ, मीन, मेष, मिथुन इन राशियों पर कहीं भी हों।

मं०—सिंह, कन्या, मीन, मेष, तुला इन-इन राशियों पर कहीं भी हों।

बु—मिथुन, कर्क, कन्या, तुला, धन, कुम्भ, मेष इन-इन राशियों पर कहीं भी हों।

गु०—मिथुन, कर्क, सिंह, कन्या, तुला, धन, कुम्भ, मीन, मेष इन-इन राशियों पर कहीं भी हों।

शु०—तुला, वृष इन-इन राशियों पर कहीं भी हों।

श०—सिंह, तुला, वृश्चिक, कुम्भ इन-इन राशियों पर कहीं भी हों।

रा०—मिथुन, वृश्चिक, मेष, इन-इन राशियों पर कहीं भी हों।

के०—धन, वृश्चिक, मेष इन-इन राशियों पर कहीं भी हों।

अस्तु यह नवग्रह—जिस-जिस साल, मास, पक्ष और दिनों में उपरोक्त राशियों के अनुसार जितने समय तक एक साथ रहेंगे उतने समय में ही भाग्य उन्नति कर देंगे किन्तु उस समय में जो कोई ग्रह सूर्य से अस्त होगा उसका फल माननीय नहीं होगा।

## मिथुन लग्नान्तर अनुकूल ग्रह फलम

जिस समय में मिथुन राशि पर बुद्ध, चन्द्र, सूर्य, गुरु इन चार ग्रहों में से जब-जब कभी कोई आवेंगे तब-तब देह को मान, प्रतिष्ठा, सुख, धन, मनोबल, आत्मबल इत्यादि शक्तियाँ प्रदान करते हैं और यदि राहू, मंगल या शनि मिथुन राशि पर आवें तो कुछ परिश्रम व परेशानियों के द्वारा सफलता व लाभ की प्राप्ति देते हैं और बुद्धदेव मिथुन, कर्क, सिंह, कन्या, तुला, धन, कुम्भ, मेष इन आठ राशियों पर जब-जब कभी आवेंगे तब-तब कुछ अन्य विषयों के अतिरिक्त उपरोक्त विषयक फल भी प्रदान करते हैं।
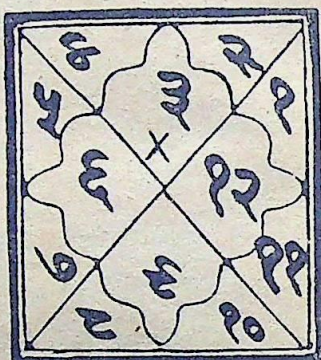
फलादेश नं० ५३

जिस समय में कर्क राशि पर चन्द्र, बुद्ध, गुरु, सूर्य इन चार ग्रहों में से जब-जब कभी कोई आवेंगे तब-तब धन स्थान में वृद्धि तथा कौटुम्बिक विकास की शक्ति प्रदान करते हैं और यदि चन्द्रदेव, कर्क, सिंह, कन्या, तुला, धन, मेष, कुम्भ, मीन, मिथुन इन नौ राशियों पर जब-जब कभी आवेंगे तब-तब कुछ अन्य विषयों के अतिरिक्त उपरोक्त विषयक फल भी प्रदान करते हैं।

फलादेश नं० ५४

जिस समय में सिंह राशि पर सूर्य, बुद्ध, चन्द्र, गुरु, मंगल इन पाँच ग्रहों में से जब-जब कभी कोई आवेंगे तब-तब भाई बहन के स्थान में लाभ व प्रभाव का योग तथा पुरुषार्थ के जरिये उन्नति का योग पैदा करते हैं और यदि सूर्यदेव, सिंह, कन्या, तुला, धन, कुम्भ, मेष, मीन, मिथुन, कर्क इन नौ राशियों पर जब-जब कभी आवेंगे तब-तब कुछ अन्य विषयों के अतिरिक्त उपरोक्त विषयक फल भी प्रदान करते हैं।

फलादेश नं० ५५
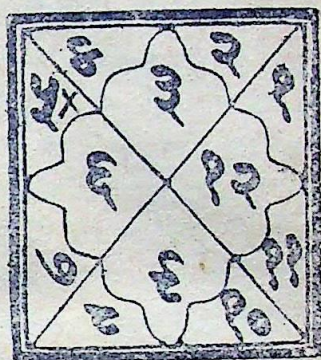
जिस समय में कन्या राशि पर बुद्ध, गुरु, सूर्य, चन्द्र इन चार ग्रहों में से जब-जब कभी कोई आवेंगे, तब-तब मातृ स्थान की व सुख संबंधी विषय की एवं भूमि इत्यादि मकानादि सम्बन्धी तीनों प्रकरण के मामलों में वृद्धि का योग व सुख पैदा करते हैं और मंगल या शनि कन्या राशि पर जब-जब कभी आवेंगे तब-तब कुछ दिक्कतों के साथ उपरोक्त विषयक फल प्रदान करते हैं और यदि बुद्धदेव, कन्या, तुला, धन, कुम्भ, मेष, मिथुन, कर्क, सिंह इन आठ राशियों पर जब-जब कभी आवेंगे तब-तब कुछ अन्य विषयों के अतिरिक्त उपरोक्त विषयक फल भी प्रदान करते हैं।

फलादेश नं० ५६

जिस समय में तुला राशि पर बुद्ध, गुरु, शनि, चन्द्र, इन ४ ग्रहों में से जब-जब कभी कोई आवेंगे तब-तब संतान पक्ष में उन्नति तथा विद्या और ज्ञान का विकास पैदा करते हैं और यदि शुक्र या मंगल तुला राशि पर जब २ कभी आवेंगे तब-तब कुछ फिकर के साथ संतान पक्ष और विद्या स्थान से लाभ व शक्ति देते हैं, और यदि शुक्रदेव, तुला, धन, कुम्भ, मीन, मेष, कर्क, मिथुन, सिंह इन आठ राशियों पर जब-जब कभी आवेंगे तब-तब कुछ अन्य विषयों के अतिरिक्त उपरोक्त विषयक फल भी प्रदान करते हैं।

फलादेश नं० ५७
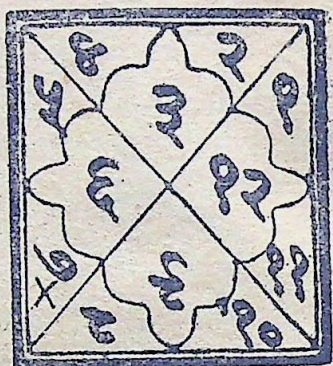
जिस समय में वृश्चिक राशि पर मंगल, शनी, गुरू, सूर्य इन चार ग्रहों में से जब-जब कभी कोई आवेंगे तब-तब शत्रु पक्ष में व ननसाल पक्ष में प्रभावयुक्त व लाभयुक्त रखते हैं। और यदि राहू या केतु वृश्चिक राशि पर जब-जब कभी आवेंगे तब-तब प्रभाव की वृद्धि, शत्रु का दमन करते हैं किन्तु ननसाल पक्ष में कुछ हानि करते हैं और यदि मंगलदेव, वृश्चिक, धन, मकर, कुम्भ, मीन, मिथुन मेष, सिंह, कन्या, तुला इन दस राशियों पर जब-जब कभी आवेंगे, तब-तब कुछ अन्य विषयों के अतिरिक्त उपरोक्त विषयक फल भी प्रदान करते हैं।

फलादेश नं० ५८

जिस समय में धन राशि पर गुरु, बुद्ध, चन्द्र, सूर्य इन चार ग्रहों में से जब-जब कभी कोई आवेंगे तब-तब स्त्री स्थान में व दैनिक रोजगार की लाइन में उन्नति व सुख लाभ पैदा करते हैं और मंगल, शनि या केतु इन तीनों ग्रहों में से जब-जब कभी कोई धन राशि पर आवेंगे तब-तब कुछ दिक्कतों के साथ स्त्री व रोजगार की लाइन में उन्नति व लाभ देते हैं और यदि गुरुदेव, धन, कुम्भ, मीन, मिथुन, मेष, कर्क, सिंह, कन्या, तुला इन नौ राशियों पर जब-जब कभी आवेंगे तब-तब कुछ अन्य विषयों के अतिरिक्त उपरोक्त विषयक फल भी प्रदान करते हैं।

फलादेश नं० ५९

जिस समय में मकर राशि पर शनि, मंगल, चन्द्र, सूर्य, बुद्ध इन पाँच ग्रहों में से जब-जब कभी कोई आवेंगे तब-तब परातत्व सम्बन्धी किसी प्रकार का लाभ पैदा करते हैं यदि शनिदेव, मकर, कुम्भ, मेष, मीन, मिथुन, कर्क, सिंह, कन्या, तुला, वृश्चिक, धन इन ग्यारह राशियों पर जब-जब कभी आवेंगे तब-तब कुछ अन्य विषयों को छोड़ कर उपरोक्त विषयक फल भी प्रदान करते हैं।

फलादेश नं० ६०

जिस समय में कुम्भ राशि पर बुद्ध, गुरू, सू०, च०, श०, इन पाँच ग्रहों में से जब २ कभी कोई आवेंगे तब २ भाग्य की उन्नति तथा धर्म का विकास और देवी सफलताओं की प्राप्ति उत्पन्न करते हैं। और यदि मंगल कुम्भ राशि पर आवे तो कुछ परिश्रम व कुछ परेशानियों के योग्य से भाग्य शक्ति का लाभ पैदा करते हैं। और यदि शनि देव कुम्भ, मीन, मिथुन, कर्क, सिंह, कन्या, तुला, धन, इन आठ राशियों पर जब कभी आवेंगे, तब-तब कुछ अन्य विषयों को छोड़कर उपरोक्त विषयक फल भी प्रदान करते हैं।
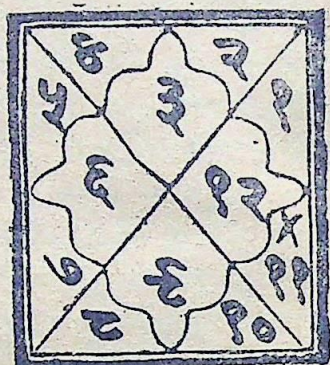
फलादेश नं० ६१
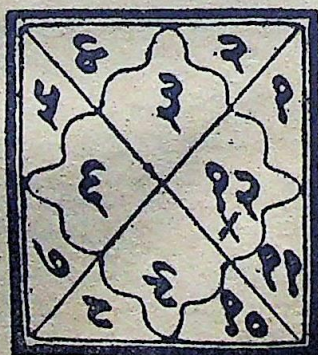
जिस-जिस समय में मीन राशि पर चन्द्र, सूर्य, गुरू, शुक्र, मंगल, इन पाँच ग्रहों में से जब-जब कभी कोई आवेंगे तब पिता स्थान की उन्नति व लाभ पैदा करते हैं और राज, समाज के कार्यों में सफलता व लाभ पैदा करते हैं। और यदि गुरूदेव, मीन, मेष, मिथुन, कर्क, सिंह, कन्या, तुला, वृश्चिक, धन, इन नौ राशियों पर जब-जब कभी आवेंगे तब-तब कुछ अन्य विषयों के अतिरिक्त, विषयक फल भी प्रदान करते हैं।

फलादेश नं० ६२

जिस समय में मेष राशि पर मंगल, गुरु, बुद्ध, सूर्य, चन्द्र, राहु, केतु इन सात ग्रहों में से जब-जब कभी कोई आवेंगे तब-तब आमदनी के स्थान में अनेक प्रकार से लाभ व उन्नति करते हैं। और यदि मंगलदेव, मेष, मिथुन, सिंह, कन्या, तुला, धन, मकर, कुम्भ, मीन इन नौ राशियों पर जब-जब कभी आवेंगे, तब-तब कुछ अन्य विषयों के अतिरिक्त उपरोक्त विषयक फल भी प्रदान करते हैं।
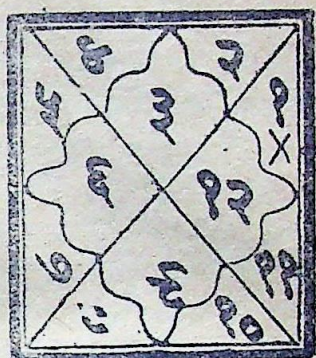
फलादेश नं० ६३

जिस समय में वृष राशि पर चन्द्र, सूर्य, शनि, शुक्र, मंगल, गुरु बुद्ध, इन सात ग्रहों में से जब-जब कभी कोई आवेंगे, तब खर्च के स्थान में वृद्धि, तथा बाहरी दूसरे स्थानों के सम्पर्क में उन्नति का योग पैदा करते हैं। और यदि शुक्र देव, वृष, मिथुन, कर्क, सिंह, तुला, धन, मकर, कुम्भ, मीन इन नौ राशियों पर जब-जब कभी आवेंगे, तब-तब कुछ अन्य विषयों के अतिरिक्त, उपरोक्त विषयक फल भी प्रदान करते हैं।
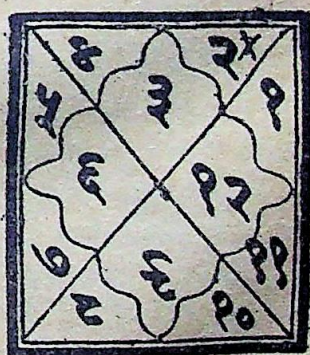
## मिथुन लग्नान्तर प्रतिकूल ग्रह फलम्

फलादेश नं० ६४

जिस-जिस समय में मिथुन राशि पर केतू, शुक्र, मंगल इन तीन ग्रहों में से जब-जब कभी कोई आवेंगे तब-तब देह को कुछ परेशानियों का व फिकर का योग पैदा करते हैं और यदि बुद्धदेव, वृश्चिक, मकर, मीन, वृष इन चार राशियों पर जब-जब कभी आवेंगे तब-तब कुछ अन्य विषयों के अतिरिक्त उपरोक्त विषयक फल भी प्रदान करते हैं।
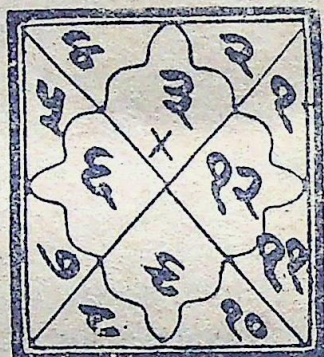
फलादेश नं० ६५

जिस-जिस समय में कर्क राशि पर मंगल, शुक्र, राहु, केतु इन चार ग्रहों में से जब-जब कभी आवेंगे तब-तब धन कोष की हानि तथा कौटुम्बिक क्लेश पैदा करते हैं और चन्द्रदेव, वृश्चिक, मकर, वृष इन तीन राशियों पर जब-जब कभी आवेंगे तब-तब कुछ अन्य विषयों के अतिरिक्त उपरोक्त विषयक फल भी प्रदान करते हैं।

फलादेश नं० ६६

जिस-जिस समय में सिंह राशि पर शुक्र, राहू, केतू, इन तीन ग्रहों में से जब-जब कभी कोई आयेंगे तब-तब भाई-बहन के स्थान में कुछ हानि व परेशानी पैदा करते हैं और यदि सूर्यदेव, तुला, वृश्चिक मकर, वृष इन चार राशियों पर जब-जब कभी आवेंगे तब-तब कुछ अन्य विषयों के अतिरिक्त उपरोक्त विषयक फल भी प्रदान करते हैं।

फलादेश नं ६७
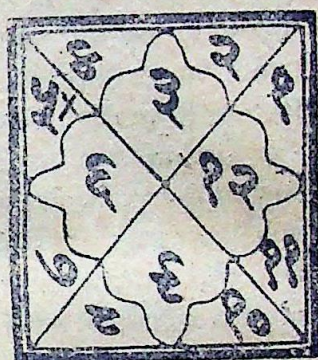
जिस-जिस समय में कन्या राशि पर शुक्र, राहू, केतू इन तीन ग्रहों में से जब-जब कभी कोई आयेंगे तब-तब मातृ स्थान में व सुख के साधनों में कुछ कमी व कुछ परेशानी करते हैं और भूमि, मकानादि सम्बन्धी मामलों में भी कुछ परेशानी का योग प्रकट करते हैं और यदि शुक्रदेव, वृश्चिक, मकर, मीन, वृष इन चार राशियों पर जब-जब कभी आयेंगे तब-तब कुछ अन्य विषयों के अतिरिक्त उपरोक्त विषयक फल भी प्रदान करते हैं।

**फलादेश नं० ६८**

जिस-जिस समय में तुला राशि पर सूर्य, राहू, केतू इन तीन ग्रहों में से जब-जब कभी कोई आयेंगे तब-तब संतान पक्ष में कुछ चिंता व फिकर और दिमाग में कुछ परेशानी तथा विद्या और ज्ञान में कुछ न्यूनता पैदा करते हैं और यदि शुक्रदेव, वृश्चिक, मकर, वृष, कन्या इन चार राशियों पर जब-जब कभी आयेंगे तब-तब कुछ अन्य विषयों के अतिरिक्त उपरोक्त विषयक फल भी प्रदान करते हैं।
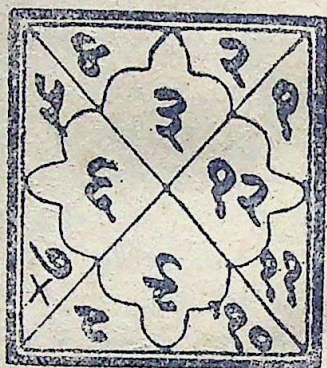
**फलादेश नं० ६९**

जिस-जिस समय में वृश्चिक राशि पर चन्द्र, बुद्ध, शुक्र इन तीन ग्रहों में से जब-जब कभी कोई आयेंगे तब-तब शत्रु स्थान में कुछ झंझट-तलब मामलों से कुछ परेशानियों का योग पैदा करते हैं, और चन्द्र, शुक्र, राहू, केतू, इन चार ग्रहों में से कोई भी वृश्चिक राशि पर आये तो ननसाल पक्ष में कुछ हानि करते हैं और यदि मंगलदेव, वृष, कर्क इन दो राशियों में जब-जब कभी आयेंगे तब-तब कुछ अन्य विषयों के अतिरिक्त उपरोक्त विषयक फल भी प्रदान करते हैं।
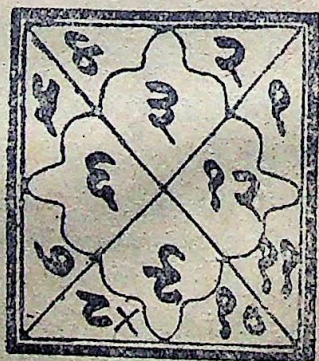
फलादेश नं० ७०

जिस-जिस समय में धन राशि पर शुक्र या राहू इन दो ग्रहों में से जब-जब कभी कोई आयेंगे तब-तब स्त्री स्थान में व दैनिक रोजगार के स्थान में कुछ कमजोरी या कमी पैदा करते हैं और मंगल या शनि धन राशि पर आयेंगे तो स्त्री व दैनिक रोजगार की लाइन में कुछ दिक्कतों के साथ फायदा करते हैं और यदि गुरुदेव, मकर, वृश्चिक, वृष इन तीन राशियों पर जब-जब कभी आयेंगे तब-तब भी कुछ अन्य विषयों के अतिरिक्त उपरोक्त विषयक फल भी प्रदान करते हैं।
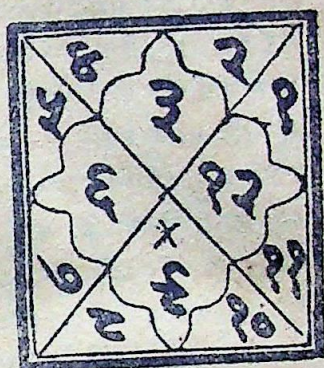
फलादेश नं० ७१

जिस-जिस समय में मकर राशि पर गुरु, शुक्र, राहू, केतू इन चार ग्रहों में से जब-जब कभी कोई आवेंगे तब-तब जीवन में कुछ चिंता व पुरातत्त्व सम्बन्धी किसी प्रकार की कुछ हानि और उदर सम्बन्धी किसी प्रकार की कुछ शिकायत पैदा करते हैं और यदि शनिदेव, मेष, वृष, वृश्चिक इन तीन राशियों पर जब-जब कभी आयेंगे तब-तब कुछ अन्य विषयों के अतिरिक्त उपरोक्त विषयक फल भी प्रदान करते हैं।

फलादेश नं० ७२

जिस-जिस समय में कुम्भ राशि पर शुक्र, राहू, केतू, इन तीन ग्रहों में से जब-जब कभी कोई आयेंगे तब-तब भाग्य स्थान में कुछ परेशानी व कुछ हानि और धर्म-पालन की वास्तविकता में कुछ कमी करते हैं और यदि शनिदेव, मेष, वृष, वृश्चिक इन तीन राशियों में जब-जब कभी आयेगे तब-तब कुछ अन्य विषयों के अतिरिक्त उपरोक्त विषयक फल भी प्रदान करते हैं।
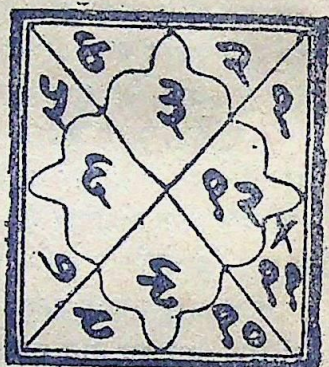
फलादेश नं० ७३

जिस समय में मीन राशि पर बुद्ध, राहू, केतू इन तीन ग्रहों में से जब-जब कभी कोई आवेंगे तब-तब पिता स्थान में व व्यापार आदि कारोबार के स्थान में व राजसमाज के सम्बन्ध में कुछ परेशानी महसूस करवाते हैं और यदि गुरुदेव, वृष, वृश्चिक, मकर इन तीन राशियों पर जब-जब कभी आवेंगे तब-तब कुछ अन्य विषयों के अतिरिक्त उपरोक्त विषयक फल भी प्रदान करते हैं।

फलादेश नं० ७४

जिस समय में मेष राशि पर शनि या शुक्र इन दोनों में से कोई भी जब-जब कभी आयेंगे तब-तब आमदनी व आवश्यक पदार्थों की प्राप्ति के स्थान में कुछ कमी पैदा करते हैं और यदि मंगलदेव, वृष, कर्क, वृश्चिक इन तीन राशियों पर जब-जब कभी आयेंगे तब-तब कुछ अन्य विषयों के अतिरिक्त उपरोक्त विषयक फल भी प्रदान करते हैं।
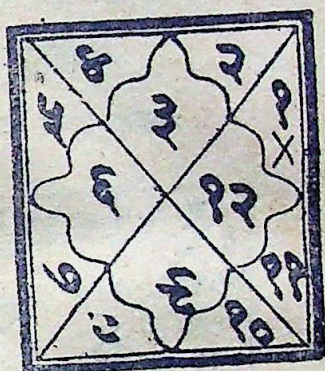
फलादेश नं० ७५

जिस समय में वृष राशि पर राहू या केतू इन दोनों में से जब-जब कभी कोई आयेंगे तब-तब खर्च के स्थान में व बाहरी दूसरे स्थान के सम्बन्धित संपर्क में कुछ दिक्कतें पैदा करते हैं, और यदि शुक्रदेव, कन्या, वृश्चिक, मकर इन तीन राशियों पर जब-जब कभी आयेंगे, तब-तब कुछ अन्य विषयों के अतिरिक्त उपरोक्त विषयक फल भी प्रदान करते हैं।
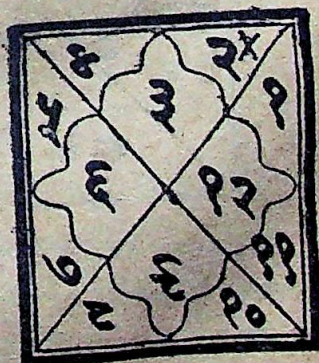
# कर्क लग्नान्तर भाग्योदय कारक, नवग्रह व समय फल

## कर्क लग्न फलादेश नम्बर ७६
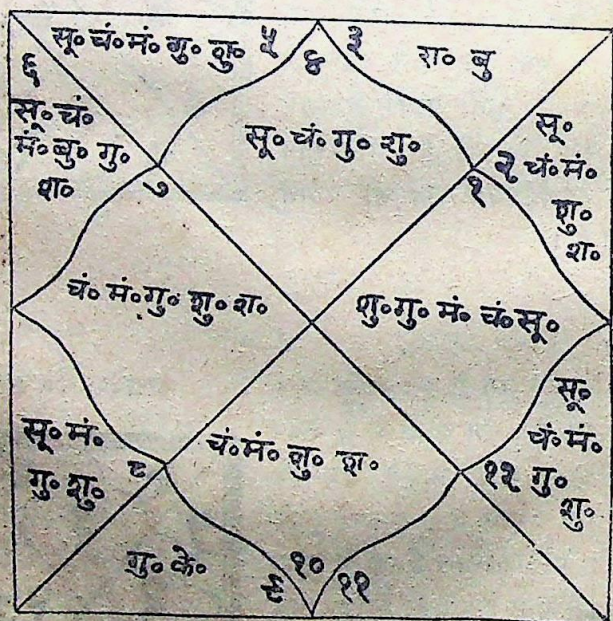
जिस-जिस समय कर्क लग्न वाले प्राणियों को ऊपर स्थित कुण्डली के अनुसार यह नवग्रह पंचांग गति की गोचर प्रणाली से जब-जब कभी एक ही समय में, प्रायः सभी ग्रह इस-इस प्रकार की राशियों में आयेंगे तब-तब ही इस कर्क लग्न वाले स्त्री-पुरुषों का भाग्योदय होता रहेगा—अर्थात्

सू०—कर्क, सिंह, कन्या, वृश्चिक, मीन, मेष, वृष इन राशियों पर कहीं भी हों।

चं०—कर्क, सिंह, कन्या, तुला, मकर, मीन, मेष, वृष इन राशियों पर कहीं भी हों।

मं०—सिंह, कन्या, तुला, वृश्चिक, मकर, मीन, मेष, वृष इन राशियों पर कहीं भी हों।

बु०—मिथुन, कन्या इन राशियों पर कहीं भी हों।

गु०—कर्क, सिंह, कन्या, तुला, वृश्चिक, धन, मीन, मेष, वृष इन राशियों पर कहीं भी हों।

शु०—कर्क, सिंह, तुला, वृश्चिक, मकर, मीन, मेष, वृष इन राशियों पर कहीं भी हों।

श०—कन्या, तुला, मकर, वृष इन राशियों पर कहीं भी हों।

रा०—मिथुन राशि पर जब आयें।

के०—धन राशि पर जब आयें।

अर्थात्—जिस-जिस साल, मास, पक्ष व दिनों में यह नवग्रह उपरोक्त राशियों में जब-जब एक ही समय में, जितने समय तक रहेंगे उस-उस समय में ही कोई भाग्यकारक, लाभकारक योग उत्पन्न होगा किन्तु यदि कोई ग्रह उस समय में सूर्य से अस्त होगा तो वह ग्रह फलदायक मान्य नहीं होगा।

## कर्क लग्नान्तर अनुकूल ग्रह फलम्

फलादेश नं० ७७

जिस समय में कर्क राशि पर चन्द्र, सूर्य, गुरु, शुक्र इन चार ग्रहों में से जब-जब कभी आयेंगे तब-तब देह को मान-सम्मान व सफलता, उन्नति और सुख की प्राप्ति करते हैं और यदि चन्द्रदेव, कर्क, सिंह, कन्या, तुला, मकर, मीन, मेष, वृष इन आठ राशियों पर जब-जब कभी आयेंगे तब-तब कुछ अन्य विषयों को छोड़कर उपरोक्त विषयक फल भी प्रदान करते हैं।
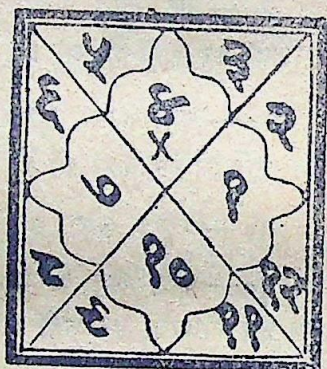
फलादेश नं० ७८

जिस समय में सिंह राशि पर चन्द, सूर्य, शुक्र, मंगल, गुरू, इन पाँचों ग्रहों में से जब-जब कभी कोई आयेंगे तब-तब धन स्थान की वृद्धि तथा कौटुम्बिक विकास करते हैं, और यदि सूर्यदेव, सिंह, कन्या, वृश्चिक, मकर, मीन, मेष, वृष, कर्क इन आठ राशियों पर जब-जब कभी आवेंगे तब-तब कुछ अन्य विषयों को छोड़कर उपरोक्त विषयक फल भी प्रदान करते हैं।

फलादेश नं० ७९

जिस समय में कन्या राशि पर बुद्ध, चन्द्र, सूर्य, मंगल, गुरु इन पाँच ग्रहों में से जब-जब कभी कोई आयेंगे तब तब बहन-भाई के पक्ष में सहयोग, और बाहुबल के कार्यों में सफलता देते हैं, और यदि बुद्धदेव, कन्य, तुला, वृश्चिक, मकर, मेष, वृष, कर्क, इन सात राशियों पर जब-जब कभी आयेंगे तब-तब कुछ अन्य विषयों के अतिरिक्त उपरोक्त विषयक फल भी प्रदान करते हैं।

फलादेश नं० ८०

जिस समय में तुला राशि पर चन्द्र, मंगल, शनि, शुक्र, गुरु इन पाँच ग्रहों में से जब-जब कभी कोई आयेंगे तब-तब मातृस्थान व सुख स्थान की वृद्धि तथा भूमि, मकानादि सम्बन्धी मामलों के सुखद सहयोग की प्राप्ति करते हैं, और यदि शुक्रदेव, तुला, वृश्चिक, मकर, मीन, मेष, वृष, कर्क इन सात राशियों पर जब-जब कभी आयेंगे तब-तब कुछ अन्य विषयों के अतिरिक्त उपरोक्त विषयक फल भी प्रदान करते हैं।
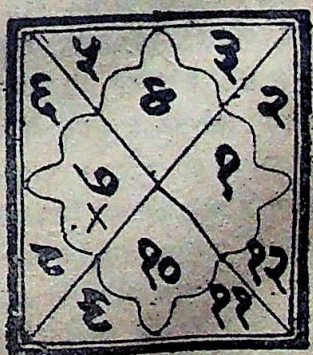
फलादेश नं० ८१

जिस समय में वृश्चिक राशि पर शुक्र, मंगल, गुरु, सूर्य, इन चार ग्रहों में से जब-जब कभी कोई आयेंगे तब-तब विद्या और ज्ञान का विकास, संतान पक्ष का सुख और वाणी की शक्ति देते हैं, और यदि मंगलदेव, वृश्चिक, मकर, मीन, मेष, वृष, सिंह, कन्या, तुला इन ८ राशियों पर जब-जब कभी आयेंगे, तब-तब कुछ अन्य विषयों के अतिरिक्त उपरोक्त विषयक फल भी प्रदान करते हैं।
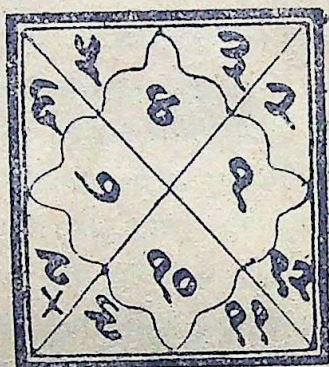
फलादेश नं० ८२

जिस समय में धन राशि पर गुरु, मंगल, सूर्य, शनि, केतू इन पाँच ग्रहों में से जब-जब कभी कोई आयेंगे तब-तब शत्रु पक्ष में विजय व प्रभाव की वृद्धि व उन्नति के मार्ग में कुछ अड़चनें पैदा करते हैं अथवा गुरुदेव, मेष, कर्क, सिंह, धन इन राशियों में से जब-जब किसी राशि पर आयेंगे तब-तब प्रभाव की वृद्धि और दिक्कतों पर विजय तथा युक्तिबल की प्राप्ति करते हैं।

फलादेश नं० ८३
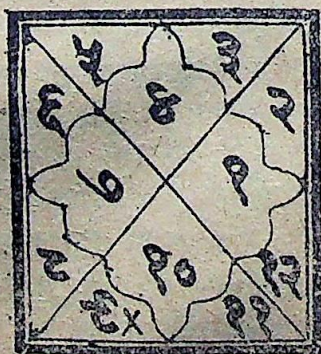
जिस समय में मकर राशि पर मंगल, शुक्र, शनि, चन्द्र, इन चार ग्रहों में से जब-जब कभी कोई आयेंगे तब-तब स्त्री स्थान की उन्नति, दैनिक रोजगार में लाभ व लौकिक कार्यों में सफलता तथा मान और भोगादि की प्राप्ति करते हैं, और यदि शनिदेव, वृष, तुला, वृश्चिक इन तीन राशियों पर जब-जब कभी आयेंगे तब-तब भी कुछ अन्य विषयों को छोड़कर उपरोक्त विषयक फल भी प्रदान करते हैं।
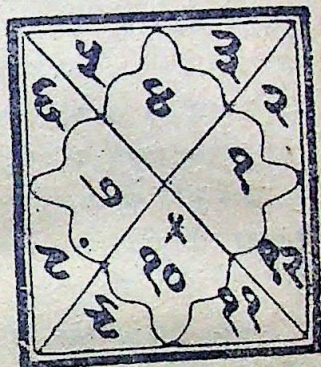
फलादेश नं० ८४

जिस समय में कुम्भ राशि पर शनि, शुक्र, मंगल इन तीन ग्रहों से जब-जब कभी कोई आयेंगे तब-तब किसी पुरातत्व सम्बन्धी वस्तु का लाभ व परिश्रम वाली गूढ़ योजनाओं की लाइन में सफलता देते हैं और यदि शनिदेव, मीन, वृष कर्क, तुला, मकर इन राशियों पर जब-जब कभी कोई ग्रह आवेंगे तब-तब कुछ अन्य विषयों को छोड़कर उपरोक्त विषयक फल भी प्रदान करते हैं।

फलादेश नं० ८५
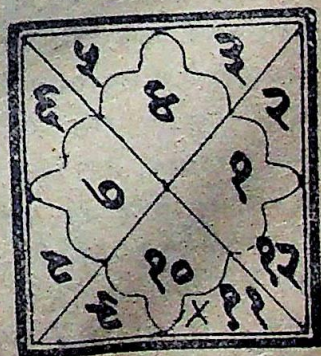
जिस समय में मीन राशि पर गुरु, मंगल, शुक्र, चन्द्र, सूर्य इन पाँच ग्रहों में से जब-जब कभी कोई आयेंगे तब-तब भाग्य स्थान की वृद्धि व धर्म स्थान में रुचि तथा यश और मान की प्राप्ति व ईश्वर में श्रद्धा और दैवयोग से लाभ पैदा करते हैं और यदि गुरुदेव, मेष, वृष, कर्क, सिंह, कन्या, वृश्चिक इन छः राशियों में जब-जब कभी आयेंगे तब-तब कुछ अन्य विषयों के अतिरिक्त उपरोक्त विषयक फल भी प्रदान करते हैं।
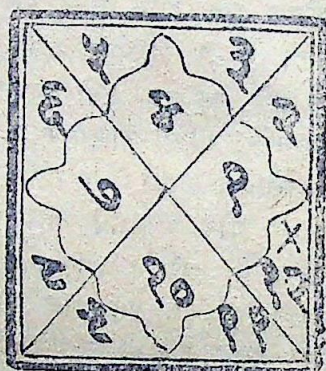
फलादेश नं० ८६

जिस समय में मेष राशि पर गुरु, मंगल, शुक्र, चन्द्र, सूर्य इन पांच ग्रहों में से जब-जब कभी कोई आयेंगे तब-तब राज समाज में मान व सफलता तथा पिता स्थान व व्यापार आदि बड़े कारोबार में तरक्की देते हैं और यदि मंगलदेव, वृष, सिंह, कन्या, तुला, मकर मीन इन छः राशियों पर जब-जब कभी आयेंगे तब-तब कुछ अन्य विषयों को छोड़कर उपरोक्त विषयक फल भी प्रदान करते हैं।

फलादेश नं० ८७

जिस समय में वृष राशि पर मंगल, शुक्र, गुरु, शनि, सूर्य, चंद्र, बुद्ध, राहु, केतू इन नौ ग्रहों में से जब-जब कभी कोई आयेंगे तब-तब धन का लाभ व आवश्यक पदार्थों की प्राप्ति करते हैं और यदि शुक्रदेव, वृष, कर्क, तुला, वृश्चिक, मकर, मीन, मेष इन सात राशियों में जब-जब कभी आयेंगे तब-तब कुछ अन्य विषयों को छोड़कर उपरोक्त विषयक फल भी प्रदान करते हैं।
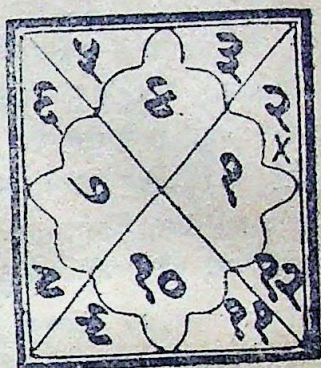
फलादेश नं० ८८

जिस समय में मिथुन राशि पर शुक्र, मंगल, गुरु, सूर्य, बुद्ध चन्द्र, राहु, इन सात ग्रहों में से जब-जब कभी कोई आयेंगे तब-तब दूसरे स्थानों के सम्बन्ध में सफलता का योग बनाते हैं और खर्च करने की विशेष शक्ति प्रदान करते हैं। और यदि बुद्धदेव, मिथुन, कर्क, सिंह, कन्या, तुला, वृश्चिक, मकर, धन, मेष, वृष इन दस राशियों में जब-जब कभी आयेंगे तब-तब भी कुछ अन्य विषयों को छोड़ कर उपरोक्त विषयक फल भी प्रदान करते हैं।
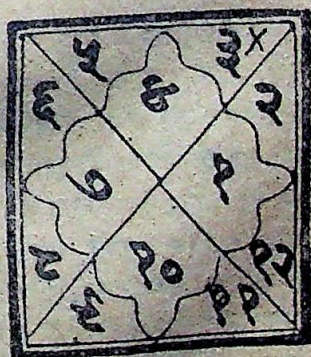
## कर्क लग्नान्तर प्रतिकूल ग्रहफलम

फलादेश नं० ८९

जिस समय में कर्क राशि पर मंगल, बुद्ध, राहु, केतू, शनि इन पाँचों ग्रहों में से जब-जब कभी कोई आयेंगे, तब-तब देह को व हृदय को कष्ट, चिन्ता तथा मान और यश की कमी करते हैं। और यदि चन्द्रदेव, वृश्चिक, धन, कुम्भ, मिथुन इन चार राशियों पर जब-जब कभी आयेंगे तब-तब कुछ अन्य विषयों को छोड़कर, उपरोक्त विषयक फल भी प्रदान करते हैं।
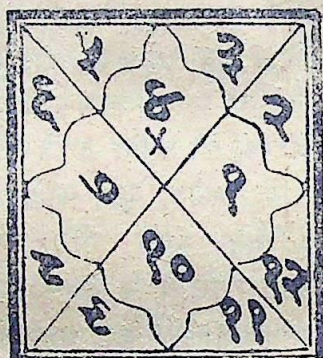
फलादेश नं० ९०

जिस समय में सिंह राशि पर बुद्ध, शनि, राहु, केतू इन चार ग्रहों में से जब-जब कभी कोई आयेंगे, तब-तब धन स्थान की हानि व कुटुम्ब का क्लेश पैदा करते हैं। और यदि सूर्यदेव, तुला धन, कुम्भ, मिथुन इन चार राशियों पर जब-जब कभी आयेंगे तब-तब भी कुछ अन्य विषयों को छोड़कर उपरोक्त विषयक फल भी प्रदान करते हैं।

फलादेश नं० ६१

जिस समय में कन्या राशि पर राहू, केतु, शनि इन तीन ग्रहों में से जब-जब कभी कोई आयेंगे, तब-तब बहन-भाई के पक्ष में कुछ अशांति व बाहुबल के कार्यों में कुछ थकान पैदा करते हैं। और बुद्धदेव, धन, कुम्भ, मिथुन, इन तीन राशियों पर जब-जब कभी आयेंगे तब-तब भी कुछ अन्य विषयों को छोड़कर उपरोक्त विषयक फल भी प्रदान करते हैं।
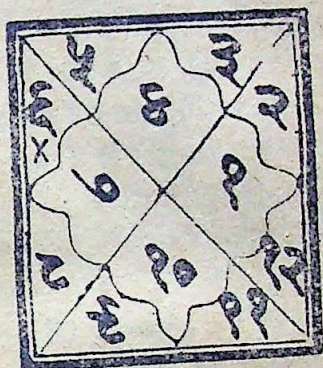
फलादेश नं० ६२

जिस समय में तुला राशि पर सूर्य, बुद्ध, राहू, केतु, इन चार ग्रहों में से जब-जब कभी कोई आयेंगे, तब-तब मकान, भूमि संबन्ध में व मातृ स्थान के सम्बन्ध में व व प्राप्ति के सम्बन्ध में कुछ क्लेश व कुछ कमी का योग पैदा करते हैं। और यदि शुक्रदेव, कन्या, धन, कुम्भ, मिथुन इन चार राशियों पर जब-जब कभी आयेंगे तब-तब कुछ अन्य विषयों के अतिरिक्त उपरोक्त विषयक फल भी प्रदान करते हैं।
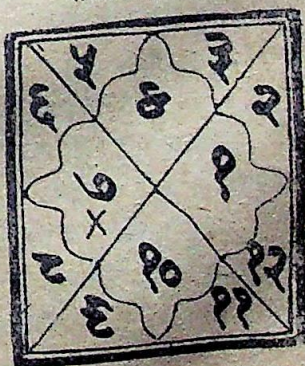
फलादेश नं० ६३

जिस समय मैं वृश्चिक राशि पर चन्द्र, बुद्ध, शनि, राहू, केतु इन पाँच ग्रहों में से जब-जब कभी कोई आयेंगे, तब-तब सन्तान पक्ष से कुछ अशान्ति व दिमाग में परेशानी पैदा करते हैं। और यदि मंगलदेव धन, कुम्भ, मिथुन, कर्क इन चार राशियों पर जब-जब कभी आयेंगे तब-तब भी कुछ अन्य विषयों को छोड़ कर उपरोक्त विषयक फल प्रदान करते हैं।

फलादेश नं० ६४
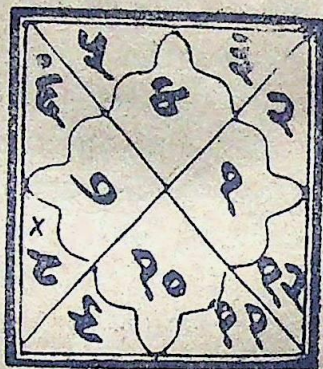
जिस समय में धन राशि पर शनि, राहू, बुद्ध, इन तीन ग्रहों में से जब-जब कभी कोई आयेंगे, तब-तब ननसाल पक्ष की कमजोरी व शत्रुपक्ष से कुछ अशान्ति करते हैं। और यदि गुरुदेव, मकर, कुम्भ, मिथुन इन तीन राशियों पर जब-जब कभी आयेंगे, तब-तब कुछ अन्य विषयों के अतिरिक्त उपरोक्त विषयक फल भी प्रदान करते हैं।
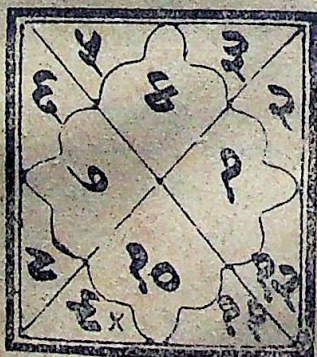
फलादेश नं० ६५

जिस समय में मकर राशि पर गुरु, बुद्ध, सूर्य राहू, केतू, इन ५ ग्रहों में से जब-जब कभी कोई आयेंगे तब-तब स्त्री स्थान में व दैनिक रोजगार के स्थान में अशांति व कमी अनुभव कराते हैं। और यदि शनीदेव, कुम्भ, मिथुन, मेष, धन, इन चार, राशियों पर जब-जब कभी आयेंगे तब-तब कुछ अन्य विषयों को छोड़कर उपरोक्त विषयक फल भी प्रदान करते हैं।
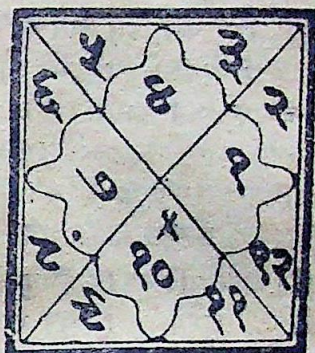
फलादेश नं० ६६

जिस समय में कुम्भ राशि पर बुद्ध, राहू, केतू, गुरु, इन चार ग्रहों में से जब-जब कभी कोई आयेंगे, तब-तब पूर्व संचित धरोहर की कुछ हानि व उदर में कुछ विकर, जीवन की दिनचर्या में कुछ फिकर पैदा करते हैं। और यदि शनिदेव, मेष, मिथुन, राशियों पर जब-जब कभी आयेंगे, तब-तब कुछ अन्य विषयों को छोड़कर उपरोक्त विषयक फल भी प्रदान करते हैं।
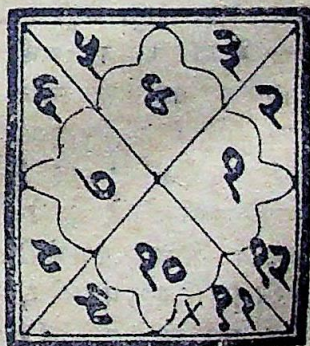
फलादेश नं० ६७

जिस समय में मीन राशि पर बुद्ध, राहू, केतू, इन तीन ग्रहों में से कोई भी जब-जब कभी आयेंगे, तब-तब भाग्य स्थान में कुछ कमजोरी व धर्म संबन्ध में कुछ हानि और यश की कमी व ईश्वर विश्वास में कुछ अरुचि पैदा करते हैं। और यदि गुरुदेव, मिथुन, धन मकर, कुम्भ, इन चार राशियों पर जब २ कभी आवेंगे, तव २ कुछ अन्य विषयों को छोड़कर उपरोक्त विषयक फल भी प्रदान करते हैं।

फलादेश नं० ६८

जिस समय में मेष राशि पर शनी, बुद्ध, राहू, केतू, इन चार ग्रहों में से जब-जब कभी कोई आयेंगे तब-तब पिता स्थान में व राज समाज के सम्बन्ध में कुछ कमी व अशांति करते हैं और व्यापार और बड़े कारोबार के सम्बन्ध में भी कमजोरी पैदा करते हैं और यदि मंगलदेव, मिथुन, कर्क, धन, कुम्भ, इन-इन राशियों पर जब-जब कभी आयेंगे तब-तब कुछ अन्य विषयों को छोड़कर उपरोक्त विषयक फल भी प्रदान करते हैं।
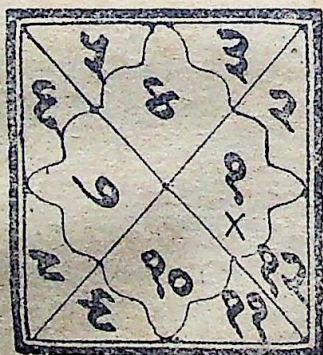
फलादेश नं० ९९

जिस समय में वृष राशि पर बुद्धदेव आयेंगे तब-तब कुछ आमदनी के स्थान में व अन्य वस्तुओं के लाभ के सम्बन्ध में कुछ कमी पैदा करते हैं। और यदि शुक्रदेव, मिथुन, कन्या, धन, कुम्भ, इन चार राशियों पर जब-जब कभी आयेंगे तब-तब कुछ अन्य विषयों के अतिरिक्त, उपरोक्त विषयक फल भी प्रदान करते हैं।

फलादेश नं० १००

जिस समय में मिथुन राशि पर केतू या शनि इन दो ग्रहों में से जबजब कभी कोई आयेंगे तब-तब खर्च के सम्बन्ध में कुछ परेशानी व अन्य दूसरे स्थानों के सम्बन्ध में कुछ कमी व कुछ दिक्कत पैदा करते हैं। और यदि बुद्धदेव, धन, कुम्भ, मीन, इन तीन राशियों पर जब-जब कभी आवेंगे तब-तब भी कुछ अन्य विषयों के अतिरिक्त उपरोक्त विषयक फल भी प्रदान करते हैं।
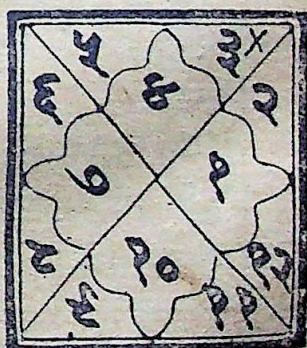
# सिंह लगनान्तर भाग्योदय कारक, नवग्रह व समय फल

### सिंह लग्न फलादेश नम्बर १०१
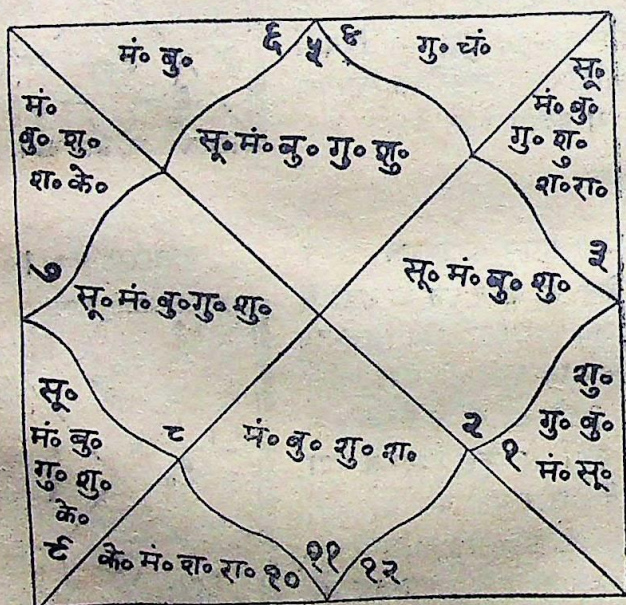
जिस समय सिंह लग्न वाले प्राणियों को ऊपर स्थित कुण्डली के अनुसार, यह नवग्रह पंचांग गति की गोचर प्रणाली से जब-जब कभी एक ही समय में, प्रायः सभी ग्रह इस-इस प्रकार की राशियों में आयेंगे तब ही सिंह लग्न वाले, प्राणियों का भाग्योदय विविध प्रकार से होता रहेगा ।

सू०—सिंह, वृश्चिक, धन, मेष, मिथुन, इन राशियों पर कहीं भी हों।

चं०—कर्क राशि पर।

मं०—सिंह, कन्या, तुला, वृश्चिक, धन, मकर, कुम्भ, मेष, वृष, मिथुन इन राशियों पर कहीं भी हों।

बु०—सिंह, कन्या। तुला, वृश्चिक, धन, कुम्भ, मेष, वृष, मिथुन इन राशियों पर कहीं भी हों।

गु०—कर्क, सिंह, वृश्चिक, धन, मेष, मिथुन, इन राशियों पर कहीं भी हों।

शु०—सिंह, तुला, वृश्चिक, धन, कुम्भ, मेष, वृष, मिथुन, इन राशियों मर कहीं भी हों।

श०—तुला, मकर, कुम्भ, मिथुन, इन राशियों पर कहीं भी हों।

रा०—मिथुन, मकर, इन राशियों पर कहीं भी हों।

के०—धन, मकर, तुला, इन राशियों पर कहीं भी हों।

अर्थात् जिस २ साल, मास, पक्ष, व दिनों में यह ग्रह उपरोक्त राशियों में जब-जब आयेंगे तब-तब ही लाभदायक भाग्य कारक होते रहेंगे किन्तु यदि कोई भो गृह सायं से अस्त होगा तो उसका शुभ फल माननीय नहीं होगा।

# सिंह लगनान्तर अनुकूल ग्रह फलम्

फलादेश नं० १०२

जिस समय में सिंह राशि पर सूर्य, बुद्ध, शुक्र, मंगल, इन चार ग्रहों में से जब-जब कभी कोई आयेंगे तब-तब देह को आराम व मान सम्मान, लाभ और पद प्रभाव को प्राप्ति करते हैं । और सूर्यदेव, सिंह वृश्चिक, धन, मेष वृष, मिथुन इन छः राशियों पर जब-जब कभी आयेंगे तब-तब भी कुछ अन्य विषयों को छोड़कर उपरोक्त विषयक फल भी प्रदान करते हैं ।
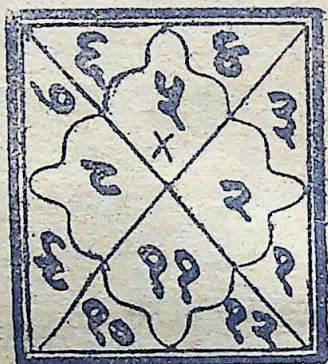
फलादेश नं० १०३

जिस समय में कन्या राशि पर सूर्य, बुद्ध, मंगल, इन तीन ग्रहों में से जब २ कभी आयेंगे, तब २ धन कोष की वृद्धि व कोटुम्बिक विकास करते हैं । और यदि बुद्ध देव, सिंह कन्या, तुला, वृश्चिक, धन, कुम्भ मेष, वृष, मिथुन, इन नौ राशियों पर जब २ कभी आयेंगे तब २ कु छ अन्य विषयों को छोड़कर उपरोक्त विषयक फल भी प्रदान करते हैं ।

**फलादेश नं० १०४**

जिस समय में तुला राशि पर शुक्र, बुद्ध, मंगल, शनि इन चार ग्रहों में से जब-जब कभी को आयेंगे, तब-तब कुछ बहन भाई के संपर्क में लाभ तथा बाहुवल को कार्य शक्ति में सफलता व उन्नति व लाभ प्राप्ति करते हैं। और यदि शुक्रदेव, तुला, वृश्चिक, धन, कुम्भ, मेष, वृष, मिथुन, सिंह, इन आठ राशियों पर जब-जब कभी आयेंगे तब-तब कुछ अन्य विषयों के अतिरिक्त उपरोक्त विषयक फल भी प्रदान करते हैं।

**फलादेश नं० १०५**
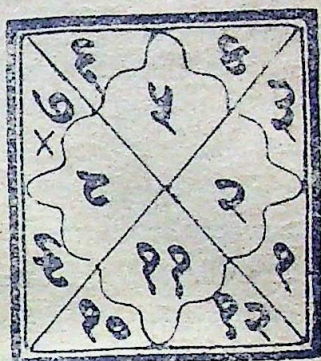
जिस समय में वृश्चिक राशि पर मंगल, शुक्र, बुद्ध, सूर्य इन चार ग्रहों में से जब-जब कभी कोई आयेंगे तब-तब मकान, जायदाद सम्बन्धी मामलों में और मातृस्थान सम्बन्धी व सुख प्राप्ति के सम्बन्धी तथा स्नेही आदमियों के सहयोग के सम्बन्ध में लाभ प्रदान करते हैं। और यदि मंगलदेव, सिंह, वृश्चिक, मेष, वृष, मिथुन इन तीन राशियों पर जब-जब कभी आयेंगे तब-तब कुछ अन्य विषयों के अतिरिक्त उपरोक्त विषयक फल भी प्रदान करते हैं।

फलादेश नं० १०६

जिस समय में धन राशि पर गुरु, मंगल, शुक्र, सूर्य, बुद्ध इन पांच ग्रहों में से जब-जब कभी कोई आयेंगे तब तब संतान पक्ष का सुख, विद्या और ज्ञान की वृद्धि, वाक्य की चातुरी, धन प्राप्ति की सूझ, इत्यादि बातें पैदा करते हैं। और यदि गुरुदेव, मेष, मिथुन, सिंह इन तीन राशियों पर जब-जब कभी आयेंगे तब-तब कुछ अन्य विषयों को छोड़कर उपरोक्त विषयक फल भी प्रदान करते हैं।

फलादेश नं० १०७

जिस समय मकर राशि पर शनी, शुक्र, मंगल, सूर्य, राहू, केतू इन छः ग्रहों में से जब-जब कभी आयेंगे तब-तब प्रभाव की वृद्धि शत्रुपक्ष से विजय और लाभ तथा कुछ परिश्रमी व दिक्कत-तलब कार्यों से लाभ पैदा करते हैं। और यदि शनीदेव, कुम्भ, वृष, मिथुन, तुला, वृश्चिक, धन, मकर इन सात राशियों पर जब-जब कभी आवेंगे तब-तब भी अन्य विषयों के अतिरिक्त उपरोक्त विषयक फल भी प्रदान करते हैं।
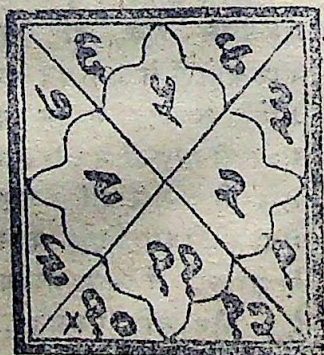
फलादेश नं० १०८

जिस समय में कुम्भ राशि पर शनी, शुक्र, मंगल, बुद्ध, इन चार ग्रहों में से जब-जब कभी कोई आवेंगे तब-तब दैनिक रोजगार में तरक्की व स्त्री पक्ष में लाभ और प्रभाव एवं लौकिक कार्यों में सफलता देते हैं। और यदि शनीदेव; वृष, मिथुन, तुला, धन, इन चार राशियों पर जब कभी आवेंगे तब कुछ अन्य विषयों के अतिरिक्त उपरोक्त विषयक फल भी प्रदान करते हैं।

फलादेश नं० १०९
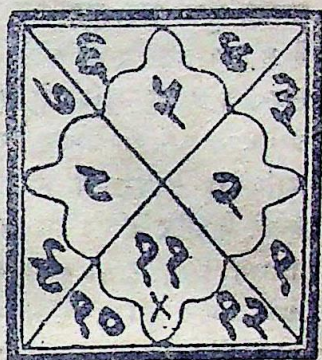
जिस समय में मीन राशि पर गुरु, मंगल, शुक्र, सूर्य इन चार ग्रहों में से जब-जब कभी कोई आवेंगे तब-तब किसी पुरातत्व संबन्धित कोई वस्तु का लाभ तथा जीवन की दिनचर्या में रौनक तथा कुछ गूढ़ युक्तियों से फायदे की सूरत पैदा करते हैं और यदि गुरुदेव, मेष, वृष, मिथुन, कर्क, सिंह, कन्या, तुला, वृश्चिक, धन, मीन इन दस राशियों पर जब-जब कभी आवेंगे तब-तब कुछ अन्य विषयों के अतिरिक्त उपरोक्त विषयक फल भी प्रदान करते हैं।

फलादेश नं० ११०

जिस समय में मेष राशि पर मंगल, शुक्र, बुद्ध, सूर्य इन ४ ग्रहों में से जब-जब कभी कोई आवेंगे तब-तब भाग्य शक्ति से लाभ की प्राप्ति व धर्म का पालन, यश की प्राप्ति व ईश्वर में भरोसा पैदा करते हैं और यदि मंगलदेव, वृष, मिथुन, सिंह, कन्या, तुला, वृश्चिक धन, मकर कुम्भ, मीन इन दस राशियों पर जब-जब कभी आवेंगे तब-तब कुछ अन्य विषयों को छोड़कर उपरोक्त विषयक फल भी प्रदान करते हैं।
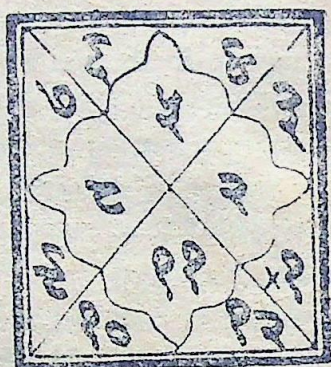
फलादेश नं० १११

जिस समय में वृष राशि पर मंगल, शुक्र, बुद्ध इन तीन ग्रहों में से जब-जब कभी कोई आवेंगे तब-तब पिता स्थान में व कारोबार के सम्बन्ध में उन्नति व सफलता करते हैं और राज समाज के स्थान व सम्बन्धित कार्यों में मान, प्रतिष्ठा एवं लाभ का योग पैदा करते हैं और यदि शुक्रदेव, मिथुन, सिंह, तुला, धन, वृश्चिक, कुम्भ, मेष, वृष इन आठ राशियों पर जब-जब कभी आवेंगे तब-तब भी कुछ अन्य विषयों के अतिरिक्त उपरोक्त विषयक फल भी प्रदान करते हैं।

फलादेश नं० ११२

जिस समय में मिथुन राशि पर मंगल, शुक्र, बुद्ध, शनी, सूर्य, राहू, इन छै ग्रहों में से जब जब कभी कोई आवेंगे तब तब धन की प्राप्ती में वृद्धी और आवश्यक पदार्थों का लाभ प्रदान करते हैं और यदि बुद्धदेव, सिंह, कन्या, तुला, वृश्चिक, धन, कुम्भ, मिथुन, मेष, वृष इन९ राशियों पर जब २ कभी आवेंगे तब २ भी कुछ अन्य विषयों को छोड़कर उपरोक्त बिषयक फल प्रदान करते हैं।

फलादेश नं० ११३

जिस समय में कर्क राशि पर चन्द्र, सूर्य, शुक्र, बुद्ध, गुरु इन पांच ग्रहों में से जब २ कभी कोई आवेंगे तब २ बाहरी दूसरे स्थानों के संवंध में सुन्दर लाभ का सहयोग प्राप्त करते हैं और खर्च शक्ति की प्रबलता देते हैं और यदि चन्द्रदेव, सिंह, कन्या, तुला, धन, मेष, कुम्भ, वृष, मिथुन, कर्क, इन नौ राशियों पर जबज-ब कभी आवेंगे तब-तब भी कुछ अन्य विषयों के अतिरिक्त उपरोक्त विषयक फल भी प्रदान करते हैं।
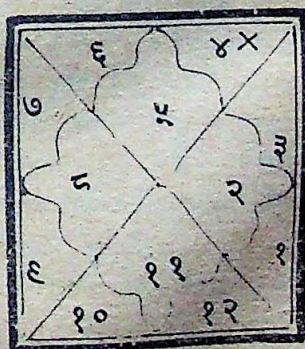
## सिंह लगनान्तर प्रतिकूल ग्रह फलम

फलादेश नं० ११४

जिस समय में सिंह राशि पर राह, केतू, शनी चन्द्र इन ४ ग्रहों में से जब-जब कभी कोई आवेंगे तब-तब देह को कष्ट, हृदय को चिंता व खून की कमी पैदा करते हैं और यदि सूर्यदेव, तुला, मीन, कर्क इन तीन राशियों पर जब जब कभी आवेंगे तब २ भी कुछ अन्य विषयों को छोड़कर उपरोक्त विषयक फल भी प्रदान करते हैं।
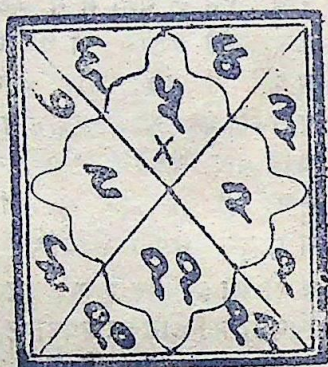
फलादेश नं० ११५

जिस में कन्या राशि पर राहु, केतु, शनी, चन्द्र, शुक्र, गुरु इन ६ ग्रहों में से जब २ कभी कोई आवेंगे तब तब धन संग्रह के स्थान में कुछ हानि और कौटुम्बिक क्लेश पैदा करते हैं और यदि बुद्धदेव, मकर, मीन, कर्क इन तीन राशियों पर जब २ कभी आवेंगे तब २ भी कुछ अन्य विषयों को छोड़कर उपरोक्त विषयक फल प्रदान करते हैं।
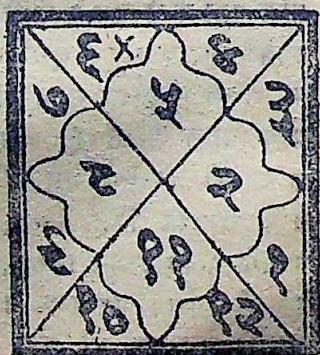
फलादेश नं० ११६

जिस समय में तुला राशि पर सूर्य, गुरु, चन्द्र, राहु, केतु, इन ५ ग्रहों में से जब-जब कभी कोई आवेंगे तब २ भाई बहन के साथ में किसी प्रकार कुछ अशांति और अपने बाहुबल के कार्यों में कुछ थकान व परेशानी पैदा करते हैं और यदि शुक्रदेव, मकर, कन्या, कर्क इन तीन राशियों पर जब जब कभी आवेंगे तब तब कुछ अन्य विषयों को छोड़कर उपरोक्त विषयक फल भी प्रदान करते हैं।

फलादेश नं ११७

जिस समय में वृश्चिक राशि पर चन्द्र, राहु, केतु, शनी, गुरु इन पाँच ग्रहों में से जब २ कभी कोई आवेंगे तब-तब सुख के साधनों में कुछ कमी व माता के सम्बन्ध में या भूमि के सम्बन्ध में कुछ परेशानी करते हैं और यदि मंगलदेव, मीन या कर्क राशि पर जब २ कभी आवेंगे तब २ भी कुछ अन्य विषयों के अतिरिक्त उपरोक्त विषयक फल भी प्रदान करते हैं।

फलादेश नं० ११८

जिस समय में धन राशि पर शनी, चन्द्र, राहु इन तीन ग्रहों में से जब जब कभी कोई आवेंगे तब तब संतान पक्ष में किसी प्रकार की चिंता व दिमाग में परेशानी तथा विद्या व विवेक में कुछ कमजोरी पैदा करते हैं और यदि गुरुदेव, मकर, मीन, कन्या इन ३ राशियों पर जब २ कभी आवेंगे तब २ भी कुछ अन्य विषयों के अतिरिक्त उपरोक्त विषयक फल भी प्रदान करते हैं।
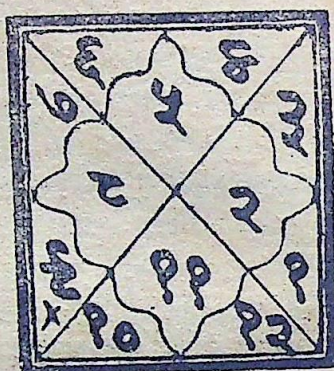
फलादेश नं० ११९

जिस समय में मकर राशि पर गुरू, चन्द्र, दोनों में से कोई भी ग्रह जब-जब कभी आवेंगे तब-तब हृदय और मन को विपक्षियों द्वारा अशांति पैदा करते हैं और किसी अशांतिप्रद वातावरण से ही हृदय और मन को कष्ट पहुँचाते हैं और यदि शनीदेव, कर्क, मीन इन दो राशियों पर जब-जब कभी आवेंगे तव २ कुछ अन्य विषयों को छोड़ कर उपरोक्त विषयक फल भी प्रदान करते हैं।

फलादेश नं० १२०

जिस समय में कुम्भ राशि पर गुरु, चन्द्र, राहू, केतु इन ४ ग्रहों में से जब २ कभी कोई आवेंगे तब तब स्त्री स्थान में अशांति व दैनिक रोजगार में कुछ परेशानी व कुछ हानि तथा भोगादिक पक्ष में कुछ न्यूनता पैदा करते हैं और यदि शनीदेव, मीन, कर्क, कन्या इन ३ राशियों पर जब २ कभी आवेंगे तब २ कुछ अन्य विषयों के अतिरिक्त उपरोक्त विषयक फल भी प्रदान करते हैं।
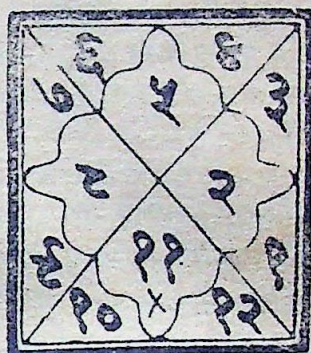
फलादेश नं० १२१

जिस समय में मीन राशि पर शनी, चन्द्र, बुद्ध, राहु, केतु इन ५ ग्रहों में से जब-जब कभी कोई आवेंगे तब-तब किसी पुरातत्व वस्तु की हानि और कुछ उदर का विकार व जीवन में चिंता पैदा करते हैं, और यदि गुरुदेव, मकर राशी पर जब २ कभी आवेंगे तब-तब कुछ अन्य विषयों के अतिरिक्त उपरोक्त विषयक फल भी प्रदान करते हैं।

फलादेश नं० १२२

जिस समय में मेष राशि पर शनी, चन्द्र, राहू, केतु इन ४ ग्रहों में से जब २ कभी कोई आवेंगे तब तब भाग्य स्थान की कुछ कमजोरी और धर्म पालन में अरुचि या कुछ हानि व ईश्वर के विश्वास में कुछ कमी पैदा करते हैं और यदि मंगल देव, कर्क या मीन राशि पर जब २ कभी आवेंगे तब-तब कुछ अन्य विषयों को छोड़कर उपरोक्त विषयक फल भी प्रदान करते हैं।
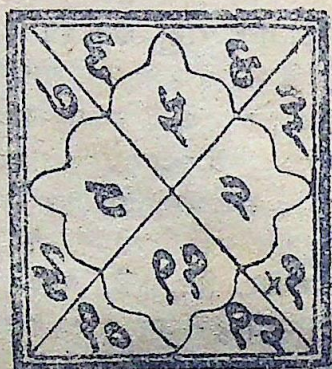
फलादेश नं० १२३

जिस समय में वृष राशि पर राहू, केतु गुरु इन ३ ग्रहों से जब २ कभी कोई आवेंगे तब तब किसी बड़े कारबार व राज समाज से सम्बन्धित् कार्य में कमजोरी पैदा करते हैं और पिता स्थान में व मान प्रतिष्ठा के स्थान में कुछ कमी पैदा करते हैं और यदि शुक्रदेव, कर्क, मकर, कन्या इन राशियों पर जब जब कभी आवेंगे तब तब कुछ अन्य विषयों के अतिरिक्त उपरोक्त विषयक फल भी प्रदान करते हैं।

फलादेश नं० १२४

जिस समय में मिथुन राशि पर केतू, गुरु, चन्द्र इन ३ ग्रहों में से जब २ कभी कोई आवेंगे तब-तब आमदनी की लाइन में कुछ परेशानी व कुछ कमी व आवश्यक पदार्थों में कुछ न्यूनता पैदा करते हैं और यदि बुद्धदेव, कर्क, मकर, मीन इन तीन राशियों पर जब २ कभी आवेंगे तब-तब कुछ अन्य विषयों को छोड़कर उपरोक्त विषयक फल भी प्रदान करते हैं।

फलादेश नं० १२५

जिस २ समय में कर्क राशि पर राहु, केतु, मंगल, शनी इन ४ ग्रहों में से जब-जब कभी कोई आवेंगे तब-तब खर्च के स्थान में कुछ कमी व परेशानी और बाहरी दूसरे स्थानों के संबंधित संपर्क में भी कुछ परेशानी व कुछ कमी पैदा करते हैं और यदि चन्द्रदेव, मकर, वृश्चिक, मीन इन तीन राशियों पर जब-जब कभी आवेंगे तब-तब कुछ अन्य विषयों को छोड़कर उपरोक्त विषयक फल भी प्रदान करते हैं।
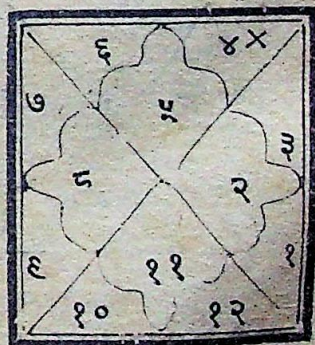
# कन्या लग्नान्तर भाग्योदय कारक, नवग्रह व समय फल

## कन्या लग्न फलादेश नम्बर १२६
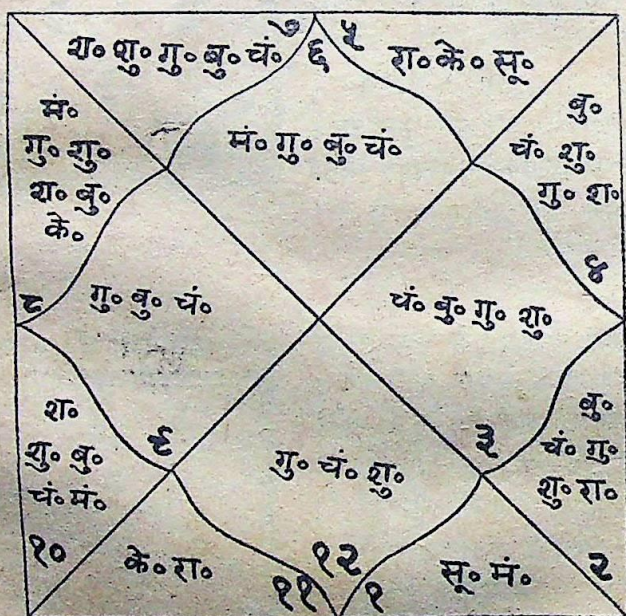
जिस-जिस समय कन्या लग्न वाले प्राणियों को ऊपर स्थित कुण्डली के अनुसार यह नवग्रह, पंचांग गति की गोचर प्रणाली से जब-जब कभी एक ही समय में, प्रायः सभी ग्रह, इस-इस प्रकार की राशियों में आवेंगे तब-तब ही कन्या लग्न वाले प्राणियों का भाग्योदय होता रहेगा। यानी—

सू०—सिंह, मेष राशियों पर कहीं भी हों।

चं०—कन्या, तुला, धन, मकर, मीन, वृष, मिथुन, कर्क इन राशियों पर कहीं भी हों।

मं—कन्या, वृश्चिक, मकर, मेष इन राशियों पर कहीं भी हों।

बु०—कन्या, तुला, वृश्चिक, धन, मकर, वृष, मिथुन, कर्क इन राशियों पर कहीं भी हों।

गु०—कन्या, तुला, वृश्चिक, धन, मीन, वृष, मिथुन, कर्क इन राशियों पर कहीं भी हों।

शु०—तुला, वृश्चिक, धन, मकर, मीन, वृष, मिथुन, कर्क इन राशियों पर कहीं भी हों।

श०—तुला, वृश्चिक, मकर, कर्क इन राशियों पर कहीं भी हों।

रा०— कुम्भ, सिंह, वृष इन राशियों पर कहीं भी हों।

के०— कुम्भ, सिंह, वृश्चिक इन राशियों पर कहीं भी हों।

अर्थात्—जिस जिस साल, मास, पक्ष व दिनों में यह नवग्रह एक ही समय उपरोक्त उपरोक्त राशियों में जब-जब आवेंगे तब-तब ही लाभकारक, भाग्यकारक सिद्ध होंगे, किन्तु यदि कोई भी ग्रह सूर्य से अस्त होगा तो उसका फल मान्य नहीं होगा।

## कन्या लगनान्तर अनुकूल ग्रह फलम्

फलादेश नं० १२७

जिस-जिस समय में कन्या राशि पर बुद्ध, चन्द्र, गुरु इन तीन ग्रहों में से कोई भी जब २ कभी आवेंगे तब-तत्र मन को व हृदय को सुख, शांति व उमंग और लाभ की प्राप्ति तथा लौकिक व गृहस्थिक कार्यों की सफलता तथा मान, प्रभाव और ज्ञान की प्राप्ति करते हैं और यदि बुद्धदेव, वृष, मिथुन, कर्क, कन्या, वृश्चिक, धन मकर इन ७ राशियों पर जब-जब कभी आवेंगे तब-तब भी कुछ अन्य विषयों को छोड़कर उपरोक्त विषयक फल प्रदान करते हैं।

फलादेश नं० १२८

जिस-जिस समय में तुला राशि पर बुद्ध, शुक्र, चन्द्र, शनी इन ४ ग्रहों में से जब २ कभी कोई ग्रह आवेंगे तब २ धन की वृद्धी और कौटुम्बिक सुख की प्राप्ति करते हैं और यदि शुक्रदेव, तुला, वृश्चिक धन, मकर, मीन, वृष, मिथुन, कर्क इन आठ राशियों पर जब-जब कभी आवेंगे तब-तब कुछ अन्य विषयों के अतिरिक्त उपरोक्त विषयक फल भी प्रदान करते हैं।

फलादेश नं० १२९

जिस-जिस समय में वृश्चिक राशि पर शुक्र, बुद्ध, गुरु इन तीन ग्रहों में से जब-जब कभी कोई आयेंगे तब-तब बाहुबल के कार्यों में सुख, शांति और सफलता तथा भाई बहनों के सम्बन्धित कार्य मार्ग में उल्लास व सुख-सहायता प्रदान करते हैं और यदि मंगलदेव, वृष, मकर, मिथुन इन तीन राशियों पर जब-जब कभी आवेंगे तब-तब कुछ अन्य विषयों के अतिरिक्त उपरोक्त विषयक फल भी प्रदान करते हैं।
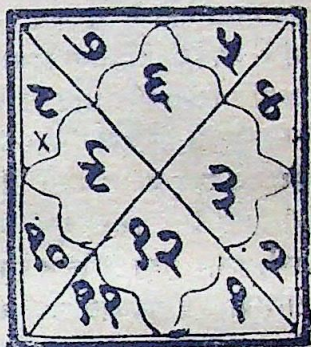
फलादेश नं० १३०

जिस-जिस समय में धन राशि पर शुक्र, बुद्ध, चन्द्र, गुरु इन ४ ग्रहों में से जब-जब कभी कोई आयेंगे तब-तब भूमि, मकानादि सम्बन्धी किसी प्रकार का सुख, लाभ और मातृस्थान के स्नेह की वृद्धि तथा सुख प्राप्ति के अच्छे साधन प्रदान करते हैं और यदि गुरुदेव, धन, मीन, मिथुन, कर्क, कन्या इन पाँच राशियों पर जब-जब कभी आवेंगे तब-तब कुछ अन्य विषयों के अतिरिक्त उपरोक्त विषयक फल भी प्रदान करते हैं।
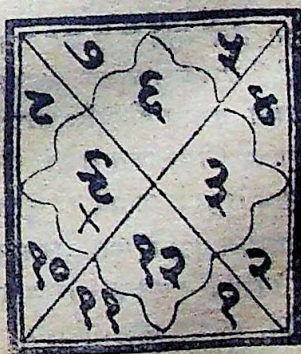
फलादेश नं० १३१

जिस २ समय में मकर राशि पर शनि, शुक्र, बुद्ध, चन्द्र, मंगल इन पाँचों ग्रहों में से जब २ कभी कोई आवेंगे तब-तब दिमाग की उन्नति, विद्या और ज्ञान का विकास तथा वाणी की शक्ति और सन्तान पक्ष का सुख प्रदान करते हैं और यदि शनिदेव, मकर, वृष, मिथुन, कर्क, कन्या, तुला, वृश्चिक इन सात राशियों पर जब-जब कभी आवेंगे तब-तब कुछ अन्य विषयों के अतिरिक्त उपरोक्त विषयक फल भी प्रदान करते हैं।

फलादेश नं० १३२
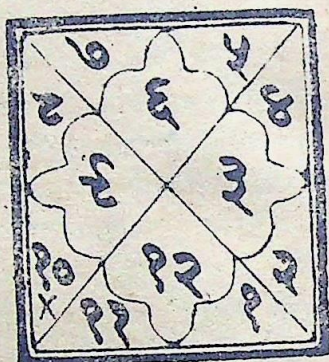
जिस-जिस समय में कुम्भ राशि पर शनि, मंगल, सूर्य, राहू, केतू इन पाँचों ग्रहों में से जब-जब कभी कोई आयेगे तब-तब शत्रुपक्ष का दमन, प्रभाव की वृद्धि और किसी प्रकार की दिक्कत तलब परिश्रमी मार्ग के द्वारा फायदे की सूरत तथा ननसाल पक्ष में कुछ दुख-सुख का योग पैदा करते हैं और यदि शनि देव, कुम्भ, वृष, मिथुन, कर्क, तुला, कन्या, वृश्चिक, धन इन ८ राशियों पर जब-जब कभी आयेंगे तब-तब कुछ अन्य विषयों को छोड़कर उपरोक्त विषयक फल भी प्रदान करते हैं।

फलादेश नं० १३३

जिस-जिस समय में मीन राशि पर शुक्र, चन्द्र, गुरु इन ३ ग्रहों में से जब-जब कभी कोई आवेंगे तब-तब दैनिक रोजगार के पक्ष में खूबलाभ और स्त्री स्थान में व भोगादिक पक्ष में सुख की प्राप्ति व आनन्द प्रदान करते हैं और यदि गुरुदेव, मीन, कर्क, कन्या, वृश्चिक, मिथुन, धन इन ६ राशियों पर जब-जब कभी आवेंगे तब-तब भी कुछ अन्य विषयों को छोड़कर उपरोक्त विषयक फल भी प्रदान करते हैं।
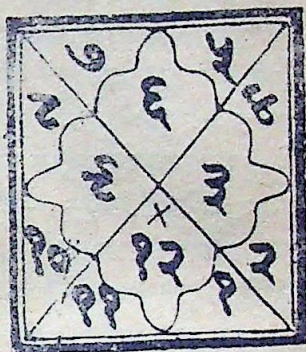
फलादेश नं० १३४

जिस-जिस समय में मेष राशि पर सूर्य, गुरु, शुक्र, बुद्ध, मंगल इन ५ ग्रहों में से जब-जब कभी कोई आवेंगे तब-तब किसी वस्तु का पुरातत्व सम्बन्धी लाभ और जीवन रक्षा के लिये कोई अच्छा साधन तथा कठिनाइयों के मार्ग से लाभ पैदा करते हैं और यदि मंगलदेव, मेष, वृष, मिथुन, कन्या, तुला वृश्चक, धन, मकर इन आठ राशियों पर जब-जब कभी आवेंगे तब-तब कुछ अन्य विषयों के अतिरिक्त उपरोक्त विषयक फल भी प्रदान करते हैं।

फलादेश नं० १३५
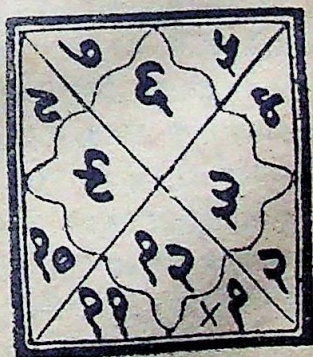
जिस-जिस समय में वृष राशि पर शुक्र, बुद्ध, चन्द्र, इन ३ ग्रहों में से जब-जब कभी कोई आवेंगे तब-तब धर्म और यश की वृद्धि तथा भाग्य की उन्नति तथा लाभ प्राप्ति के कुदरती साधन पैदा करते हैं और यदि शुक्रदेव, मिथुन, कर्क, तुला धन, वृश्चिक, मकर, मीन इन सात राशियों पर जब-जब कभी आवेंगे तब-तब कुछ अन्य विषयों के अतिरिक्त उपरोक्त विषयक फल भी प्रदान करते हैं।

फलादेश नं० १३६
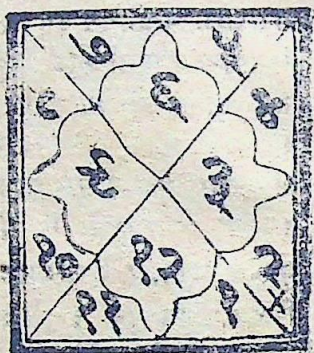
जिस-जिस समय में मिथुन राशि पर शुक्र, बुद्ध, चन्द्र, गुरु इन चार ग्रहों में से जब-जब कभी कोई आवेंगे तब-तब पिता स्थान में व कारबार के स्थान में सफलता व उन्नति करते हैं और राज समाज व मान-प्रतिष्ठा आदि के मार्ग में उन्नति व लाभ का योग पैदा करते हैं और यदि बुद्धदेव, मिथुन, कर्क कन्या, तुला, वृश्चक, धन, मकर इन सात राशियों पर जब-जब कभी आवेंगे तब-तब कुछ अन्य विषयों के अतिरिक्त उपरोक्त विषयक फल भी प्रदान करते हैं।
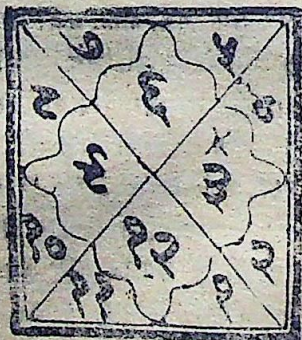
फलादेश नं० १३७

जिस-जिस समय में कर्क राशि पर बुद्ध, शुक्र, चन्द्र गुरु, शनि, राहू इन ६ ग्रहों में से जब-जब कभी कोई आवेंगे तब-तब धन प्राप्ति के अच्छे साधन व बहुत से आवश्यक पदार्थों का लाभ प्रदान करते हैं और यदि चन्द्रदेव, कर्क, कन्या, तुला, धन, मकर, मीन, वृष, मिथुन इन ८ राशियों पर जब-जब कभी आवेंगे तब-तब कुछ अन्य विषयों को छोड़कर उपरोक्त विषयक फल भी प्रदान करते हैं।
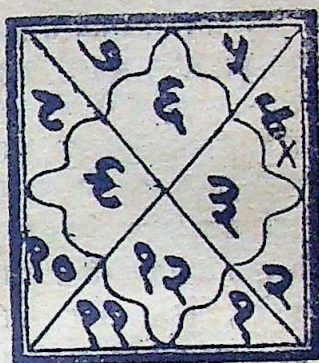
फलादेश नं० १३८

जिस-जिस समय में सिंह राशि पर सूर्य, शुक्र, बुद्ध, चन्द्र, मंगल, गुरु इन ६ ग्रहों में से जब-जब कभी कोई आवेंगे तब-तब खर्च की अधिकता का आनन्द और दूसरे बाहरी स्थानों के सम्बन्धित संपर्क में सफलता प्राप्त करते हैं और यदि सूर्यदेव, सिंह, कन्या, वृश्चिक, मकर, धन, मीन, मेष, वृष, मिथुन कर्क इन दस राशियों पर जब-जब कभी आवेंगे तब-तब कुछ अन्य विषयों के अतिरिक्त उपरोक्त विषयक फल भी प्रदान करते हैं।

## कन्या लग्नान्तर प्रतिकूल ग्रह फलम

फलादेश नं० १३९

जिस-जिस समय में कन्या राशि पर सूर्य, शनि, मंगल, राहू, केतू इन पाँच ग्रहों में से जब-जब कभी कोई आवेंगे तब-तब हृदय को अशान्ति व देह को कमजोर व कष्ट तथा बहुत दौड़-धूप व कुछ दिक्कतें प्रदान करते हैं और यदि बुद्धदेव, कुम्भ, मीन, मेष, सिंह इन ४ राशियों में जब-जब कभी आवेंगे तब-तब कुछ अन्य विषयों को छोड़कर उपरोक्त विषयक फल भी प्रदान करते हैं।
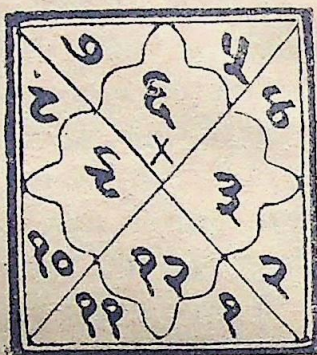
फलदेश नं० १४०

जिस-जिस समय में तुला राशि पर सूर्य, मंगल, राहू, केतू इन ४ ग्रहों में से जब-जब कभी कोई आवेंगे तब-तब धन स्थान में कुछ हानि और कौटुम्बिक क्लेश पैदा करते हैं और यदि शुक्रदेव, कुम्भ, मेष, सिंह, कन्या इन चार राशियों पर जब-जब कभी आवेंगे तब-तब कुछ अन्य विषयों को छोड़कर उपरोक्त विषयक फल भी प्रदान करते हैं।
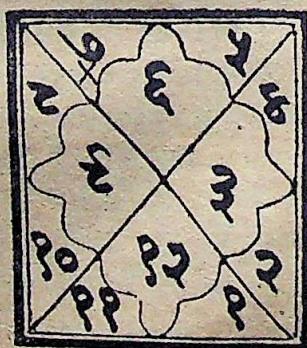
फलादेश नं० १४१

जिस-जिस समय में वृश्चिक राशि पर सूर्य, चन्द्र, शनि, मंगल, राहू, केतू इन ६ ग्रहों में से जब-जब कभी कोई आवेंगे तब-तब भाई-बहन के स्थान में अशांति तथा बाहुबल के कर्मयोग द्वारा कुछ परेशानियों का व परिश्रम का कार्य करते हैं और यदि मंगलदेव, कुम्भ, मेष, कर्क, सिंह, तुला इन ५ राशियों में जब-जब कभी आवेंगे तब-तब कुछ अन्य विषयों के अतिरिक्त उपरोक्त विषयक फल भी प्रदान करते हैं।

फलादेश नं० १४२

जिस-जिस समय में धन राशि पर सूर्य, शनि, मंगल, राहू इन ४ ग्रहों में से जब २ कभी कोई आवेंगे तब तब मकान, जायदाद व रहने-सहने के स्थान आदि की कुछ परेशानी तथा मातृस्थान की कुछ कमजोरी व सुख-शांति के साधनों में बाधा तथा स्नेही मनुष्यों की कुछ कमी पैदा करते हैं और यदि गुरुदेव, मकर, कुम्भ, मेष, सिंह, तुला इन ५ राशियों में जब २ कभी आवेंगे तब २ कुछ अन्य विषयों के अतिरिक्त उपरोक्त विषयक फल भी प्रदान करते हैं।

फलादेश नं० १४३

जिस-जिस समय में मकर राशि पर गुरु, सूर्य, राहू, केतू, इन चार ग्रहों में से जब २ कभी कोई आवेंगे तब २ दिमाग की परेशानी, संतान पक्ष की फिक्र, विद्या और ज्ञान की न्यूनता पैदा करते हैं और यदि शनिदेव, कुम्भ, मेष, सिंह इन ३ राशियों पर जब २ कभी आवेंगे तब-तब कुछ अन्य विषयों को छोड़-कर उपरोक्त विषयक फल भी प्रदान करते हैं।
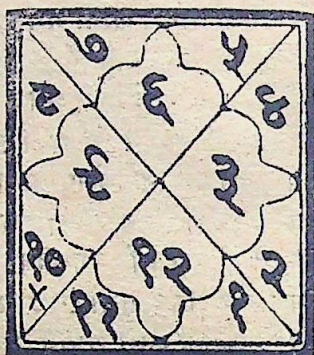
फलादेश नं० १४४

जिस-जिस समय में कुम्भ राशि पर मंगल, सूर्य, राहू, केतू इन चार ग्रहों में से जब-जब कभी कोई आवेंगे तब-तब ननसाल पक्ष की कमजोरी तथा शत्रुपक्ष से व रोगा-दिक पक्ष से कुछ अलकसाहट महसूस करते हैं और यदि शनि-देव, मेष, सिंह इन दो राशियों पर जब-जब कभी आवेंगे तब-तब कुछ अन्य विषयों को छोड़कर उपरोक्त विषयक फल भी प्रदान करते हैं।
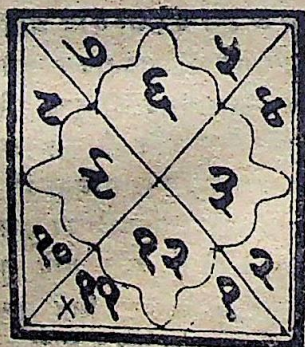
फलादेश नं० १४५

जिस-जिस समय में मीन राशि पर शनि, मंगल, सूर्य, राहू, केतू इन ५ ग्रहों में से जब-जब कभी कोई आवेंगे तब-तब दैनिक रोजगार में कुछ हानि व परेशानी और स्त्री स्थान में व भोगादिक पक्ष में कुछ कमी व क्लेश पैदा करते हैं और यदि गुरुदेव, मेष, सिंह, मकर, तुला, कुम्भ इन ५ राशियों में जब-जब कभी आवेंगे तब-तब कुछ अन्य विषयों के अतिरिक्त उपरोक्त विषयक फल भी प्रदान करते हैं।
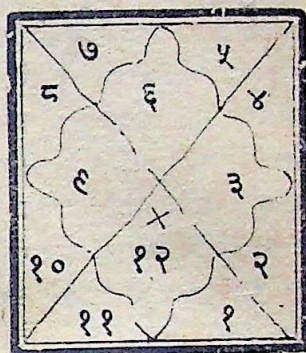
फलादेश नं० १४६

जिस-जिस समय में मेष राशि पर शनि, राहू, केतू, इन ३ ग्रहों में से कोई भी जब-जब कभी आवेंगे तब-तब किसी पुरातत्व सम्बन्धी वस्तु की हानि, जीवन की चिंता और उदर का कुछ विकार पैदा करते हैं और यदि मंगलदेव, सिंह, कर्क, कुम्भ इन ३ राशियों पर जब-जब कभी आवेंगे तब-तब कुछ अन्य विषयों के अतिरिक्त उपरोक्त विषयक फल भी प्रदान करते हैं।

फलादेश नं० १४७

जिस-जिस समय में वृष राशि पर सूर्य, मंगल, राहू, केतु इन ४ ग्रहों में से जब-जब कभी कोई आवेंगे तब-तब भाग्य स्थान में बड़ी अशांति तथा यश की कमी व ईश्वर निष्ठा में अविश्वास पैदा करते हैं और यदि शुक्रदेव, सिंह, कन्या, कुम्भ, मेष इन चार राशियों पर जब-जब कभी आवेंगे तब-तब कुछ अन्य विषयों के अतिरिक्त उपरोक्त विषयक फल भी प्रदान करते हैं।
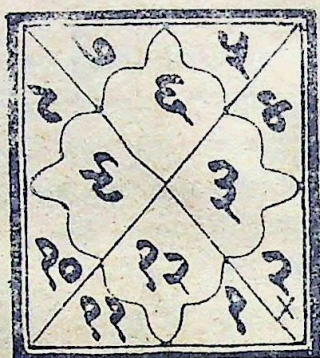
फलादेश नं० १४८

जिस-जिस समय में मिथुन राशि पर सूर्य, केतू, मंगल, शनि इन ४ ग्रहों में से जब-जब कभी कोई आवेंगे तब-तब व्यापार आदि कारोबार के सम्बन्ध में दिक्कतें व कुछ हानि का योग पैदा करते हैं तथा राज-समाज व पिता स्थान में व मान-प्रतिष्ठा के स्थान में भी परेशानियां पैदा करते हैं और यदि बृद्धदेव, सिंह, कुम्भ, मीन, मेष इन चार राशियों में जब-जब कभी आवेंगे तब-तब कुछ अन्य विषयों के अतिरिक्त उपरोक्त विषयक फल भी प्रदान करते हैं।
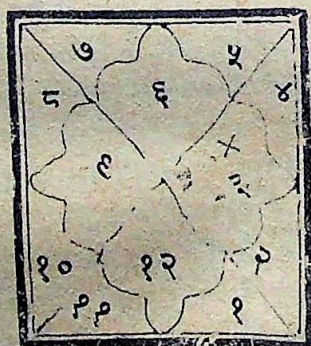
फलादेश नं० १४९

जिस-जिस समय में कर्क राशि पर मंगल, सूर्य, केतू इन ३ ग्रहों में से जब-जब कभी कोई आवेंगे तब-तब आमदनी के स्थान में कुछ दिक्कतें व आवश्यक पदार्थों की पूर्ति में कुछ कमी पैदा करते हैं और यदि चन्द्रदेव, सिंह, वृश्चिक, कुम्भ, मेष इन चार राशियों पर जब-जब कभी आवेंगे तब-तब कुछ अन्य विषयों के अतिरिक्त उपरोक्त विषयक फल भी प्रदान करते हैं।
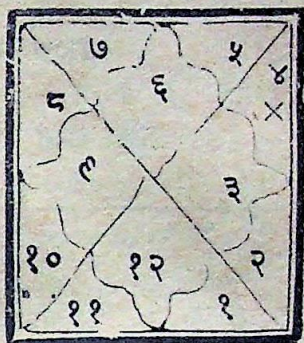
फलादेश नं० १५०

जिस-जिस समय में सिंह राशि पर राहू, केतू, शनि इन तीन ग्रहों में से जब-जब कभी कोई आवेंगे तब-तब खर्च के स्थान में कुछ परेशानियां और दूसरे स्थानों के सम्बन्ध में दिक्कतें पैदा करते हैं और यदि सूर्यदेव, तुला, कुम्भ इन दो राशिय पर जब-जब कभी आवेंगे तब-तब कुछ अन्य विषयों के अतिरिक्त उपरोक्त विषयक फल भी प्रदान करते हैं।

# तुला लग्नान्तर भाग्योदय कारक, नवग्रह व समय फल

## तुला लग्न फलादेश नं० १५१
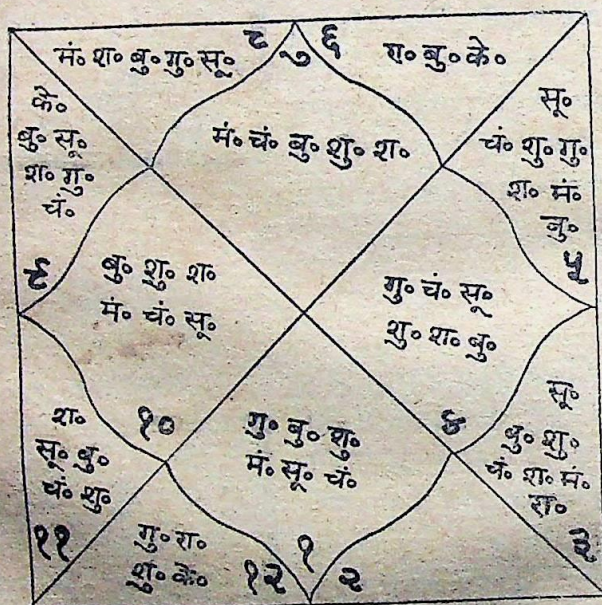
जिस-जिस समय में तुला लग्न वाले प्राणियों को ऊपर स्थित कुण्डली के अनुसार यह नवग्रह, पंचांग गति की गोचर प्रणाली से जब-जब कभी एक ही समय में, प्रायः सभी ग्रह इस-इस प्रकार की राशियों में आवेंगे तब-तब ही तुला लग्न वालों का भाग्योदय विविध प्रकार से होता रहेगा—यानी

सू०—सिंह, वृश्चिक, धन, मकर, कुम्भ, मेष, मिथुन, कर्क इन २ राशियों पर कहीं भी हों।

चं०—तुला, धन, मकर, कुम्भ, मेष, मिथुन, कर्क, सिंह इन राशियों पर कहीं भो हों।

मं०— तुला, वृश्चिक, धन, मकर, मेष, मिथुन, सिंह इन २ राशियों पर कहीं भी हों।

बु०—कन्या, तुला, वृश्चिक, धन, मकर, कुम्भ, मेष, मिथुन, कर्क, सिंह इन २ राशियों पर कहीं भी हों।

गु०—वृश्चिक, धन, मीन, मेष, कर्क, सिंह इन २ राशियों पर कहीं भी हों।

शु०—तुला, मकर, कुम्भ, मीन, मेष, मिथुन, कर्क, सिंह इन राशियों पर कहीं भी हों।

श०—तुला, वृश्चिक, धन, मकर, कुम्भ, मिथुन, कर्क, सिंह इन २ राशियों पर कहीं भी हों।

रा०—मीन, मिथुन, कन्या, इन २ राशियों पर कहीं भी हों।

के०—धन, मीन, कन्या इन २ राशियों पर कहीं भी हों।

अर्थात्—जिस २ साल, मास, पक्ष व दिनों में यह नवग्रह उपरोक्त २ राशियों में एक ही समय में जब-जब कभी आवेंगे, तब-तब ही भाग्यकारक, सुखदायक व लाभदायक सिद्ध होंगे किन्तु यदि कोई भी ग्रह सूर्य से अस्त होगा तो उसका फल मान्य नहीं समझा जायगा।

## तुला लग्नान्तर अनुकूल ग्रह फलम्

फलादेश नं० १५२

जिस-जिस समय में तुला राशि पर शुक्र, शनि, चन्द्र, इन तीन ग्रहों में से जब-जब कभी कोई आवेंगे तब-तब देह को सुख की प्राप्ति, मान प्रतिष्ठा की उन्नति करते हैं और बुद्ध, मं०, गु० इन तीन ग्रहों में से जब-जब कोई आवेंगे तब-तब कुछ देहिक परेशानियों के साथ-साथ प्रभाव मान व लाभ की वृद्धि करते हैं। और यदि शुक्रदेव, धन, मकर, कुम्भ, मीन, मेष, मिथुन, कर्क, सिंह इन आठ राशियों पर जब-जब कभी आवेंगे तब-तब कुछ अन्य विषयों के अतिरिक्त उपरोक्त विषयक फल भी प्रदान करते हैं।
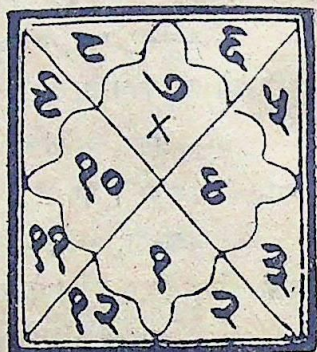
फलादेश नं० १५३

जिस-जिस समय में वृश्चिक राशि पर सूर्य, बुद्ध, मंगल, शनि, गुरु इन पांच ग्रहों में से जब-जब कभी कोई आवेंगे तब-तब धन की वृद्धि और कौटुम्बिक विकास करते हैं और यदि मंगलदेव, वृश्चिक, धन, मकर, मेष, सिंह तुला, इन ६ राशियों पर जब-जब कभी आवेंगे, तब-तब भी कुछ अन्य विषयों के अतिरिक्त उपरोक्त विषयक फल भी प्रदान करते हैं।

फलादेश नं० १५४
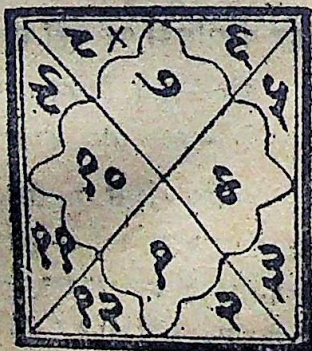
जिस-जिस समय में धन राशि पर सू०, चं०, बु० इन तीन ग्रहों में से जब-जब कभी कोई आते हैं तो बहन भाइयों के स्थान में लाभप्रद संबंध पैदा करते हैं और सू०, चं०, बु०, गु०, मं०, श०, शु०, के० इन आठ ग्रहों में से जब-जब कभी कोई धन राशि पर आवेंगे तो अपने बाहुबल के पुरषार्थिक कार्यों के द्वारा उन्नति का मार्ग पैदा करते हैं और यदि गुरुदेव, मेष, मिथुन, कर्क, सिंह, तुला, वृश्चिक, धन, कुम्भ इन आठ राशियों पर जब-जब कभी आवेंगे तब-तब कुछ अन्य विषयों के अतिरिक्त उपरोक्त विषयक फल भी प्रदान करते हैं।
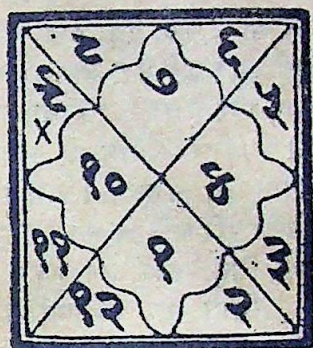
फलादेश नं० १५५

जिस-जिस समय में मकर राशि पर शनि, शुक्र, चन्द्र, बुद्ध, मंगल इन पाँच ग्रहों में से जब-जब कभी कोई आवेंगे तब-तब सुख-शान्ति की वृद्धि और मातृस्थान व भूमि, मकानादि संबंधी सुखों की प्राप्ति करते हैं और यदि शनिदेव, मकर, कर्क, मिथुन, सिंह, तुला, वृश्चिक इन ६ राशियों में से किसी भी राशि पर जब-जब कभी आवेंगे तब-तब अन्य विषयों के अतिरिक्त कुछ उपरोक्त विषयक फल भी प्रदान करते हैं।
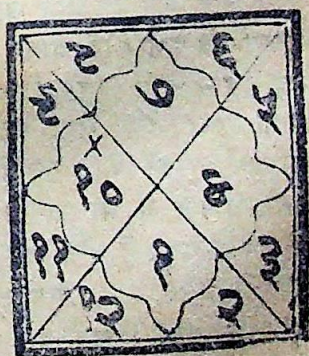
फलादेश नं० १५६

जिस-जिस समय में कुम्भ राशि पर शनि, शुक्र, बुद्ध, चन्द्र, मंगल, सूर्य इन ६ ग्रहों में से जब-जब कभी कोई आवेंगे तब-तब विद्या स्थान की व विचार शक्ति की उन्नति, संतान पक्ष का सहयोग लाभ करते हैं और यदि शनि देव, कुम्भ, मिथुन, कर्क, सिंह, तुला, धन, मकर इन ७ राशियों पर जब-जब कभी आवेंगे तब-तब भी कुछ अन्य विषयों के अतिरिक्त उपरोक्त विषयक फल प्रदान करते हैं।

फलादेश नं० १५७
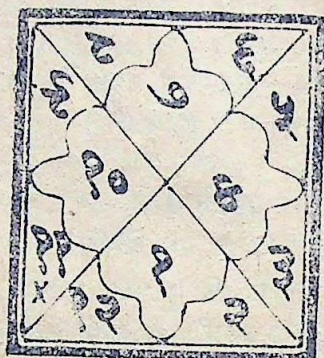
जिस-जिस समय में मीन राशि पर गुरु, शुक्र, चन्द्र, सूर्य, मंगल, शनि, राहू, केतू इन आठ ग्रहों में से जब-जब कभी कोई आवेंगे तब-तब शत्रुस्थान में विजय, दिक्कतों में कामयाबी और राहू, केतू को छोड़कर बाकी के ६ ग्रह हों तो ननसाल पक्ष में भी उन्नति का योग पैदा करते हैं और यदि गुरुदेव मीन, मेष, कर्क, सिंह, तुला, वृश्चिक, धन, मिथुन इन आठ राशियों पर जब-जब कभी आवेंगे तब-तब कुछ अन्य विषयों के अतिरिक्त उपरोक्त विषयक फल भी प्रदान करते हैं।

फलादेश नं० १५८

जिस-जिस समय में मेष राशि पर गुरु, सूर्य, चन्द्र, मंगल, बुद्ध, शुक्र इन ६ ग्रहों में से जब २ कभी कोई आवेंगे तब-तब स्त्रीस्थान में सुख सफलता व गौरव तथा दैनिक रोजगार के स्थान में लाभ, उन्नति और लावण्यता पैदा करते हैं और यदि मंगलदेव, मेष, मिथुन, मकर, सिंह, तुला, धन इन ६ राशियों पर जब २ कभी आवेंगे तब-तब कुछ अन्य विषयों के अतिरिक्त उपरोक्त विषयक फल भी प्रदान करते हैं।
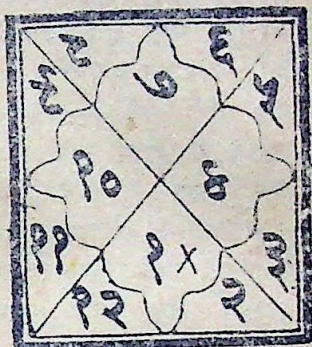
फलादेश नं० १५९

जिस-जिस समय में वृष राशि पर मंगल, शुक्र, चन्द्र, शनि, बुद्ध इन पांच ग्रहों में से जब-जब कभी कोई आवेंगे तब तब किसी पुरातत्व संबंधी वस्तु या कार्य लाभ का योग पैदा करते हैं और जीवन की दिन-चर्या में कई प्रकार की कठिनाई व रोक पैदा करते हैं और यदि शुक्रदेव वृष, मिथुन, कर्क, सिंह, वृश्चिक, तुला, धन, मकर, कुम्भ, मीन, मेष, इन ११ राशियों पर जब-जब कभी आवेंगे तब-तब कुछ अन्य विषयों को छोड़कर उपरोक्त विषयक फल भी प्रदान करते हैं।

फलादेश नं० १६०
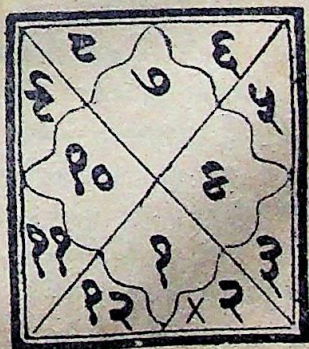
जिस-जिस समय में मिथुन राशि पर बुद्ध, चन्द्र, सूर्य, मंगल, शुक्र, शनि, राहू इन ७ ग्रहों में से जब २ कभी कोई आवेंगे तब-तब भाग्य-शक्ति के द्वारा लाभदायक और धर्म, यश व ईश्वरनिष्ठा में सहायक सिद्ध होंगे और यदि बुद्ध, देव, कर्क, सिंह, मिथुन, कन्या, तुला वृश्चिक, धन, मकर, कुम्भ, मेष, इन दस राशियों पर जब-जब कभी आवेंगे तब-तब भी कुछ अन्य विषयों के अतिरिक्त उपरोक्त विषयक फल प्रदान करते हैं।

फलादेश नं० १६१
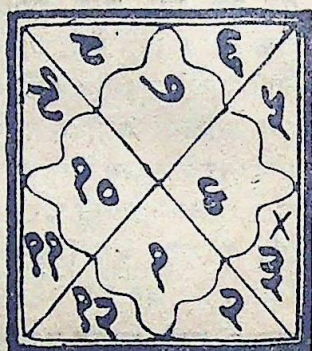
जिस-जिस समय में कर्क राशि पर सूर्य, चन्द्र, बुद्ध, गुरु, शनि, शुक्र इन ६ ग्रहों में से जब २ कभी कोई आवेंगे तब-तब राज-समाज में सम्मान, कारबार में व पिता स्थान में सफलता व उन्नति तथा मान प्रतिष्ठा एवं वैभव की वृद्धि करते हैं और यदि चन्द्रदेव, कर्क, सिंह, तुला, धन, मकर, कुम्भ, मेष, मिथुन इन आठ राशियों पर जब-जब कभी आवेंगे तब-तब भी कुछ अन्य विषयों के अतिरिक्त उपरोक्त विषयक फल भी प्रदान करते हैं।
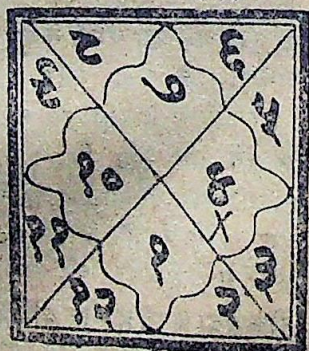
फलादेश नं० १६२

जिस-जिस समय में सिंह राशि पर सू०, चं०, बु, मं०, गु०, श०, रा०, के० इन सभी ग्रहों में से जब-जब कभी कोई आवेंगे तब-तब आमदनी के स्थान में वृद्धि करते हैं और आवश्यक पदार्थों की प्राप्ति करते हैं और यदि सूर्यदेव, सिंह, वृश्चिक, धन, कुम्भ, मेष, मिथुन, कर्क इन ७ राशियों में जब-जब कभी आवेंगे तब-तब भी कुछ अन्य विषयों के अतिरिक्त उपरोक्त विषयक फल भी प्रदान करते हैं।

फलादेश नं० १६३
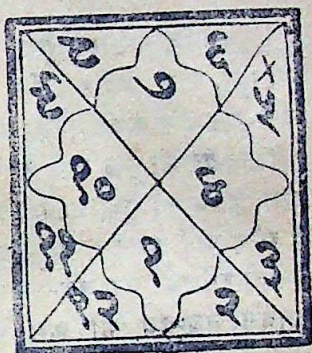
जिस-जिस समय में कन्या राशि पर बुद्ध, सूर्य, चन्द्र, मंगल, शनि इन ५ ग्रहों में से जब-जब कभी कोई आवेंगे तब-तब बाहरी दूसरे स्थानों के संबंधित संपर्क में लाभदायक व सुखद साबित होंगे तथा खर्च के स्थान में सरलता एवं वृद्धि पैदा करते हैं और यदि बुद्ध-देव, कन्या, तुला, वृश्चिक, धन, मकर, मिथुन, कुम्भ, मेष, कर्क, सिंह इन दस राशियों में जब-जब कभी आवेंगे तब-तब भी कुछ अन्य विषयों के अतिरिक्त उपरोक्त विषयक फल भी प्रदान करते हैं।
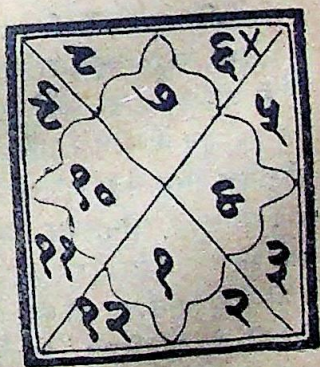
## तुला लग्नान्तर प्रतिकूल ग्रह फलम्

फलादेश नं० १६४

जिस-जिस समय तुला राशि पर सूर्य, राहू, केतू इन तीन ग्रहों में से जब-जब कभी कोई आवेंगे तब-तब देह को कुछ कष्ट व परिश्रम, हृदय को कुछ अशांति करते हैं और यदि शुक्रदेव, वृष, कन्या इन दो राशियों पर जब-जब कभी आवेंगे तब-तब भी कुछ अन्य विषयों के अतिरिक्त उपरोक्त विषयक फल भी प्रदान करते हैं।
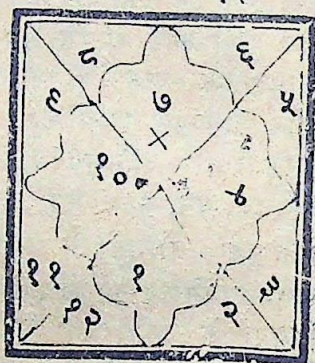
फलादेश नं० १६५

जिस-जिस समय में वृश्चिक राशि पर चन्द्र, राहू, केतू इन तीन ग्रहों में से जब-जब कभी कोई आवेंगे तब-तब धन के कोष में हानि और कौटुंबिक क्लेश पैदा करते हैं और यदि मंगलदेव, मीन, वृष, कन्या, कर्क इन चार राशियों पर जब-जब कभी आवेंगे तब-तब भी कुछ अन्य विषयों के अतिरिक्त उपरोक्त विषयक फल भी प्रदान करते हैं।
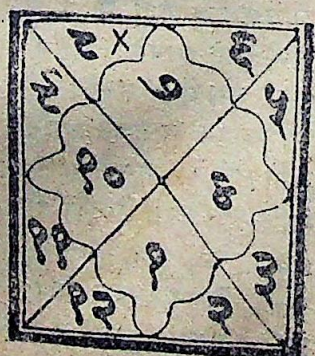
फलादेश नं० १६६

जिस-जिस समय में धन राशि पर राहूदेव आवें तो भाई बहन के स्थान में कोई चिंता, क्लेश पैदा करते हैं और बाहुबल के कार्यों में कुछ थकान व परेशानी करते हैं और यदि गुरुदेव, मीन, वृष, कन्या, मकर, वृश्चिक इन ५ राशियों में जब-जब कभी आवेंगे तब-तब भी कुछ अन्य विषयों के अतिरिक्त उपरोक्त विषयक फल भी प्रदान करते हैं।
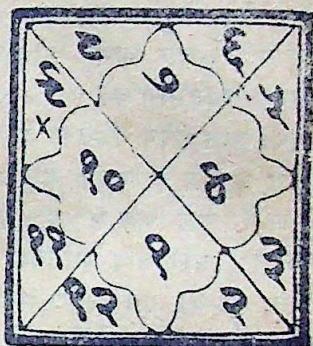
फलादेश नं० १६७

जिस-जिस समय में मकर राशि पर गुरु, राहू, केतू इन ३ ग्रहों में से जब-जब कभी कोई आवेंगे तब-तब मातृपक्ष में व मातृस्थान में व सुख-शान्ति के सम्बन्धों में तथा भूमि, मकान आदि के सम्बन्धों में अशांति का वातावरण पैदा करते हैं और यदि शनिदेव, मीन, मेष, वृष, कन्या इन ४ राशियों पर जब-जब कभी आवेंगे तब-तब भी कुछ अन्य विषयों के अतिरिक्त उपरोक्त विषयक फल भी प्रदान करते हैं।

फलादेश नं० १६८

जिस-जिस समय में कुम्भ राशि पर राहू, केतु या गुरु इन ३ ग्रहों में से जब-जब कभी कोई आवेंगे तब-तब दिमाग को कुछ परेशानी तथा ज्ञान और विवेक के अन्दर कुछ भ्रम व चालाकी और संतान पक्ष में कुछ फिक्र व अशांति पैदा करते हैं और यदि शनिदेव, मीन, मेष, कन्या इन ३ राशियों पर जब-जब कभी आवेंगे तब-तब भी कुछ अन्य विषयों के अतिरिक्त उपरोक्त विषयक फल भी प्रदान करते हैं।

फलादेश नं० १६९

जिस-जिस समय में मीन राशि पर बुद्धदेव आवेंगे तब-तब शत्रु-स्थान में कुछ परेशानी तथा भय प्रतीत करते हैं और ननसाल पक्ष में कुछ कमजोरी पैदा करते हैं और यदि गुरुदेव, वृष, कन्या, मकर, इन ३ राशियों पर जब-जब कभी आवेंगे तब-तब कुछ अन्य विषयों के अतिरिक्त उपरोक्त विषयक फल भी प्रदान करते हैं।
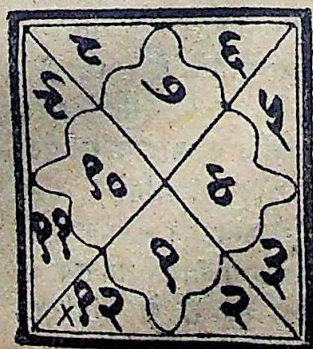
फलादेश नं० १७०

जिस-जिस समय में मेष राशि पर शनि, राहू, केतु, इन ३ ग्रहों में से जब-जब कभी कोई आवेंगे तब-तब स्त्री स्थान में क्लेश व अशान्ति तथा दैनिक रोजगार में कुछ कमी व परेशानी पैदा करते हैं और यदि मंगलदेव, कर्क, कन्या, वृश्चिक, मीन इन चार राशियों पर जब-जब कभी आवेंगे तब-तब कुछ अन्य विषयों के अतिरिक्त उपरोक्त विषयक फल भी प्रदान करते हैं।

फलदेश नं १७१

जिस-जिस समय में वृष राशि पर राहू, केतु, गुरु इन तीन ग्रहों में से जब-जब कभी कोई अवेंगे तब-तब पूर्व संचित धरोहर की या किसी पुरातत्व वस्तु की कुछ हानि तथा उदर का कुछ विकार और दिन-चर्या में कुछ अशांति पैदा करते हैं और यदि शुक्रदेव कन्या राशि पर जब-जब कभी आवेंगे तब-तब कुछ अन्य विषयों के अतिरिक्त उपरोक्त विषयक फल भी प्रदान करते हैं।

फलादेश नं० १७२

जिस-जस समय में मिथुन राशि पर केतूदेव आवेंगे तब-तब भाग्य में बड़ी-बड़ी चिंतायें पैदा करते हैं और यश-धर्म व ईश्वर भक्ति में कमी करते हैं और गुरु, मिथुन पर आवें तो भी कुछ भाग्य में थोड़ा सा झंझट पैदा करते हैं और यदि बुद्धदेव, मीन या वृष राशि पर जब-जब कभी आवेंगे तब-तब भी कुछ अ विषयों के अतिरिक्त उपरोक्त विषयक फल भी प्रदान करते हैं।
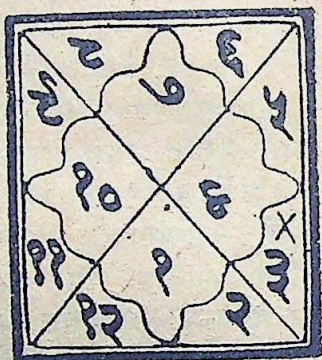
फलादेश नं० १७३

जिस-जिस समय में कर्क राशि पर राहू, केतू, मंगल इन ३ ग्रहों में से जब-जब कभी कोई आवेंगे तब-तब पिता स्थान में व व्यापार के सम्बन्ध में व राज-समाज के सम्बन्ध में व मान, प्रतिष्ठा, गौरव आदि के सम्बन्ध में हानि, कमी व अशांति पैदा करते हैं और यदि चन्द्रदेव, कन्या, वृश्चिक इन दो राशियों पर जब-जब कभी आवेंगे तब-तब भी कुछ अन्य विषयों के अतिरिक्त उपरोक्त विषयक फल भी प्रदान करते हैं।
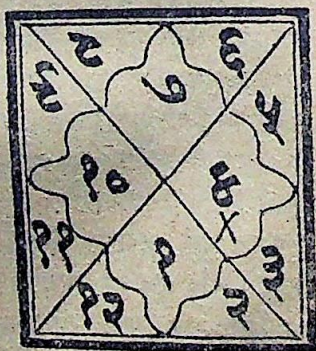
फलादेश नं० १७४

जिस-जिस समय में सिंह राशि पर राहू या केतू जब-जब कभी आवेंगे तब-तब आमदनी के स्थान में कुछ प्रपंच व कुछ दिक्कतें मामूली तौर से महसूस करते हैं और आवश्यक पदार्थों की प्राप्ति में भी कुछ अड़चनें महसूस होती हैं और यदि सूर्यदेव, कन्या, तुला, वृष, मीन इन चार राशियों पर जब-जब कभी आवेंगे तब-तब भी कुछ अन्य विषयों के अतिरिक्त उपरोक्त विषयक फल भी प्रदान करते हैं।

फलादेश नं० १७५

जिस-जिस समय में कन्या राशि पर शुक्र, राहू, केतू इन ३ ग्रहों में से जब-जब कभी कोई आवेंगे तब-तब खर्च के स्थान में कुछ दिक्कतें व बाहरी दूसरे स्थानों के संबंधित संपर्क में कुछ परेशानियाँ पैदा करते हैं और यदि बुद्धदेव, मीन, वृष, इन दो राशियों पर जब-जब कभी आवेंगे तब-तब भी कुछ अन्य विषयों के अतिरिक्त उपरोक्त विषयक फल भी प्रदान करते हैं।
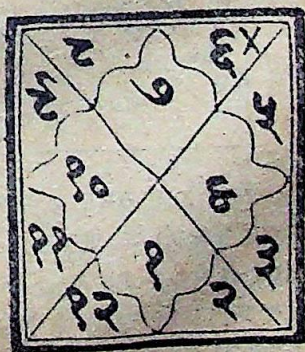
# वृश्चिक लग्नान्तर भाग्योदय कारक नवग्रह व समय फल

## वृश्चिक लग्न फलादेश नं० १७६
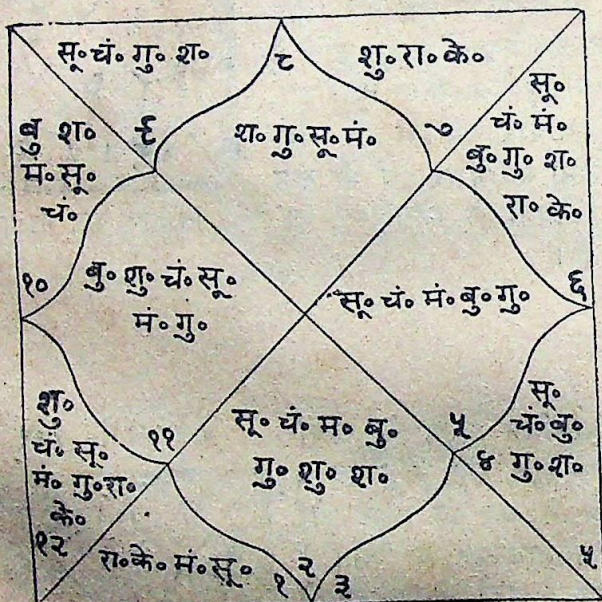
जिस-जिस समय में वृश्चिक लग्न वाले प्राणियों को ऊपर स्थित कुण्डली के अनुसार यह नवग्रह पंचांग गति की गोचर प्रणाली से जब-जब कभी एक ही समय में, प्राय: सभी ग्रह इस-इस प्रकार की राशियों में आवेंगे तब-तब ही इस लग्न वाले प्राणियों का भाग्योदय विविध प्रकार से होता रहेगा—यानी

सू०—वृश्चिक, धन, मकर, कुम्भ, मीन, मेष, वृ सिंह, कन्या इन-इन राशियों पर कहीं भी हों।

चं०—धन, मकर, कुम्भ, मीन, वृष, कर्क, सिंह, कन्या इन-इन राशियों पर कहीं भी हों।

मं०—वृश्चिक, मकर, कुम्भ, मीन, मेष, वृष, सिंह, कन्या इन-इन राशियों पर कहीं भी हों।

बु०—मकर, कुम्भ, वृष, कर्क, सिंह, कन्या इन-इन राशियों पर कहीं भी हों।

गु०—वृश्चिक, धन, मीन, वृष, कर्क, सिंह, कन्या इन-इन राशियों पर कहीं भी हों।

शु०—कुम्भ, मीन, वृष तुला, इन-इन राशियों पर कहीं भी हों।

श०—वृश्चिक, धन, मकर, कुम्भ, वृष, कर्क, कन्या इन-इन राशियों पर कहीं भी हों।

रा—मेष, तुला, कन्या, मीन इन-इन राशियों पर कहीं भी हों।

के०—मेष, तुला, कन्या, मीन, इन-इन राशियों पर कहीं भी हों।

अर्थात्—जिस-जिस साल, मास, पक्ष एवं दिनों में यह नवग्रह उपरोक्त-उपरोक्त राशियों में एक ही समय में जब-जब आवेंगे तब-तब ही भाग्यकारक व लाभकारक सिद्ध होंगे, किन्तु कोई भी ग्रह सूर्य से अस्त नहीं होना चाहिए क्योंकि उसका फल मान्य नहीं होगा।

## वृश्चिक लग्नान्तर अनुकूल ग्रह फलम

फलादेश नं० १७७

जिस-जिस समय में वृश्चिक राशि पर सूर्य, गुरु, शनि, मंगल बुद्ध इन पाँच ग्रहों में से जब-जब कभी कोई आवेंगे तब-तब देह को मान-सम्मान, लाभ-सुख आदि की प्राप्ति करते हैं और यदि मंगलदेव, वृश्चिक, मकर, कुम्भ, मीन, मेष वृष, सिंह, कन्या इन आठ राशियों पर जब-जब कभी आवेंगे तब-तब भी कुछ अन्य विषयों के अतिरिक्त उपरोक्त विषयक फल भी प्रदान करते हैं।
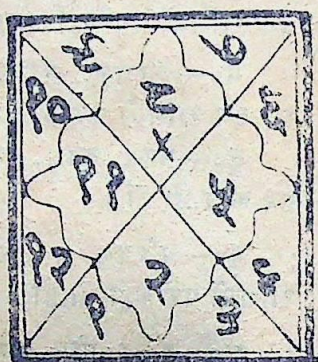
फलादेश नं० १७८

जिस-जिस समय में धन राशि पर गुरु, शनि, सूर्य, चन्द्र इन चार ग्रहों में से जब-जब कभी कोई आवेंगे तब-तब धन की वृद्धि व कौटुम्बिक विकास करते हैं और यदि गुरुदेव, धन, मीन, मेष, वृष, कर्क, सिंह, कन्या, वृश्चिक इन आठ राशियों पर जब-जब कभी आवेंगे तब-तब कुछ अन्य विषयों के अतिरिक्त उपरोक्त विषयक फल भी प्रदान करते हैं।

फलादेश न० १७९
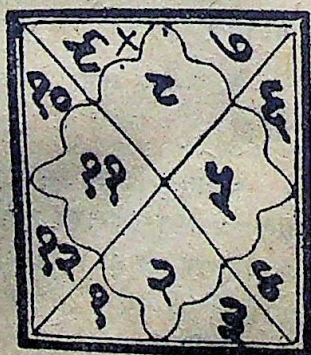
जिस-जिस समय में मकर राशि पर शनि, मंगल, चन्द्र, सूर्य, बुद्ध इन ५ ग्रहों में से जब-जब कभी कोई आवेंगे तब-तब भाई बहन के स्थान सम्बन्ध में व बाहुबल के द्वारा किये गये कार्यों के सम्बन्ध में सफलता व उन्नति का मार्ग पैदा करते हैं और यदि शनिदेव, मकर, कुम्भ, वृष, कर्क, सिंह, कन्या, तुला, वृश्चिक इन ८ राशियों पर जब-जब कभी आवेंगे तब-तब कुछ अन्य विषयों के अतिरिक्त उपरोक्त विषयक फल भी प्रदान करते हैं।
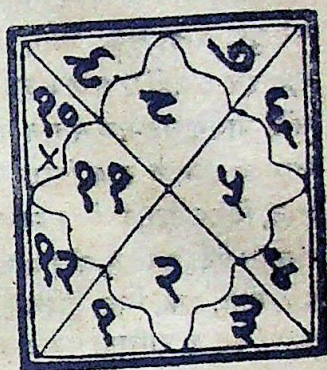
फलादेश न० १८०

जिस-जिस समय में कुम्भ राशि पर शनि, चन्द्र, मंगल, सूर्य, बुद्ध इन ५ ग्रहों में से जब-जब कभी कोई आवेंगे तब-तब मातृस्थान में व सुख सम्बन्ध में व मकान-जायदाद, भूमि सम्बन्ध में सहायक, लाभप्रद कार्य करते हैं और यदि शनिदेव, वृष, कर्क, सिंह, कन्या, वृश्चिक, मकर, धन, कुम्भ इन ८ राशियों पर जब-जब कभी आवेंगे तब-तब कुछ अन्य विषयों के अतिरिक्त उपरोक्त विषयक फल भी प्रदान करते हैं।
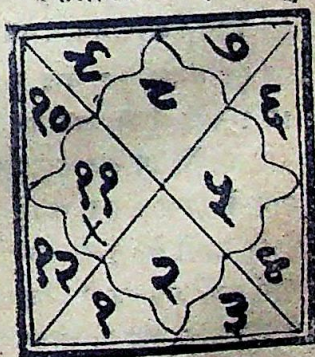
फलादेश नं० १८१

जिस-जिस समय में मीन राशि पर गुरु, चन्द्र, सूर्य, शनि, मंगल, शुक्र इन ६ ग्रहों में से जब-जब कभी कोई आवेंगे तब-तब संतान पक्ष में लाभ व आनन्द तथा विद्या, बुद्धि, ज्ञान, विवेक आदि के सम्बन्ध में उन्नति पैदा करते हैं और यदि गुरु-देव, मीन, कर्क, सिंह, वृश्चिक, धन कन्या इन ६ राशियों पर जब-जब कभी आवेंगे तब-तब कुछ अन्य विषयों के अतिरिक्त उपरोक्त विषयक फल भी प्रदान करते हैं।

फलादेश नं० १८२
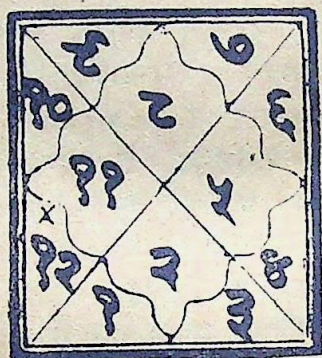
जिस-जिस समय में मेष राशि पर गुरु, मंगल, सूर्य, चन्द्र, राहू, केतू इन ६ ग्रहों में से जब-जब कभी कोई आवेंगे तब-तब कुछ परिश्रमी मार्ग के द्वारा व कुछ झगड़े-झंझट तलब कार्यों के द्वारा उन्नति का मार्ग तथा शत्रुपक्ष में विजय करते हैं और राहू, केतू को छोड़कर ननसाल पक्ष में वृद्धियोग उत्पन्न करते हैं और यदि मंगलदेव, मेष, वृष, सिंह, कन्या, वृश्चिक, मकर इन ६ राशियों पर जब-जब कभी आवेंगे तब-तब भी कुछ अन्य विषयों के अतिरिक्त उपरोक्त विषयक फल भी प्रदान करते हैं।

फलादेश नं० १८३

जिस-जिस समय में वृष राशि पर चन्द्र, गुरु, शनि, इन ३ ग्रहों में से जब २ कभी कोई आवेंगे तब २ दैनिक रोजगार के स्थान में वृद्धि और लाभ तथा स्त्री पक्ष में सुख व चमत्कार पैदा करते हैं और यदि शुक्रदेव, कर्क, सिंह, वृश्चिक, कुम्भ, मकर, मीन इन ६ राशियों पर जब २ कभी आवेंगे तब-तब कुछ अन्य विषयों के अतिरिक्त उपरोक्त विषयक फल भी प्रदान करते हैं।

फलादेश नं० १८४

जिस-जिस समय में मिथुन राशि पर चन्द्र, सूर्य, बुद्ध, गुरु, राहू इन ५ ग्रहों में से जब-जब कभी कोई आवेंगे तब-तब कुछ दिक्कतों के जरिये से किसी पुरातत्व वस्तु का लाभ और दूसरे स्थानों में प्रभाव की जागृति व जीवन को सहायक होने वाला कार्य मार्ग पैदा करते हैं और यदि बुद्धदेव, मिथुन, कर्क, सिंह, कन्या, वृश्चिक, धन, मकर, कुम्भ, वृष इन नौ राशियों पर जब-जब कभी आवेंगे तब-तब कुछ अन्य विषयों के अतिरिक्त उपरोक्त विषयक फल भी प्रदान करते हैं।

फलादेश नं० १८५

जिस-जिस समय में कर्क राशि पर चन्द्र, सूर्य, गुरु, शनि, इन चार ग्रहों में से जब-जब कभी कोई आवेंगे तब २ भाग्य की वृद्धि, धर्म और यश की प्राप्ति व कुदरती सफलताओं का योग पैदा करते हैं और यदि चन्द्रदेव, कर्क, सिंह, कन्या, धन, मकर, कुम्भ, मीन, वृष इन ८ राशि में जब-जब कभी आवेंगे तब २ कुछ अन्य विषयों के अतिरिक्त उपरोक्त विषयक फल भी प्रदान करते हैं।

फलादेश नं० १८६
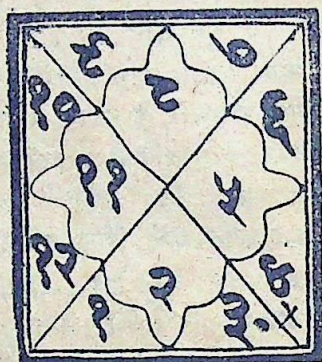
जिस-जिस समय में सिंह राशि पर चन्द्र, सूर्य, मंगल, गुरु, इन ४ ग्रहों में से जब २ कभी कोई आवेंगे तब २ कारबार के संबंध में व राज-समाज, मान-प्रतिष्ठा के सम्बंध में तथा पिता स्थान के संबंध में लाभ प्राप्ति एवं सहायक योग प्रदान करते हैं और यदि सूर्यदेव, सिंह, कन्या, वृश्चिक, धन, मकर, कुम्भ, मीन, मेष, वृष, कर्क इन दस राशियों पर जब-जब कभी आवेंगे तब-तब कुछ अन्य विषयों के अतिरिक्त उपरोक्त विषयक फल भी प्रदान करते हैं।

फलादेश नं० १८७

जिस-जिस समय में कन्या राशि पर सू०, चं०, मं०, बु०, गु०, श०, रा०, के० इन ८ ग्रहों में से जब-जब कभी कोई आवेंगे तब-तब आमदनी के स्थान में वृद्धि तथा आवश्यक वस्तुओं के लाभ संबंध में सफलता प्रदान करते हैं और यदि बुद्धदेव. कन्या, वृश्चिक, धन, मकर, कुम्भ वृष, कर्क, सिंह इन ८ राशियों पर जब-जब कभी आवेंगे तब-तब कुछ अन्य विषयों के अतिरिक्त उपरोक्त विषयक फल भी प्रदान करते हैं।

फलादेश नं० १८८

जिस-जिस समय में तुला राशि पर शुक्र, बुद्ध, चंद्र, मंगल, गुरु, शनि इन ६ ग्रहों में से जब-जब कभी कोई आवेंगे तब-तब खर्च के सम्बंध में सहूलियत तथा अधिकता और बाहरी दूसरे स्थानों के संबंधित संपर्क में लाभप्रद सहयोग प्रदान करते हैं और यदि शुक्रदेव, मकर, तुला, वृश्चिक, धन, कुम्भ, मीन, वृष, कर्क, सिंह इन ९ राशियों पर जब-जब कभी आवेंगे तब-तब कुछ अन्य विषयों के अतिरिक्त उपरोक्त विषयक फल भी प्रदान करते हैं।

## वृश्चिक लग्नान्तर प्रतिकूल ग्रह फलम

फलादेश नं० १८९

जिस-जिस समय में वृश्चिक राशि पर शुक्र, चंद्र, राहू, केतू इन ४ ग्रहों में से जब-जब कोई आवेंगे तब-तब देह को दुर्बलता, कमजोरी व अशांती तथा हृदय को चिंता पैदा करते हैं और यदि मंगजदेव, कर्क, मिथुन, तुला इन ३ राशियों पर जब जब-कभी आवेंगे तब-तब अन्य विषयों के अतिरिक्त उपरोक्त विषयक फलभी प्रदान करते हैं।
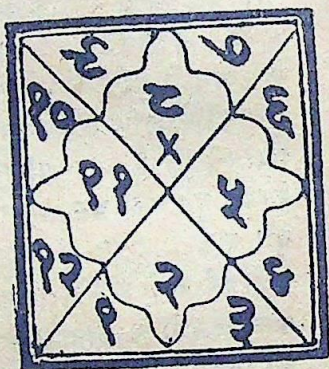
फलादेश नं० १९०

जिस-जिस समय में धन राशि पर शुक्र या राहू इन दो ग्रहों में से जब-जब कभी कोई आवेंगे तब तब धन के कोष की हानि और कोटुम्बिक क्लेश पैदा करते हैं और यदि गुरुदेव, मकर, मिथुन, तुला इन ३ राशियों पर जब-जब आवेंगे तब-तब कुछ अन्य विषयों के अतिरिक्त उपरोक्त विषयक फल भी प्रदान करते है।

फलादेश नं० १९१

जिस-जिस समय में मकर राशि पर गुरु, शुक्र, राहू, केतू इन चार ग्रहों में से जब-जब कोई आवेंगे तब-तब बहन भाइयों के सम्बन्ध में कुछ अशांति व क्लेश तथा बाहु-बल के कार्यों में कमजोरी व थकान पैदा करते हैं और यदि शनिदेव, मेष, मिथुन इन २ राशियों पर जब-जब आवेंगे तब-तब कुछ अन्य विष-यों के अतिरिक्त उपरोक्त विषयक फल भी प्रदान करते हैं।

फलादेश नं० १९२

जिस-जिस समय में कुम्भ राशि पर शुक्र, राहू, केतू इन ३ ग्रहों में से जब-जब कभी कोई आवेंगे तब-तब मातृस्थान में व सुख प्राप्ति के सम्बन्ध में तथा मकान, जायदाद के सम्बन्ध में कुछ कमी व अशांति करते हैं और यदि शनिदेव, मेष, मिथुन इन दो राशियों पर जब-जब कभी आवेंगे तब-तब कुछ अन्य विषयों के अतिरिक्त उपरोक्त विषयक फल भी प्रदान करते हैं।
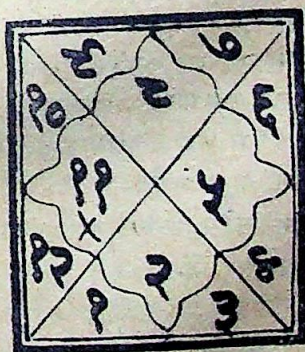
फलादेश नं० १३६

जिस-जिस समय में मीन राशि पर बुद्ध, राहू, केतू इन तीन ग्रहों में से जब २ कभी कोई आवेंगे तब-तब विद्या बुद्धि और ज्ञान के मार्ग में कुछ कमी पैदा करते हैं और सन्तान पक्ष में अशांति पैदा करते हैं और यदि गुरुदेव, मेष, मिथुन मकर, तुला इन ४ राशियों पर जब-जब कभी आवेंगे तब-तब कुछ अन्य विषयों के अतिरिक्त उपरोक्त विषयक फल भी प्रदान करते हैं।
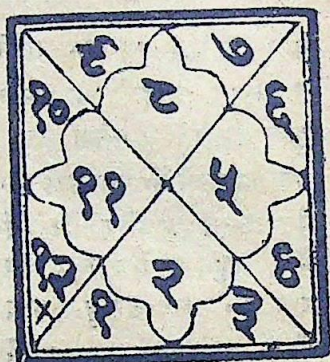
फलादेश नं० १६४

जिस-जिस समय में मेष राशि पर शनि, शुक्र, बुद्ध इन ३ ग्रहों में से जब-जब कभी कोई आवेंगे तब-तब कुछ झगड़े-झंझटतलब मामलों में कुछ परिश्रम व कुछ परेशानी का योग पैदा करते हैं और यदि मंगलदेव, मिथुन, कर्क, तुला इन ३ राशियों में जब-जब कभी आवेंगे तब-तब कुछ अन्य विषयों के अतिरिक्त उपरोक्त विषयक फल प्रदान करते हैं।
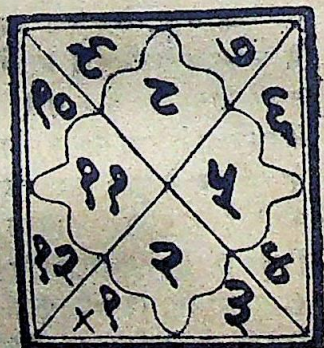
फलादेश नं० १९५

जिस-जिस समय में वृष राशि पर राहू, केतू, मंगल शुक्र, बुद्ध इन पांच ग्रहों में से जब-जब कभी कोई आवेंगे तब-तब दैनिक रोजगार व स्त्री पक्ष में थोड़ी-थोड़ी दिक्कतें पैदा करते हैं और यदि शुक्रदेव, मिथुन, कन्या, तुला, धन, मेष इन पाँच राशियों पर जब-जब कभी आवेंगे तब-तब कुछ अन्य विषयों के अतिरिक्त उपरोक्त विषयक फल भी प्रदान करते हैं।

फलादेश नं० १९६

जिस-जिस समय में मिथुन राशि पर शुक्र या केतू इन दो ग्रहों में से जब-जब कभी कोई आवेंगे तब-तब कुछ पुरातत्व सम्बन्धी किसी वस्तु की चिंता या हानि करते हैं और उदर का कुछ विकार व जीवन में कुछ अशांति पैदा करते हैं और यदि बुद्धदेव, तुला, मीन, मेष इन तीन राशियों पर जब-जब कभी आवेंगे तब-तब कुछ अन्य विषयों के अतिरिक्त उपरोक्त विषयक फल भी प्रदान करते हैं।
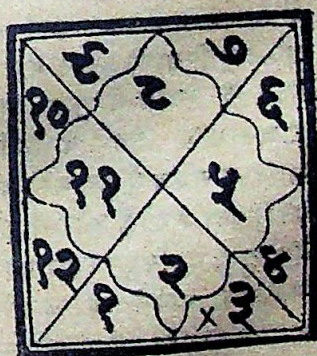
फलादेश नं० १९७

जिस-जिस समय में कर्क राशि पर शुक्र, मंगल, राहू, केतू इन ४ ग्रहों में से जब-जब कभी कोई आवेंगे तब-तब भाग्यस्थान में कुछ चिन्ता व कमजोरी तथा धर्म और ईश्वरनिष्ठा में कुछ अरुचि व कमी पैदा करते हैं और यदि चन्द्रदेव, तुला, वृश्चिक, मेष, मिथुन इन चार राशियों पर जब-जब कभी आवेंगे तब-तब भी कुछ अन्य विषयों के अतिरिक्त उपरोक्त विषयक फल भी प्रदान करते हैं।
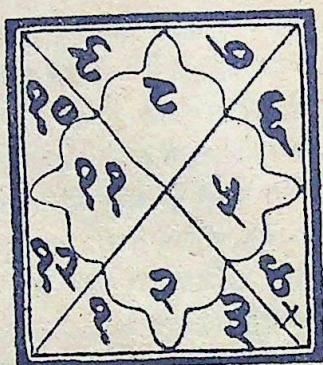
फलादेश नं० १९८

जिस-जिस समय में सिंह राशि पर शुक्र, राहू, केतू इन तीन ग्रहों में से जब-जब कभी कोई आवेंगे तब-तब पिता के स्थान में व कारबार के स्थान में कुछ हानि व राज-समाज एवं मान-प्रतिष्ठा आदि के संबंध में कुछ कमी व परेशानी पैदा करते हैं और यदि सूर्यदेव, तुला या मिथुन राशि पर जब-जब कभी आवेंगे तब-तब भी कुछ अन्य विषयों के अतिरिक्त उपरोक्त विषयक फल भी प्रदान करते हैं।

फलादेश नं० १९९

जिस-जिस समय में कन्या राशि पर शुक्रदेव आवेंगे तब-तब धन लाभ के स्थान में व आवश्यक वस्तुओं के लाभ के स्थान में कमी पैदा करते हैं और यदि बुद्धदेव, मिथुन, तुला, मीन, मेष इन चार राशियों पर जब-जब कभी आवेंगे तब-तब कुछ अन्य विषयों के अतिरिक्त उपरोक्त विषयक फल भी प्रदान करते हैं।
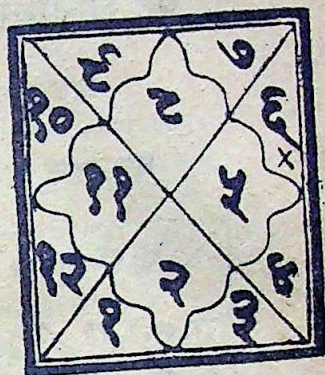
फलादेश नं० २००

जिस-जिस समय में तुला राशि पर सूर्य, राहू, केतू इन तीन ग्रहों में से जब-जब कभी कोई आवें तब-तब खर्च के स्थान में कुछ परेशानी व दिक्कत और बाहरी दूसरे स्थानों के संबंध में कुछ अड़चनें व फिक्र का संपर्क योग बनाते हैं और यदि शुक्रदेव, मेष, मिथुन, कन्या इन तीन राशियों पर जब-जब कभी आवेंगे तब-तब कुछ अन्य विषयों के अतिरिक्त उपरोक्त विषयक फल प्रदान करते हैं।

# धन लग्नान्तर भाग्योदय कारक, नवग्रह व समय फल

## धन लग्न फलादेश नम्बर २०१
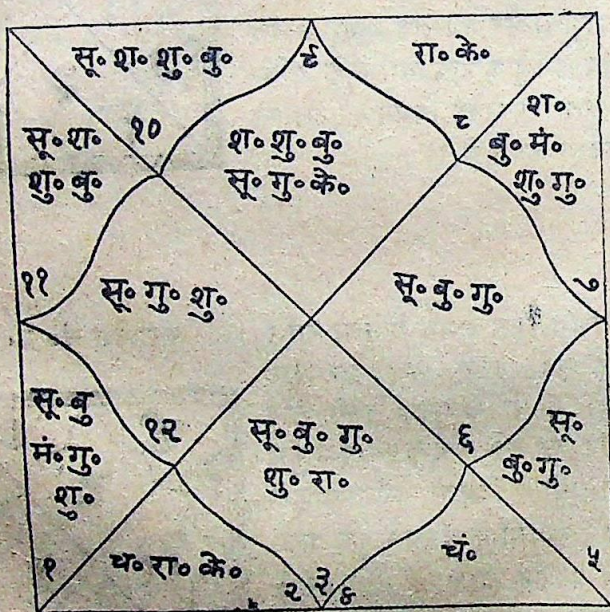
जिस-जिस समय में धन लग्न वाले प्राणियों को ऊपर स्थित कुण्डली के अनुसार यह नवग्रह पंचांग गति की गोचर प्रणाली से जब-जब कभी एक ही समय में प्रायः सभी ग्रह इस प्रकार की राशियों में आवेंगे तब-तब ही इस लग्न वाले प्राणियों का भाग्योदय विविध रूप से होता रहेगा—यानी

सू०—धन, मकर, कुम्भ, मीन, मेष, मिथुन, सिंह, कन्या इन राशियों पर कहीं भी हों।

चं०—वृष, कर्क इन दो राशियों पर कहीं भी हों।

मं०—मेष, तुला इन दो राशियों पर कहीं भी हों।

बु०—धन, मकर, कुम्भ, मेष, मिथुन, सिंह, कन्या, तुला इन राशियों पर कहीं भी हों।

गु०—धन, मीन, मेष, मिथुन, सिंह, कन्या, तुला इन राशियों पर कहीं भी हों।

शु०—धन, मकर, कुम्भ, मीन, मेष, मिथुन, सिंह, तुला इन राशियों पर कहीं भी हो।

श०—धन, मकर, कुम्भ, तुला इन राशियों पर कहीं भी हों।

रा०—वृष, वृश्चिक, मिथुन इन राशियों पर कहीं भी हों।

के०—वृष, वृश्चिक, धन इन राशियों पर कहीं भी हों।

अर्थात्—जिस-जिस साल, मास, पक्ष व दिनों में यह नवग्रह उपरोक्त २ राशियों में एक ही साथ जब-जब कभी आवेंगे तब-तब ही भाग्यकारक; लाभकारक, सुखकारक, साबित होंगे किन्तु कोई भी ग्रह सूर्य से अस्त नहीं होना चाहिये क्योंकि उसका फल मान्य नहीं है।

फलादेश नं० २०२

जिस-जिस समय में धन राशि पर गुरु, सूर्य, बुद्ध, शनि, शुक्र इन पाँच ग्रहों में से जब-जब कभी कोई आवेंगे तब-तब देह को सम्मान सुख व यश गौरव आदि में सफलता की शक्ति प्रदान करते हैं और यदि गुरुदेव, धन, कुम्भ, मीन, मिथुन, मेष, सिंह, कन्या, तुला इन आठ राशियों पर जब-जब कभी आवेंगे तब-तब कुछ अन्य विषयों के अतिरिक्त उपरोक्त विषयक फल प्रदान करते हैं ।
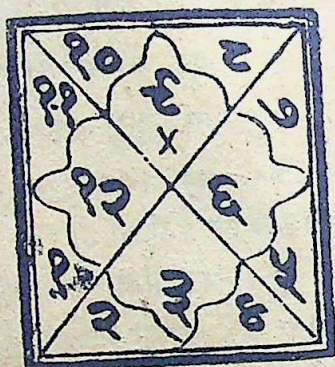
फलादेश नं० २०३

जिस-जिस समय में मकर राशि पर शनि, शुक्र, बुद्ध, सूर्य इन चार ग्रहों में से जब-जब कभी कोई आवेंगे तब-तब धन की वृद्धि व सफलता और कौटुम्बिक सुख प्रदान करते हैं और यदि शनिदेव, मकर, कुम्भ, कन्या, मिथुन, सिंह, धन इन ७ राशियों पर जब-जब कभी आवेंगे तब-तब भी कुछ अन्य विषयों के अतिरिक्त उपरोक्त विषयक फल प्रदान करते हैं ।

फलादेश नं० २०४

जिस-जिस समय में कुम्भ राशि पर शनि, शुक्र, बुद्ध, सूर्य, गुरु इन पाँच ग्रहों में से जब-जब कोई आवेंगे तब-तब बाहुबल के कार्यों में सफलता व वृद्धि और भाई-बहन के स्थान में लाभ-सहयोग को प्राप्ति करते हैं और राहू या केतू दोनों में से कोई भी जब-जब कुम्भ राशि पर आवें तो केवल पराक्रम की सफलता करते हैं और यदि शनिदेव, वृष, सिंह, धन, मिथुन, कन्या, तुला इन ६ राशियों पर जब-जब कभी आवेंगे तब-तब कुछ अन्य विषयों के अतिरिक्त उपरोक्त विषयक फल भी प्रदान करते हैं।

फलादेश नं० २०५

जिस-जिस समय में मीन राशि पर गुरु, शुक्र, सूर्य इन तीन ग्रहों में से जब-जब कभी कोई आवेंगे तब-तब मातृस्थान में व भूमि मकानादि के संबंध में सुख प्राप्ति के साधनों में वृद्धि एवं अनुकूल सहयोग प्रदान करते हैं और यदि गुरुदेव, मीन, मेष, मिथुन, कर्क, सिंह, कन्या, तुला, धन इन आठ राशियों पर जब-जब कभी आवेंगे तब-तब कुछ अन्य विषयों के अतिरिक्त उपरोक्त विषयक फल भी प्रदान करते हैं।
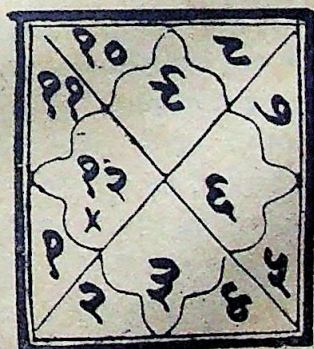
फलादेश नं० २०६

जिस-जिस समय में मेष राशि पर गुरु, सूर्य, शुक्र, बुद्ध इन ४ ग्रहों में से जब-जब कभी कोई आवेंगे तब-तब सन्तान पक्ष में सुख, लाभ की वृद्धि करते हैं और विद्या, ज्ञान विवेक, वाणी की कला आदि बातों की उन्नति करते हैं और यदि मंगलदेव, मिथुन, सिंह, कन्या, तुला, मकर, धन, कुम्भ, मीन, मेष इन नौ राशियों पर जब-जब कभी आवेंगे तब-तब कुछ अन्य विषयों के अतिरिक्त उपरोक्त विषयक फल भी प्रदान करते हैं।

फलादेश नं० २०७
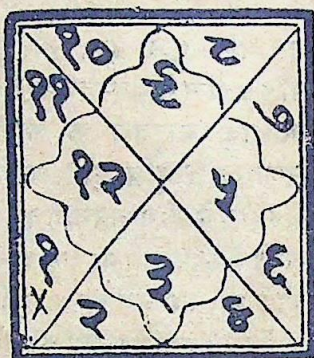
जिस-जिस समय में वृष राशि पर शुक्र, शनि, सूर्य, बुद्ध, चन्द्र, गुरु इन ६ ग्रहों में से जब-जब कभी कोई आवेंगे तब-तब कुछ दिक्कतों के साथ शत्रु स्थान में व प्रभाव के संबंध में कामयाबी देते हैं और ननसाल पक्ष में उन्नति करते हैं और राहू, केतू, वृष पर आवें तो ननसाल पक्ष को हानि तथा शत्रुपक्ष में विजय करते हैं और यदि शुक्रदेव, मिथुन, सिंह, तुला धन, मकर, कुम्भ, मीन, मेष, वृष इन नौ राशियों पर जब-जब कभी आवेंगे तब-तब कुछ अन्य विषयों के अतिरिक्त उपरोक्त विषयक फल भी प्रदान करते हैं।
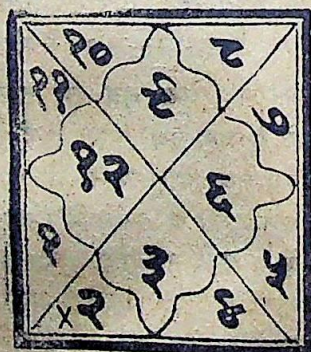
फलादेश नं० २०८

जिस-जिस समय में मिथुन राशि पर बुद्ध, सूर्य, शुक्र, गुरु, शनि, राहू इन ६ ग्रहों में से जब-जब कभी कोई आवेंगे तब-तब दैनिक रोजगार की लाइन में फायदा व तरक्की करते हैं और स्त्री स्थान में प्रभाव व ऐश्वर्य देते हैं और यदि बुद्धदेव, सिंह, कन्या, तुला, धन, कुम्भ, मेष, मिथुन इन सात राशियों पर जब-जब कभी आवेंगे तब-तब कुछ अन्य विषयों के अतिरिक्त उपरोक्त विषयक फल भी प्रदान करते हैं।
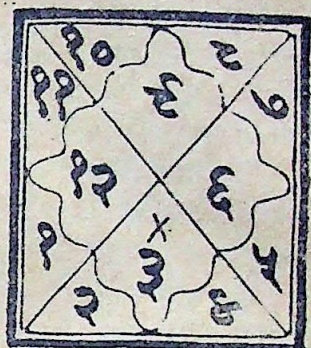
फलादेश नं० २०९

जिस-जिस समय में कर्क राशि पर गुरु, सूर्य, बुद्ध, शनि, शुक्र, चन्द्र, इन छः ग्रहों में से जब-जब कभी कोई आवेंगे तब-तब कुछ दिक्कतों के साथ पुरातत्व सम्बन्धी किसी प्रकार का लाभ व जिंदगी के लिए कुछ सहारा पैदा करते हैं और यदि चन्द्रदेव, सिंह, कन्या, तुला, धन, मकर, कुम्भ, मीन, मेष, मिथुन, वृष, कर्क इन ११ राशियों में जब-जब कभी आवेंगे, तब-तब कुछ अन्य विषयों के अतिरिक्त उपरोक्त विषयक फल भी प्रदान करते हैं।

फलादेश नं० २१०
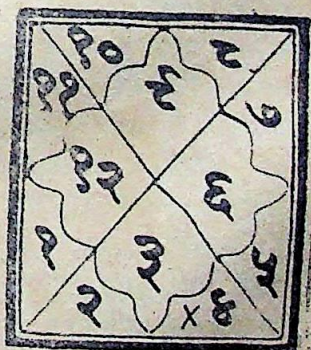
जिस-जिस समय में सिंह राशि पर गुरु, सूर्य, बुद्ध, शनि, शुक्र, चन्द्र इन छः ग्रहों में से जब-जब कभी कोई आवेंगे तब-तब भाग्य स्थान की उन्नति व दैवयोग के द्वारा लाभ प्राप्ति के साधन तथा धर्म और ईश्वर के प्रति श्रद्धा, सहयोग व यश की प्राप्ति करते हैं और यदि सूर्यदेव, कन्या, धन, कुम्भ, मीन, मेष, मिथुन, सिंह इन ७ राशियों पर जब-जब कभी आवेंगे तब-तब कुछ अन्य विषयों के अतिरिक्त उपरोक्त विषयक फल भी प्रदान करते हैं।
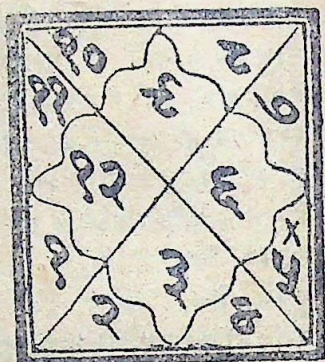
फलादेश नं० २११

जिस-जिस समय में कन्या राशि पर सूर्य, बुद्ध, गुरु, शनि इन चार राशियों पर जब-जब कभी आवेंगे तब-तब पिता स्थान में व कारबार के स्थान में तथा राजसमाज व मान-प्रतिष्ठा आदि के सन्बन्ध में तरक्की एवं सफलता प्रदान करते हैं और यदि बुद्धदेव, तुला, धन, मकर, मेष, कुम्भ, मिथुन, सिंह, कन्या इन ८ राशियों पर जब-जब कभी आवेंगे तब-तब कुछ अन्य विषयों के अतिरिक्त उपरोक्त विषयक फल भी प्रदान करते हैं।
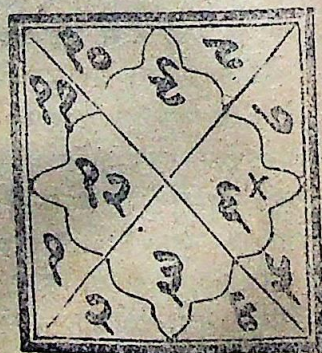
फलादेश नं० २१२

जिस-जिस समय में तुला राशि पर शुक्र, बुद्ध, शनि गुरु, मंगल, राहू, केतू, इन ७ ग्रहों में से जब-जब कभी कोई आवेंगे तब-तब धन लाभ की प्राप्ति एवं आवश्यकताओं की पूर्ति के संबंध में उन्नति प्राप्त करते हैं और यदि शुक्रदेव, धन, मकर, कुम्भ, मीन, मेष, मिथुन, सिंह, तुला इन आठ राशियों पर जब-जब कभी आवेंगे तब-तब कुछ अन्य विषयों के अतरिक्त उपरोक्त विषयक फल भी प्रदान करते हैं।
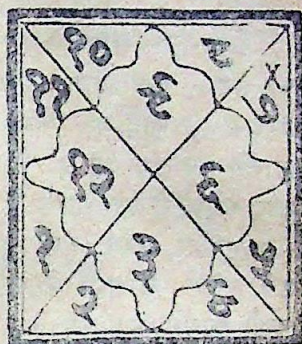
फलादेश नं० २१३

जिस-जिस समय में वृश्चिक राशि पर शुक्र, मंगल, गुरु, शनि, सूर्य, बुद्ध इन ६ ग्रहों में से जब-जब कभी कोई आवेंगे तब-तब खर्च की अधिक सहूलियत और बाहरी दूसरे स्थानों के सम्बन्धित संपर्क में सफलता पैदा करते हैं और यदि मंगलदेव, धन, मकर, कुम्भ, मीन, मेष, सिंह, मिथुन, कन्या, तुला, वृश्चिक इन नौ राशियों पर जब-जब कभी आवेंगे तब-तब कुछ अन्य विषयों के अतरिक्त उपरोक्त विषयक फल भी प्रदान करते हैं।
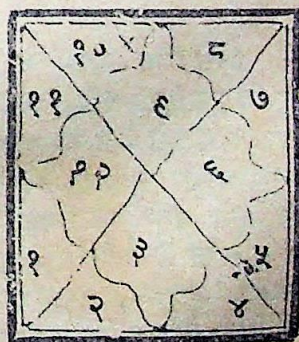
## धन लग्नान्तर प्रतिकूल ग्रह फलम

फलादेश नं० २१४

जिस-जिस समय में धन राशि पर मंगल, चन्द्र, राहू, इन तीन ग्रहों में से जब-जब कभी कोई आवेंगे तब-तब देह में चिंता व कुछ कमजोरी पैदा करते हैं और यदि गुरुदेव, मकर, वृष, वृश्चिक इन तीन राशियों में जब-जब कभी आवेंगे तब-तब कुछ अन्य विषयों के अतरिक्त उपरोक्त विषयक फल भी प्रदान करते हैं।
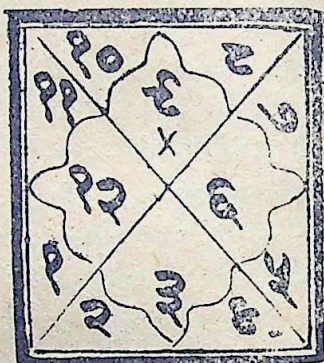
फलादेश नं० २१५

जिस-जिस समय में मकर राशि पर गुरु, चन्द्र, राहू, केतू इन चार ग्रहों में से जब-जब कभी कोई आवेंगे तब-तब धन स्थान में हानि तथा कौटुम्बिक क्लेश पैदा करते हैं और यदि गुरुदेव, मकर, वृश्चिक, वृष, इन तीन राशियों में जब-जब कभी आवेंगे तब-तब कुछ अन्य विषयों के अतरिक्त उपरोक्त विषयक फल भी प्रदान करते हैं।
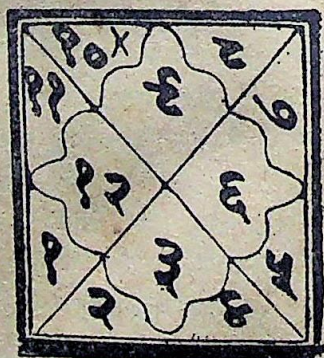
फलादेश नं० २१६

जिस-जिस समय में कुम्भ राशि पर मंगल, चन्द्र, राहू, केतू इन चार ग्रहों में से जब-जब कभी कोई आवेंगे तब-तब भाई, बहन के स्थान में कुछ अशाँति तथा बाहुबल के कार्यों में कुछ थकान व कुछ परेशानी पैदा करते हैं और यदि शनिदेव, मेष. कर्क, वृश्चिक इन तीन राशियों में जब-जब कभी आवेंगे तब-तब कुछ अन्य विषयों के अतरिक्त उपरोक्त विषयक फल भी प्रदान करते हैं।
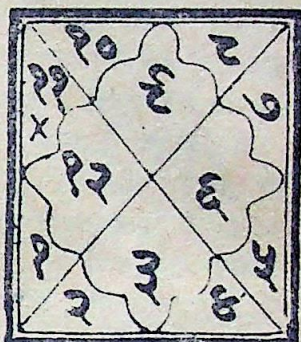
फलादेश नं० २१७

जिस-जिस समयमें मीन राशि पर बुद्ध, चन्द्र, मंगल, राहू, केतू इन पाँच ग्रहों में से जब-जब कभी कोई आवेंगे तब-तब मातृस्थान में व सुख , संबंध कुछ अशांतप्रद एवं हानिप्रद कार्य करते हैं और यदि गुरुदेव, वृष, वृश्चिक, मकर इन तीन राशियों पर जब-जब भी आवेंगे तब-तब कुछ अन्य विषयों के अतरिक्त उपरोक्त विषयक फल भी प्रदान करते हैं।

फलादेश नं० २१८

जिस-जिस समय में मेष राशि पर शनि, चन्द्र, राहू, केतू इन ४ ग्रहों में से जब-जब कभी आवेंगे तब-तब संतान पक्ष में कुछ अशांति व दिमाग में कुछ परेशानी तथा विद्या, बुद्धि, विवेक, वाणी आदि की सुन्दरता में कमी व रूखापन पैदा करते हैं और यदि मंगलदेव, वृष, कर्क, वृश्चिक इन तीन राशियों में जब-जब कभी आवेंगे तब-तब कुछ अन्य विषयों के अतरिक्त उपरोक्त विषयक फल भी प्रदान करते हैं।
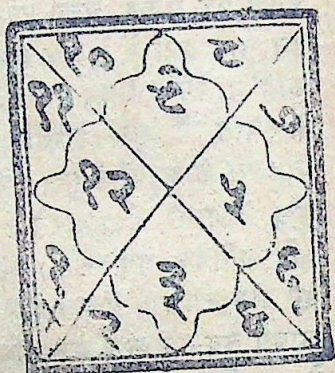
फलादेश नं० २१९

जिस-जिस समय में वृष राशि पर मंगल, राहू, केतू, इन तीन ग्रहों में से जब-जब कभी कोई आवेंगे तब-तब ननसाल पक्ष में कुछ कमजोरी तथा शत्रुपक्ष में व दिक्कतों के सम्बन्ध में कुछ परेशानियों से काम निकालते हैं और यदि शुक्रदेव, वृश्चिक, कर्क, कन्या इन तीन राशियों में जब-जब कभी आवेंगे तब-तब कुछ अन्य विषयों के अतरिक्त उपरोक्त विषयक फल भी प्रदान करते हैं।
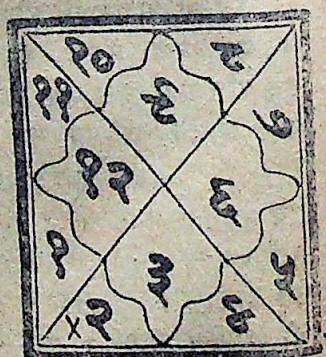
फलादेश नं० २२०

जिस-जिस समय में मिथुन राशि पर केतू, चन्द्र, मंगल इन ३ ग्रहों में से जब-जब कभी कोई आवेंगे तब-तब स्त्री स्थान में कुछ कष्ट तथा दैनिक रोजगार में परेशानी पैदा करते हैं और यदि बुद्धदेव, कर्क, वृश्चिक, मीन, वृष इन ४ राशियों पर जब-जब कभी आवेंगे तब-तब कुछ अन्य विषयों के अतिरिक्त उपरोक्त विषयक फल भी प्रदान करते हैं।
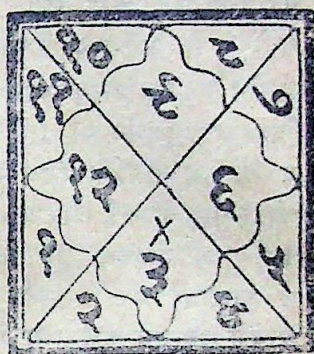
फलादेश नं० २२१

जिस-जिस समय में कर्क राशि पर राहू, केतू, मंगल इन ३ ग्रहों में से जब-जब कभी कोई आवेंगे तब-तब पुरातत्व संबंधी किसी प्रकार की कुछ हानि व उदर में विकार तथा जीवन में कुछ चिंता पैदा करते हैं और यदि चन्द्रदेव, वृश्चिक राशि पर जब-जब कभी आवेंगे तब-तब कुछ अन्य विषयों के अतिरिक्त उपरोक्त विषयक फल भी प्रदान करते हैं।

फलादेश नं० २२२

जिस-जिस समय में सिंह राशि पर राहू, केतू, चन्द्र, मंगल इन ४ ग्रहों में से जब-जब कभी कोई आवेंगे तब-तब भाग्य स्थान में कुछ चिंता व कुछ हानि और धर्म, ईश्वर व यश इन तीनों के संबंध में कमजोरी पैदा करते हैं और यदि सूर्यदेव, तुला, वृश्चिक, वृष, कर्क इन ४ राशियों पर जब-जब कभी आवेंगे तब-तब कुछ अन्य विषयों के अतिरिक्त उपरोक्त विषयक फल प्रदान करते हैं।
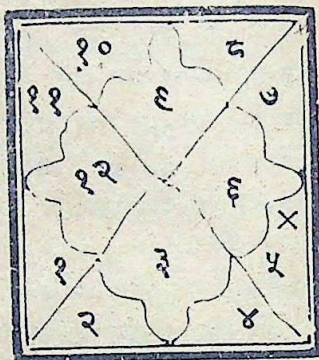
फलादेश नं० २२३

जसि-जिस समय में कन्या राशि पर चन्द्र, मंगल, राहू, केतू इन ४ ग्रहों में से जब-जब कभी कोई आवेंगे तब-तब पिता के स्थान संबंधमें व कारबार, मान प्रतिष्ठा, राज-समाज आदि विषयों में परेशानी के कारण पैदा करते हैं और यदि बुद्धदेव, वृश्चिक, मीन, वृष, कर्क इन चार राशियों पर जब-जब कभी आवेंगे तब-तब भी कुछ अन्य विषयों के अतिरिक्त उपरोक्त विषयक फल भी प्रदान करते हैं।
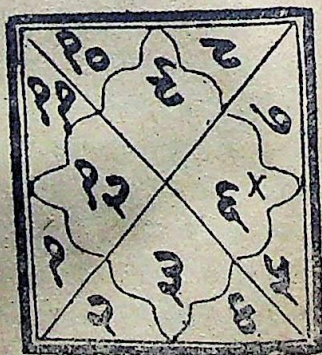
फलादेश नं० २२४

जिस-जिस समय में तुला राशि पर सूर्य, चन्द्र इन दो ग्रहों में से जब-जब कभी कोई आवेंगे तब-तब आमदनी के स्थान में व आवश्यक वस्तुओं की प्राप्ति के संबंध में कुछ थोड़ी सी दिक्कतें पैदा करते हैं और यदि शुक्रदेव, वृश्चिक, वृष, कर्क, कन्या इन चार राशियों पर जब-जब कभी आवेंगे तब-तब कुछ अन्य विषयों के अतिरिक्त उपरोक्त विषयक फल भी प्रदान करते हैं।
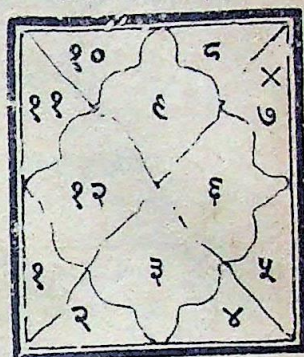
फलादेश नं० २२५

जिस-जिस समय में वृश्चिक राशि पर चन्द्र, राहू, केतू इन ३ ग्रहों में से जब-जब कभी कोई आवेंगे तब-तब खर्च के स्थान में परेशानी का कारण और बाहरी दूसरे स्थानों के सम्बन्धित संपर्क में कुछ दिक्कतें पैदा करते हैं और यदि मंगलदेव, वृष, कर्क इन दो राशियों में जब-जब कभी आवेंगे तब-तब कुछ अन्य विषयों के अतिरिक्त उपरोक्त विषयक फल भी प्रदान करते हैं।

# मकर लग्नान्तर भाग्योदय कारक,

## नवग्रह व समय फल

### मकर लग्न फलादेश नं० २२६
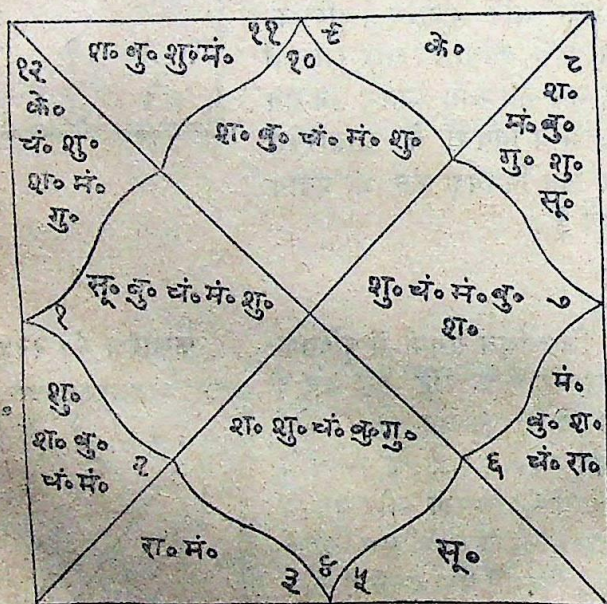
जिस-जिस समय में मकर लग्न वाले प्राणियों को ऊपर स्थित कुण्डली के अनुसार यह नवग्रह पंचांग गति की गोचर प्रणाली से जब-जब कभी एक ही समय में प्राय: सभी ग्रह इस-इस प्रकार की राशियों में आवेंगे तब-तब इस मकर लग्न वाले प्राणियों का भाग्योदय विविध प्रकार से होता है। यानी—

सू०—सिंह, मेष, वृश्चिक इन तीन राशियों पर कहीं भी हों।

चं०—मकर, मीन, मेष, वृष, कर्क, कन्या, तुला इन सात राशियों पर कहीं भी हों।

मं०—मकर, कुम्भ, मीन, मेष, वृष, मिथुन, कन्या, वृश्चिक, तुला इन नौ राशियों पर कहीं भी हों।

बु०—मकर, कुम्भ, मेष, वृष, कर्क, कन्या, तुला, वृश्चिक, इन आठ राशियों पर कहीं भी हों।

गु०—मीन, कर्क, वृश्चिक इन तीन राशियों पर कहीं भी हों।

शु०—मकर, कुम्भ, मीन, मेष, वृष, कर्क, तुला, वृश्चिक इन आठ राशियों पर कहीं भी हों।

श०—मकर, कुम्भ, मीन, वृष, कर्क, कन्या, तुला, वृश्चिक इन आठ राशियों पर कहीं भी हों।

रा०—मिथुन, कन्या इन दो राशियों पर कहीं भी हों।

के०—धन, मीन इन दो राशियों पर कहीं भी हों।

अर्थात्—जिस-जिस साल, मास, पक्ष व दिनों में यह नवग्रह उपरोक्त-उपरोक्त राशियों पर एक ही समय में आयेंगे तब-तब ही भाग्यकारक सिद्ध होंगे किन्तु कोई भी ग्रह उस समय में सूर्य से अस्त नहीं होना चाहिये, क्योंकि अस्त ग्रह का फल ठीक रूप से मान्य नहीं है।

## मकर लग्नान्तर अनुकूल ग्रह फलम

फलादेश नं० २२७

जिस-जिस समय में मकर राशि पर, शुक्र, शनि, बुद्ध, मंगल, चन्द्र, इन पांच ग्रहों में से जब-जब कभी कोई आवेंगे, तब-तब देह को, ऐश्वर्य, मान, सम्मान, प्रभाव, लाभ, सुख इत्यादि बातों की प्राप्ति करते हैं। और यदि शनिदेव, मकर कुम्भ, मीन, वृष, मिथुन, कर्क, कन्या, तुला, वृश्चिक इन नौ राशियों पर जब-जब कभी आवेंगे, तब-तब भी कुछ अन्य विषयों को छोड़ कर उपरोक्त विषयक फल भी प्रदान करते हैं।
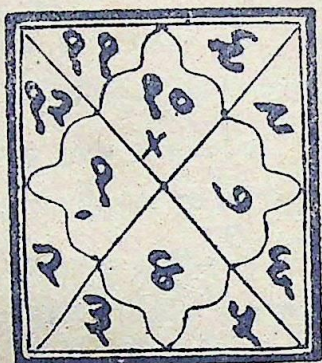
फलादेश नं० २२८

जिस-जिस समय में कुम्भ राशि पर शनि, शुक्र, बुद्ध, मंगल, चन्द्र, इन पांच ग्रहों में से जब-जब कभी कोई आवेंगे तब-तब धन स्थान की वृद्धि व कौटुम्बिक सुख पैदा करते हैं। और यदि शनिदेव, कुम्भ, मीन, वृष, कर्क, कन्या, तुला, वृश्चिक, मकर इन आठ राशियों में जब-जब कभी आवेंगे, तब-तब भी कुछ अन्य विषयों के अतिरिक्त उपरोक्त विषयक फल भी प्रदान करते हैं।
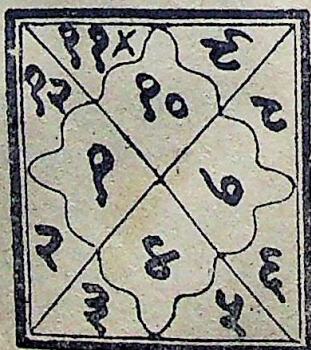
फलादेश नं० २२९

जिस-जिस समय में मीन राशि पर शुक्र, शनि, मंगल, चन्द्र, इन ग्रहों में से जब-जब कभी कोई आवेंगे तब-तब बहन, भाई के स्थान संबंध में अपने बाहुबल दारा किये हुए कार्यों में सफलता, सुख प्रदान करते और मीन पर राहू, केतू कोई भी हों तो पुरुषार्थ] कार्य में अधिक मेहनत से सफलता प्रदान करते हैं। और यदि गुरूदेव, मेष, कर्क, कन्या, तुला, वृश्चिक, मीन इन छै राशियों पर जब-जब कभी आवेंगे तब-तब भी कुछ अन्य विषयों के अतरिक्त उपरोक्त विषयक फल भी प्रदान करते हैं।

फलादेश नं० २३०

जिस-जिस समय में मेष राशि पर चन्द्र, शुक्र, बुद्ध, सूर्य इन चार ग्रहों में से जब-जब कभी कोई आवेंगे तब-तब मातृ स्थान में व भूमि, मकानादि संबंध में व सुख प्राप्ति के संबंधों में अनुकूल वृद्धि कारक योग पैदा करते हैं और यदि मंगलदेव, मेष, कन्या, तुला, मीन, वृश्चिक, मकर इन ६ राशियों पर जब-जब कभी आवेंगे तब-तब कुछ अन्य विषयो के अतरिक्त उपरोक्त विषयक फल प्रदान करते हैं।

**फलादेश नं० २३१**

जिस-जिस समय में वृष राशि पर शुक्र, चन्द्र, बुद्ध, मंगल, शनि इन पांच ग्रहों में से जब-जब कभी कोई आवेंगे तब-तब विद्या और ज्ञान का विकास तथा संतान पक्ष में सुख और वाणी की शक्ति में तीव्रता पैदा करते हैं और यदि शुक्रदेव, कर्क, तुला, वृश्चिक, मकर, कुम्भ, मीन, मेष, वृष इन आठ राशियों में जब-जब कभी आवेंगे तब-तब कुछ अन्य विषयों के अत-उपरोक्त रिक्त विषयक फल भी प्रदान हैं।

**फलादेश नं० २३२**
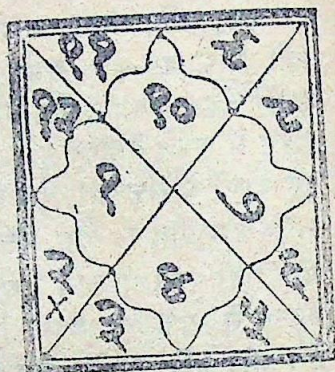
जिस-जिस समय में मिथुन राशि पर राहू, बुद्ध, मंगल, शुक्र, शनि इन ५ ग्रहों में से जब-जब कभी कोई आवेंगे तब-तब शत्रु पक्ष में व दिक्कत पर विजय प्रदान करते हैं तथा ननसाल पक्ष में उन्नति का योग पैदा करते हैं और यदि बुद्धदेव, कर्क, कन्या, तुला, वृश्चिक, मकर, कुम्भ, मेष, वृष इन ८ राशियों पर जब-जब कभी आवेंगे तब-तब कुछ अन्य विषयों के अत-रिक्त उपरोक्त विषयक फल भी प्रदान करते हैं।
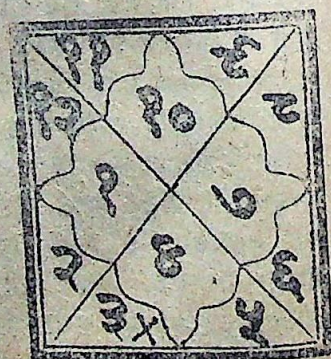
फलादेश नं० २३३

जिस-जिस समय में कर्क राशि पर चन्द्र, गुरु, शुक्र, बुद्ध, शनि इन ५ ग्रहों में से जब-जब कभी कोई आवेंगे तब-तब दैनिक रोजगार की लाइन में तरक्की व सफलता प्राप्त करते हैं तथा स्त्री स्थान में सुख, ऐश्वर्य व प्रभाव प्रदान करते हैं और यदि चन्द्रदेव, कर्क, कन्या, तुला, मकर, मीन, मेष, वृष इन ७ राशियों पर जब-जब कभी आवेंगे तब-तब कुछ अन्य विषयों के अतरिक्त उपरोक्त विषयक फल प्रदान करते हैं।

फलादेश नं० २३४

जिस-जिस समय में सिंह राशि पर सूर्य, बुद्ध, शुक्र, मंगल, शनि इन ६ ग्रहों में से जब-जब कभी कोई आवेंगे तब-तब कुछ दिक्कतों के साथ किसी प्रकार से कुछ पुरातत्व शक्ति का लाभ तथा जीवन को शक्ति प्रदान करते हैं और यदि सूर्यदेव, सिंह, कन्या, वृश्चिक, वृष, मकर, कुम्भ, मीन मेष, कर्क इन ९ राशियों पर जब-जब कभी आवेंगे तब-तब कुछ अन्य विषयों के अतरिक्त उपरोक्त विषयक फल भी प्रदान करते हैं।

फलादेश नं० २३५

जिस-जिस समय में कन्या राशि पर बुद्ध, मंगल, शनि, चन्द्र इन ४ ग्रहों में से जब-जब कभी आवेंगे तब-तब भाग्य की उन्नति, यश की प्राप्ति, दैवी सफलता व धर्म में रुचि इत्यादि बातें पैदा करते हैं और यदि बुद्धदेव, कन्या, मकर, तुला, वृश्चिक, कुम्भ, मेष, वृष, कर्क इन ८ राशियों पर जब जब कभी आवेंगे तब-तब कुछ अन्य विषयों के अतरिक्त उपरोक्त विषयक फल भी प्रदान करते हैं।
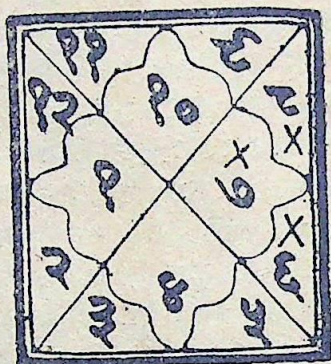
फलादेश नं० २३६

जिस-जिस समय में तुला राशि पर शुक्र, शनि, बुद्ध, मंगल, चन्द्र इन ५ ग्रहों में से जब-जब कभी कोई आवेंगे तब-तब पिता स्थान में व कारबार के स्थान में तथा राज, समाज, मान, प्रतिष्ठा आदि के सम्बन्ध में उन्नति व सफलता प्रदान करते हैं और यदि शुक्रदेव, वृश्चिक, मकर, कुम्भ, मीन, मेष, वृष, कर्क, तुला इन ८ राशियों पर जब-जब कभी आवेंगे तब-तब कुछ अन्य विषयों के अतिरिक्त उपरोक्त विषयक फल भी प्रदान करते हैं।
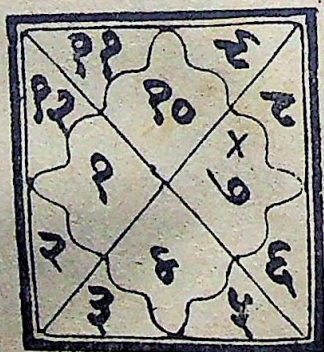
जिस-जिस समय में वृश्चिक राशि पर मंगल, शुक्र, शनि, बुद्ध, गुरु, राहू, केतू, सूर्य, इन आठ ग्रहों में से, जब-जब कभी कोई आवेंगे, तब-तब आमदनी के व लाभ प्राप्ति के साधनों में उन्नति करते हैं तथा आवश्यक पदार्थों की पूर्ती करते हैं और यदि मंगलदेव, वृश्चिक, मकर मीन, मेष, वृष, कन्या, तुला इन सात राशियों पर जब-जब कभी आवेंगे तब-तब भी कुछ अन्य विषयों के अतिरिक्त उपरोक्त विषयक फल भी प्रदान करते हैं।
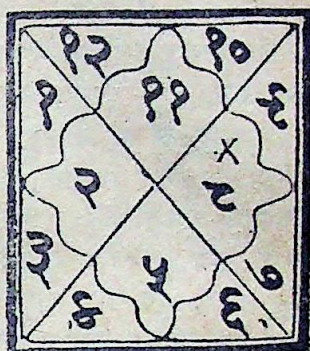
फलादेश नं० २३७

जिस-जिस समय में धन राशि पर गुरु, मंगल शुक्र, बुद्ध, चन्द्र, शनि, केतू, इन सात ग्रहों में से जब-जब कभी कोई आवेंगे, तब-तब खर्च के स्थान में सहूलियत व बृद्धि तथा बाहरी दूसरे स्थानों के संबन्धित सम्पर्क में सफलता प्रदान करते हैं और यदि गुरुदेव, धन मीन, मेष, कर्क, सिंह, कन्या, तुला वृश्चिक, इन आठ राशियों में जब जब कभी आवेंगे, तब-तब कुछ अन्य विषयों के अतिरिक्त उपरोक्त विषयक फल भी प्रदान करते हैं।
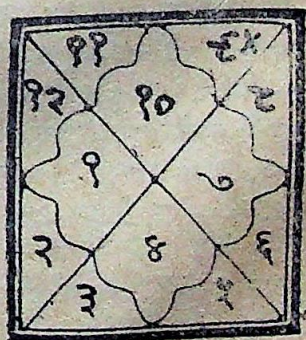
फलादेश नं० २३८

## मकर लग्नांतर प्रतिकूल ग्रह फलम

फलादेश नं० २३९

जिस-जिस समय में मकर राशि पर सूर्य, गुरु, राहू, केतू, इन चार ग्रहों में से जब-जब कभी कोई आवेंगे, तब-तब देह को चिंता व कमजोरी पैदा करते हैं। और यदि शनिदेव, मेष, मिथुन, सिंह, धन, इन चार राशियों पर जब-जब कभी आवेंगे तब-तब कुछ अन्य विषयों के अतिरिक्त उपरोक्त विषयक फल भी प्रदान करते हैं।
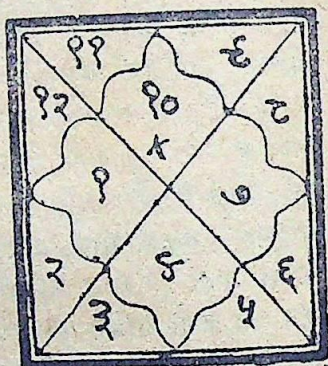
फलादेश नं० २४०

जिस-जिस समय में कुम्भ राशि पर सूर्य, गुरु, राहू, केतू, इन चार ग्रहों में से जब-जब कभी कोई आवेंगे, तब-तब धन स्थान में हानि व फिक्र और कौटुम्बिक अशान्ति का योग पैदा करते हैं। और यदि शनिदेव, मेष, मिथुन, सिंह, धन, इन चार राशियों पर जब-जब कभी आवेंगे, तब-तब कुछ अन्य विषयों के अतिरिक्त उपरोक्त विषयक फल भी प्रदान करते हैं।
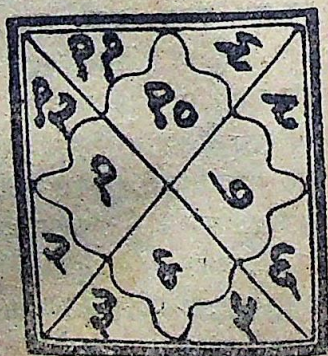
फलादेश नं० २४१

जिस-जिस समय में मीन राशि पर सूर्य, राहू, केतू, इन तीन ग्रहों में से जब-जब कभी कोई आवेंगे, तब-तब भाई-बहन के स्थान में अशांती का योग तथा बाहुबल द्वारा किए गये कार्यों में कुछ थकान व परिश्रम का योग पैदा करते हैं। और यदि गुरुदेव, मिथुन, सिंह, धन, मकर, कुम्भ, मीन, इन ६ राशियों पर जब-जब कभी आवेंगे तब-तब कुछ अन्य विषयों के अतिरिक्त उपरोक्त विषयक फल भी प्रदान करते हैं।
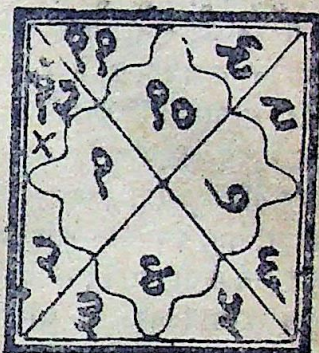
फलादेश नं० २४२

जिस-जिस समय में मेष राशि पर, शनि, गुरु, केतू, राहू, इन ४ ग्रहों में से जब-जब कभी कोई आवेंगे, तब-तब मातृ स्थान व भूमि, मकानादि सम्बन्ध, व सुख प्राप्ति सम्बन्धों की कमी व क्लेश पैदा करते हैं। और यदि मंगलदेव, मिथुन, कर्क, सिंह, धन, कुम्भ, इन पांच राशियों पर जब-जब कभी आवेंगे तब-तब भी कुछ अन्य विषयों के अतिरिक्त उपरोक्त विषयक फल भी प्रदान करते हैं।

फलादेश नं० २४३

जिस-जिस समय में वृष राशि पर गुरु, राहू, केतू, सूर्य इन ४ ग्रहों में से जब-जब कभी कोई आवेंगे, तब-तब संतान पक्ष में व विद्या, बुद्धि सम्बन्ध में अशांति का व कुछ न्यूनता का योग पैदा करते हैं। और यदि शुक्रदेव, मिथुन, सिंह, कन्या, धन, इन चार राशियों पर जब-जब कभी आवेंगे तब-तब भी कुछ अन्य विषयों के अतिरिक्त उपरोक्त विषयक फल भी प्रदान करते हैं।
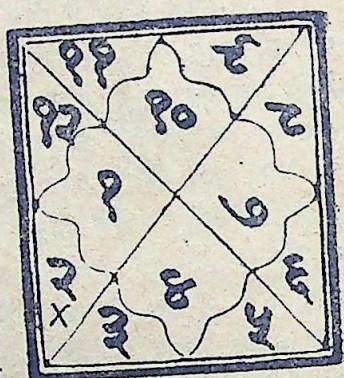
फलादेश नं० २४४

जिस-जिस समय में मिथुन-राशि पर केतू, सूर्य, गुरु, इन तीन ग्रहों में से जब-जब कभी कोई आवेंगे तब-तब ननसाल पक्ष में कुछ कमजोरी का योग तथा शत्रु पक्ष में थोड़ी सी दिक्कतें पैदा करते हैं। और यदि बुद्धदेव, सिंह, धन, मीन, इन तीन राशियों पर जब-जब कभी आवेंगे तब-तब कुछ अन्य विषयों के अतिरिक्त उपरोक्त विषयक फल भी प्रदान करते हैं।

**फलादेश नं० २४५**

जिस-जिस समय में कर्क राशि पर मंगल, सूर्य, राहू, केतू इन ४ ग्रहों में से जब-जब कभी कोई आवेंगे तब-तब स्त्री स्थान में व दैनिक रोजगार की लाइन में अशान्ति व कष्ट अनुभव कराते हैं तथा भोगादिक पक्ष में कुछ कमी करते हैं। और यदि चन्द्रदेव, सिंह, वृश्चिक, धन, मिथुन, इन चार राशियों जब-जब कभी आवेंगे तब-तब भी कुछ अन्य विषयों के अतिरिक्त उपरोक्त विषयक फल भी प्रदान करते हैं।
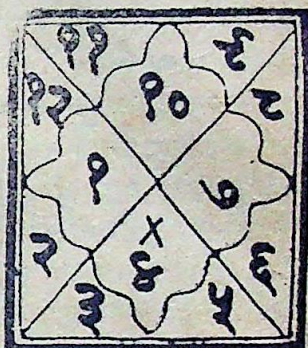
**फलादेश नं० २४६**

जिस-जिस समय में सिंह राशि पर गुरु, राहू, केतू इन तीन ग्रहों में से जब-जब कभी कोई आवेंगे तब-तब पुरातत्व संबन्धी किसी प्रकार की हानि तथा उदर का कुछ विकार व जीवन को अशांति पैदा करते हैं। और यदि सूर्यदेव, तुला, धन, मिथुन इन तीन राशियों पर जब-जब कभी आवेंगे तब-तब कुछ अन्य विषयों के अतिरिक्त उपरोक्त विषयक फल भी प्रदान करते हैं।

फलादेश नं० २४७

जिस-जिस समय में कन्या राशि पर सूर्य, शुक्र, गुरु, राहू, केतू इन पाँच ग्रहों में से जब-जब कोई आवेंगे तब-तब भाग्य स्थान में कुछ चिंता व धर्म स्थान में कुछ कमी तथा यश की न्यूनता पैदा करते हैं और यदि बुद्धदेव, धन, मीन मिथुन, सिंह इन चार राशियों पर जब-जब कभी आवेंगे तब-तब कुछ अन्य विषयों के अतिरिक्त उपरोक्त विषयक फल भी प्रदान करते हैं।
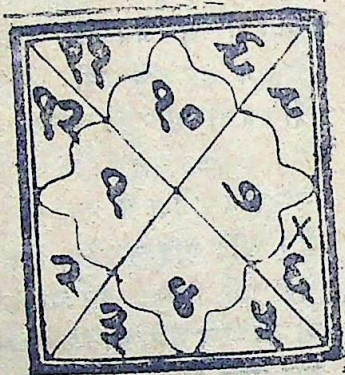
फलादेश नं० २४८

जिस-जिस समय में तुला राशि पर सूर्य, गुरु, राहू केतू इन चार ग्रहों में से जब-जब कभी कोई आवेंगे तब-तब पिता स्थान में व कारबार के स्थान में तथा राज-समाज व मान-प्रतिष्ठा आदि के संबन्ध में दिक्कतें पैदा करते हैं और यदि शुक्रदेव, धन, मिथुन, सिंह, कन्या इन चार राशियों पर जब-जब कभी आवेंगे तब-तब कुछ अन्य विषयों के अतिरिक्त उपरोक्त विषयक फल भी प्रदान करते हैं।
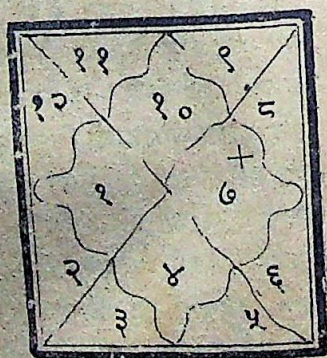
फलादेश नं० २४९

जिस-जिस समय में वृश्चिक राशि पर चन्द्रदेव जब-जब कभी आवेंगे तब-तब आमदनी के स्थान में कुछ अशांति का योग पैदा करते हैं और यदि मंगलदेव, धन, मिथुन, कर्क, सिंह इन चार राशियों पर जब-जब कभी आवेंगे तब-तब भी कुछ अन्य विषयों के अतिरिक्त उपरोक्त विषयक फल भी प्रदान करते हैं।
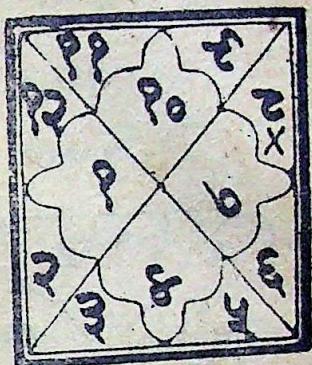
फलादेश नं० २५०

जिस-जिस समय में धन राशि पर राहू, सूर्य इन दों ग्रहों में से जब-जब कभी कोई आवेंगे तब-तब खर्च के स्थान में व अन्य दूसरे स्थानों के सम्पर्क में कुछ परेशानी का योग पैदा करते हैं और यदि गुरुदेव, मकर, कुम्भ, मिथुन, सिंह इन चार राशियों पर जब-जब कभी आवेंगे तब-तब कुछ अन्य विषयों के अतिरिक्त उपरोक्त विषयक फल भी प्रदान करते हैं।
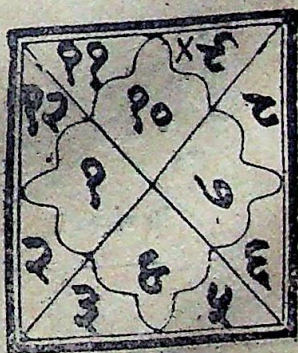
# कुम्भ लग्नान्तर भाग्योदय कारक, नवग्रह व समय फल

कुम्भ लग्न फलादेश नं० २५१
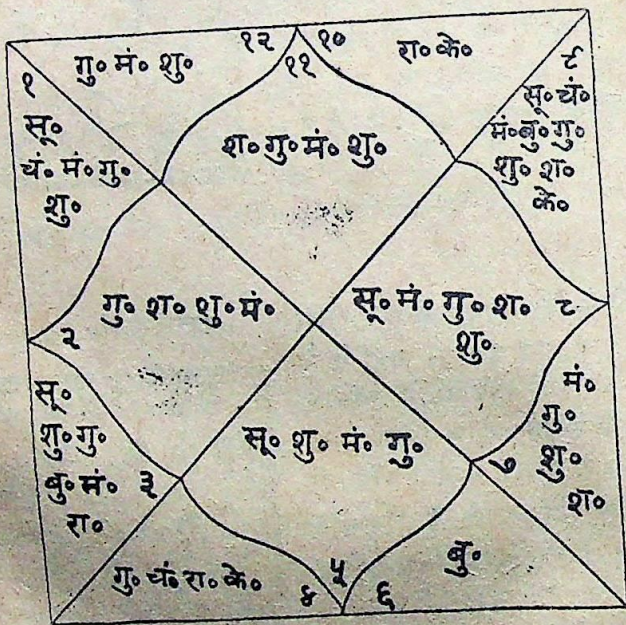
जिस-जिस समय में कुम्भ लग्न वाले प्राणियों को ऊपर स्थित कुण्डली के अनुसार यह नवग्रह पंचांग गति की गोचर प्रणाली से जब-जब कभी एक ही समय में, प्रायः सभी ग्रह उपरोक्त-उपरोक्त राशियों में आवेंगे तब-तब ही इस कुम्भ लग्न वाले प्राणियों का भाग्योदय विविध प्रकार से होता रहेगा। यानी—

सू०—मेष, मिथुन, सिंह, वृश्चिक, धन इन-इन राशियों पर कहीं भी हों।

चं०—मेष, कर्क, धन इन-इन राशियों पर कहीं भी हों।

मं०—कुम्भ, मीन, मेष, वृष, मिथुन, सिंह, तुला, वृश्चिक, धन इन-इन राशियों पर कहीं भी हों।

बु०—मिथुन, कन्या, धन इन-इन राशियों पर कहीं भी हों।

गु०—कुम्भ, मीन, मेष, वृष, मिथुन, कर्क, सिंह, तुला, धन, वृश्चिक इन-इन राशियों पर कहीं भी हों।

शु०—कुम्भ, मीन, मेष, वृष, मिथुन, सिंह, तुला, वृश्चिक इन-इन राशियों पर कहीं भी हों।

श०—कुम्भ, वृष, तुला, वृश्चिक, धन इन-इन राशियों पर कहीं भी हों।

रा०—मिथुन, कर्क मकर इन-इन राशियों पर कहीं भी हों।

के०—धन, मकर, कर्क, इन-इन राशियों पर कहीं भी हों।

अर्थात्—जिस-जिस साल, मास, पक्ष व दिनों में यह नवग्रह उपरोक्त-उपरोक्त राशियों पर जब-जब कभी एक ही समय में एक साथ आवेंगे तब-तब ही इस कुम्भ लग्न वाले प्राणियों का भाग्योदय किसी न किसी रूप में होता रहेगा किन्तु उस समय में यदि कोई ग्रह सूर्य से अस्त होगा तो वह मान्य नहीं होंगे।

## कुम्भ लग्नान्तर अनुकूल ग्रह फलम

फलादेश नं० २५२

जिस-जिस समय में कुम्भ राशि पर शुक्र, मंगल, गुरु, शनि इन चार ग्रहों में से जब-जब कभी कोई आवेंगे तब-तब देह को प्रभाव, सुख, लाभ, मान, प्रतिष्ठा, गौरव उन्नति, कीर्ति, कर्म इत्यादि योग प्रदान करते हैं और यदि शनिदेव, कुम्भ, मिथुन, मीन, वृष, सिंह, तुला, वृश्चिक, धन इन आठ राशियों पर जब-जब कभी आवेंगे तब-तब कुछ अन्य विषयों के अतिरिक्त उपरोक्त विषयक फल भी प्रदान करते हैं।

फलादेश नं० २५३

जिस-जिस समय में मीन राशि पर गुरु, शुक्र, मंगल, सूर्य इन चार ग्रहों में से जब-जब कभी कोई आवेंगे तब-तब धन स्थान की वृद्धि तथा कौटुम्बिक सुख लाभ पैदा करते हैं और यदि गुरुदेव मीन, मेष, वृष, मिथुन, कर्क, सिंह तुला, वृश्चिक, धन, कुम्भ इन दस राशियों पर जब-जब कभी आवेंगे तब-तब भी कुछ अन्य विषयों के अतिरिक्त उपरोक्त विषयक फल भी प्रदान करते हैं।
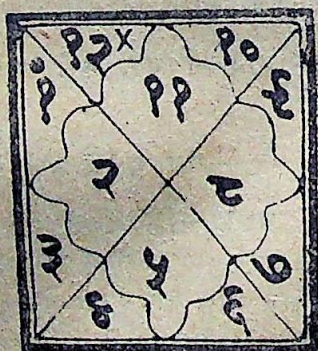
फलादेश नं० २५४

जिस-जिस समय में मेष राशि पर सूर्य, गुरु, शुक्र, मंगल, इन ४ ग्रहों में से जब-जब कभी कोई आवेंगे तब-तब बहन-भाई के स्थान में सुख-सहयोग पैदा करते हैं तथा बाहुबल के कार्यों में सफलता व उन्नति करते हैं और राहू केतु, चन्द्र इन ३ ग्रहों में से जब-जब कोई आवेंगे तो बहन-भाई के स्थान को छोड़कर पुरुषार्थ व परिश्रम की सफलता करते हैं और यदि मंगलदेव, मेष, वृष, मिथुन, सिंह, तुला, वृश्चिक, धन, मकर, कुम्भ इन नौ राशियों पर जब-जब कभी आवेंगे तब-तब कुछ अन्य विषयों के अतरिक्त उपरोक्त विषयक फल भी प्रदान करते हैं।

फलादेश नं० २५५

जिस-जिस समय में वृष राशि पर शुक्र, मंगल, गुरु, चन्द्र, सूर्य इन पांच ग्रहों में से जब-जब कभी कोई आवेंगे तब-तब मातृस्थान की वृद्धि भूमि-मकानादि संबंध की व सुख प्राप्ति संबंधों की सफलता प्रदान करते हैं और यदि शुक्रदेव वृष, मिथुन, सिंह, तुला, वृश्चिक, धन, कुम्भ, मीन, मेष इन नौ राशियों पर जब-जब कभी आवेंगे तब-तब भी कुछ अन्य विषयों के अतरिक्त उपरोक्त विषयक फल प्रदान करते हैं।

फलादेश ० २५६

जिस-जिस समय में मिथुन राशि पर शुक्र, मंगल, गुरु, सूर्य, बुद्ध, शनि, राहू इन ७ ग्रहों में से जब-जब कभी कोई आवेंगे तब-तब विद्या का विकास, ज्ञान और विवेक की वृद्धि, संतान का सुख इत्यादि योग पैदा करते हैं और यदि बुद्धदेव, मिथुन, सिंह, तुला, वृश्चिक, कुम्भ, धन, मेष, वृश्चिक, इन ८ राशियों पर जब-जब कभी आवेंगे तब-तब कुछ अन्य विषयों के अतिरिक्त उपरोक्त-उपरोक्त विषयक फल भी प्रदान करते हैं।

फलादेश नं० २५७

जिस-जिस समय में कर्क राशि पर गुरु, सूर्य, शुक्र, शनि, चन्द्र इन ५ ग्रहों में से जब-जब कभी कोई आवेंगे तब-तब शत्रु स्थान में व ननसाल पक्ष में प्रभाव की जागृति करते हैं तथा कर्क राशि पर राहू या केतू आवें तो शत्रुपक्ष में विजय तथा ननसाल पक्ष में हानि करते हैं और यदि चन्द्र-देव, सिंह, तुला, धन, कुम्भ, मेष, वृष, मिथुन, कर्क इन ८ राशियों पर जब-जब कभी आवेंगे तब-तब कुछ अन्य विषयों के अतिरिक्त उपरोक्त विषयक फल भी प्रदान करते हैं।
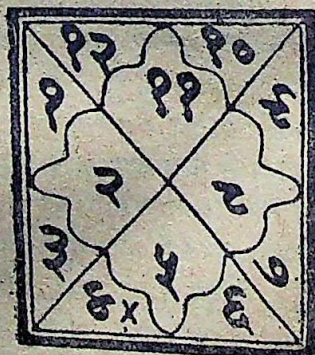
फलादेश नं० २५८

जिस-जिस समय में सिंह राशि पर सूर्य, गुरु, मंगल, शुक्र इन चार राशियों पर जब-जब कभी आवेंगे तब-तब दैनिक रोजगार के स्थान में उन्नति व सफलता तथा स्त्री स्थान में प्रभाव व आनन्द लाभ प्रदान करते हैं और यदि सूर्यदेव, सिंह, वृश्चिक, धन, कुम्भ, मेष, मिथुन, वृष इन सात राशियों पर जब-जब कभी आवेंगे तब-तब कुछ अन्य विषयों के अतिरिक्त उपरोक्त विषयक फल भी प्रदान करते हैं।

फलादेश नं० २५९

जिस-जिस समय में कन्या राशि पर बुद्ध, मंगल, गुरू, शनि इन चार ग्रहों में से जब-जब कभी कोई आवेंगे तब-तब किसी प्रकार के पुरातत्व सम्बन्धी लाभ की सूरत पैदा करते हैं तथा जीवन को सहारा पैदा करते हैं और यदि बुद्धदेव, कन्य, तुला, वृश्चिक, धन, कुम्भ, मेष, मिथुन, वृष, सिंह इन ९ राशियों पर जब-जब कभी आवेंगे तब-तब कुछ अन्य विषयों के अतिरिक्त उपरोक्त विषयक फल भी प्रदान करते हैं।
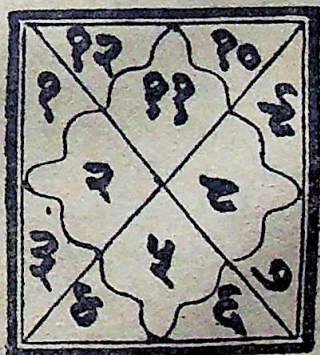
फलादेश नं० २६०

जिस-जिस समय में तुला राशि पर शुक्र, शनि, गुरु, मंगल इन चार ग्रहों में से जब-जब कभी कोई आवेंगे तब-तब भाग्य स्थान की उन्नति व दैवी सफलताओं की प्राप्ति तथा यश और धर्म की वृद्धी करते हैं और यदि शुक्रदेव, तुला, वृश्चिक, धन, कुम्भ, मेष, वृष, मिथुन इन सात राशियों पर जब-जब कभी आवेंगे तब-तब कुछ अन्य विषयों के अतिरिक्त उपरोक्त विषयक फल भी प्रदान करते हैं।

फलादेश नं० २६१

जिस-जिस समय में वृश्चिक राशि पर शुक्र, मंगल, गुरु, सूर्य, शनि इन पाँच ग्रहों में से जब-जब कभी कोई आवेंगे तब-तब मान-प्रतिष्ठा, कारबार, राज-समाज, पिता, इत्यादि सम्बन्धों में शनि के फल से कुछ कमी का योग पाते हुए दूसरे स्थान के सम्बन्ध-सहयोग द्वारा उन्नति करते हैं और शनि को छोड़कर चारों ग्रहों में से कोई हो तो सीधी उन्नति का साधन बनाते हैं और यदि मंगलदेव, वृश्चिक, मकर, धन, कुम्भ, मीन, मेष, वृष, मिथुन, सिंह, तुला इन दस राशियों में जब-जब कभी आवेंगे तब-तब कुछ अन्य विषयों के अतिरिक्त उपरोक्त विषयक फल भी प्रदान करते हैं।
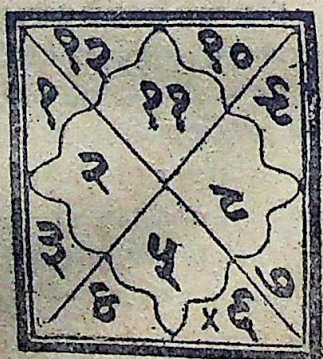
फलादेश नं० २६२

जिस-जिस समय में धन राशि पर गुरु, सूर्य, मंगल, शुक्र, शनि, चन्द्र, बुद्ध, केतू, इन आठ ग्रहों में से जब-जव कभी कोई आवेंगे तव-तब आमदनी के स्थान में वृद्धि व सुख-साधन तथा आवश्यक पदार्थों को प्राप्ति करते हैं और यदि गुरु-देव, धन, कुम्भ, मीन, मेष, वृष, कर्क, मिथुन, सिंह, तुला, वृश्चिक इन दस राशियों में जब-जब कभी आवेंगे तब-तब कुछ अन्य विषयों के अतिरिक्त उपरोक्त विषयक फल भी प्रदान करते हैं।
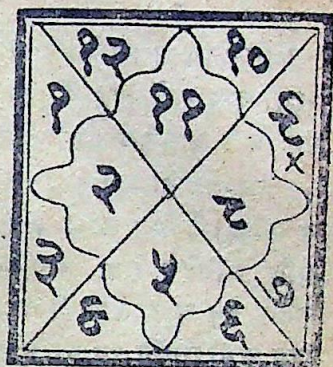
फलादेश नं० २६३

जिस-जिस समय में मकर राशि पर शनि, शुक्र, मंगल इन तीन ग्रहों में से जब-जब कभी कोई आवेंगे तव-तब दूसरे बाहरी स्थानों के संबन्ध में लाभप्रद सहयोग करते हैं और खर्च की सहूलियत, सुख प्रदान करते हैं। और यदि शनि-देव, मकर, कुम्भ, मीन, वृष, मिथुन, कर्क, सिंह, तुला, वृश्चिक, धन इन दस राशियों पर जब-जब कभी आवेंगे तब-तब कुछ अन्य विषयों के अतिरिक्त उपरोक्त विषयक फल भी प्रदान करते हैं।
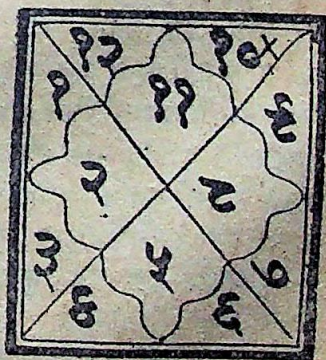
## कुम्भ लग्नान्तर प्रतिकूल ग्रह फलम

फलादेश नं० २६४

जिस-जिस समय कुम्भ राशि पर बुद्ध, चन्द्र, सूर्य, राहू, केतू इन पाँच ग्रहों में से जब-जब कभी कोई आवेंगे तब-तब देह को कुछ अशांति व कमजोरी पैदा करते हैं। और यदि शनिदेव, मेष, कर्क, कन्या, मकर इन चार राशियों पर जब-जब कभी आवेंगे तब-तब कुछ अन्य विषयों के अतिरिक्त उपरोक्त विषयक फल भी प्रदान करते हैं।
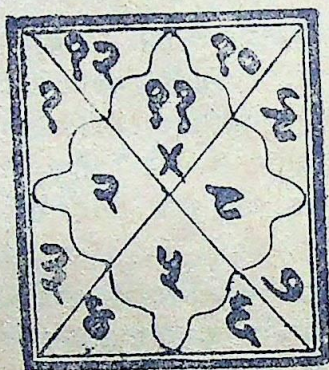
फलादेश नं० २६५

जिस-जिस समय में मीन राशि पर चन्द्र, बुद्ध, शनि, राहू, केतू इन पाँच ग्रहों में से जब-जब कभी कोई आवेंगे तब-तब धन स्थान में कुछ हानि व कौटुम्बिक क्लेश पैदा करते हैं। और यदि गुरुदेव, कन्या, मकर इन दो राशियों पर जब-जब कभी आवेंगे तब-तब कुछ अन्य विषयों के अतिरिक्त उपरोक्त विषयक फल भी प्रदान करते हैं।
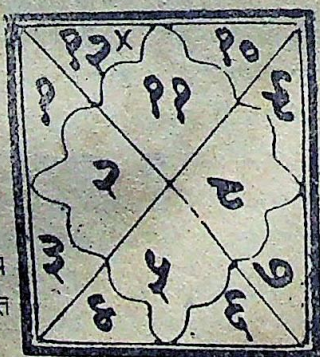
फलादेश नं० २६६

जिस-जिस समय में मेष राशि पर, शनि, बुद्ध, राहू, केतू, इन चार ग्रहों में से जब-जब कभी कोई आवेंगे तब-तब बहन-भाइयों के स्थान में कुछ परेशानी तथा बाहुबल के कार्यों में कुछ थकान पैदा करते हैं और साथ ही साथ कुछ हिम्मत भी देते हैं। और यदि मंगल देव, कर्क, कन्या, मीन, इन तीन राशियों में जब-जब कभी आवेंगे तब-तब कुछ अन्य विषयों के अतिरिक्त उपरोक्त फल भी प्रदान करते हैं।

फलादेश नं० २६७

जिस-जिस समय में वृष राशि पर बुद्ध, राहू, केतू, इन तीन ग्रहों में से जब-जब कभी कोई आवेंगे तब-तब मात्र स्थात में कुछ अशांति एवं सुख प्राप्ति के साधनों में कमी व मकान, भूमि आदि के संबंध में कुछ कमी या क्लेश का योग पैदा करते हैं। और यदि शुक्रदेव कर्क, कन्या, मकर, इन तीन राशियों पर जब-जब कभी आवेंगे तब-तब कुछ अन्य विषयों के अति-रिक्त उपरोक्त विषयक फल भी प्रदान करते हैं
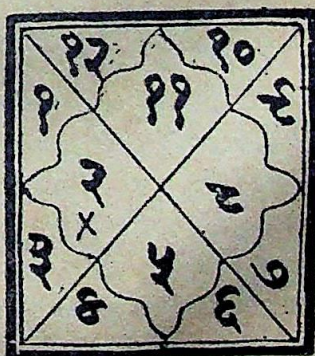
फलादेश नं० २६८

जिस-जिस समय में मिथुन राशि पर, चन्द्र या केतू इन दो ग्रहों में से जब-जब कभी कोई आवेंगे तब-तब सन्तान पक्ष में व दिमाग शांति के सम्बन्धी मामलों में, अशांति का कारण बनाते हैं और विद्या, बुद्धि, विवेक में, कमजोरी पैदा करते हैं। और यदि, बुद्धदेव, कर्क, मकर, मीन, इन तीन राशियों पर जब-जब कभी आवेंगे तब-तब कुछ अन्य विषयों के अतिरिक्त उपरोक्त विषयक फल भी प्रदान करते हैं।
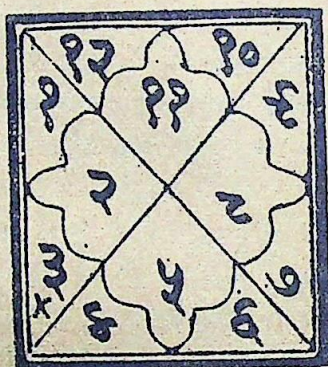
फलादेश नं० २६९

जिस-जिस समय में कर्क राशि पर बुद्ध, राहू, केतू, मंगल, इन चार ग्रहों में से जब-जब कोई आवेंगे तब-तब ननसाल पक्ष में कुछ कमजोरी करते हैं तथा शत्र-पक्ष में कुछ अड़चनों के साथ कार्य बनाते हैं। और यदि चन्द्रदेव, कन्या, वृश्चिक, मकर, इन तीन राशियों पर जब-जब कभी आवेंगे तब-तब कुछ अन्य विषयों के अतिरिक्त उपरोक्त विषयक फल भी प्रदान करते हैं।
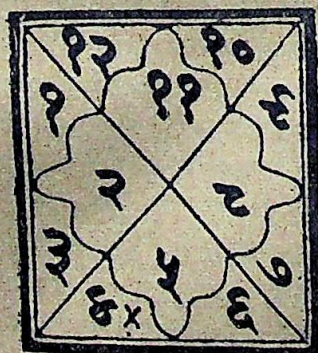
फलादेश नं० २७०

जिस-जिस समय में सिंह राशि पर, चन्द्र, बुद्ध, राहू, केतू, शनि, इन पाँच ग्रहों में से जब-जब कभी कोई आवेंगे तब-तब स्त्री, गृहस्थ तथा दैनिक रोजगार के सम्बन्ध में दिक्कतें पैदा करते हैं और यदि सूर्यदेव, कन्या, तुला, मकर, कर्क इन चार राशियों पर जब-जब कभी आवेंगे तब-तब भी कुछ अन्य विषयों के अतिरिक्त उपरोक्त विषयक फल भी प्रदान करते हैं।

फलादेश नं० २७१

जिस-जिस समय में कन्या-राशि पर शुक्र, चन्द्र राहू, केतू, इन चार ग्रहों में से जब-जब कभी कोई आवेंगे तब-तब किसी पुरा-तत्व संबंधित वस्तु की कमी या कमजोरी पैदा करते हैं तथा उदर का कुछ विकार व जीवन को कुछ अशान्ति करते हैं। और यदि बुद्ध-देव, मकर, मीन, कर्क इन तीन राशियों पर जब-जब कभी आवेंगे तब-तब कुछ अन्य विषयों के अतिरिक्त उपरोक्त विषयक फल भी प्रदान करते हैं।
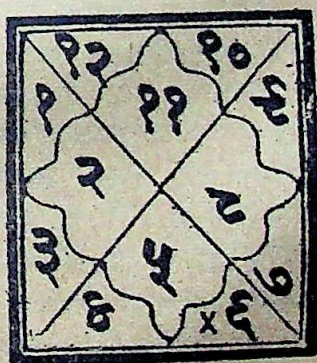
फलादेश नं० २७२

जिस-जिस समय में तुला राशि पर सूर्य, चन्द्र, बुद्ध, राहू, केतू इन ५ ग्रहों में से जब-जब कभी कोई आवेंगे तब-तब भाग्य स्थान में कुछ चिंता फिक्र पैदा करते हैं तथा धर्म और यश में कमी करते हैं और यदि शुक्रदेव मकर, कन्या, कर्क इन तीन राशियों पर जब-जब कभी आवेंगे तब-तब कुछ अन्य विषयों के अतिरिक्त उपरोक्त विषयक फल भी प्रदात करते हैं।

फलादेश नं० २७३

जिस-जिस समय में वृश्चिक-राशि पर बुद्ध, चन्द्र, राहू, केतू इन चार ग्रहों में से जब-जब कभी कोई आवेंगे तब-तब राज, समाज, कारबार व पिता स्थान के सम्बंधों में तथा मान, प्रतिष्ठा उन्नति आदि के सम्बन्धों में विघ्न एवं परेशानी उत्पन्न करते हैं और यदि मंगलदेव, कर्क, कन्या इन दो राशियों पर जब-जब कभी आवेंगे तब-तब कुछ अन्य विषयों के अतिरिक्त उपरोक्त विषयक फल भी प्रदान करते हैं।
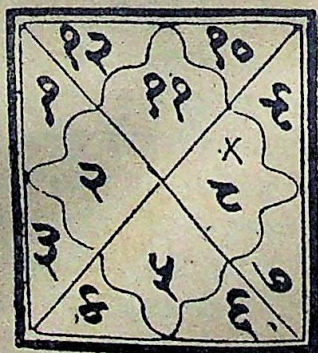
फलादेश नं० २७४

जिस-जिस समय में धन राशि पर राहू जब-जब कभी आवेंगे तब तब आमदनी के स्थान में आवश्यक पदार्थों के विषय में कुछ कमी व कुछ दिक्कतें पैदा करते हैं और यदि गुरुदेव, मकर या कन्या इन दो राशियों पर जब-जब कभी आवेंगे तब-तब कुछ अन्य विषयों के अतिरिक्त उपरोक्त विषयक फल भी प्रदान करते हैं।

फलादेश नं० २७५

जिस-जिस समय में मकर राशि पर चन्द्र, बुद्ध, गुरु, राहू, केतू इन पांच ग्रहों में से जब-जब कभी कोई आवेंगे तब-तब खर्च के स्थान में कुछ दिक्कतें व कमजोरी पैदा करते हैं और यदि शनिदेव, कर्क, कन्या, मेष इन ३ राशियों में जब-जब कभी आवेंगे तब-तब कुछ अन्य विषयों के अतिरिक्त उपरोक्त विषयक फल भी प्रदान करते हैं।
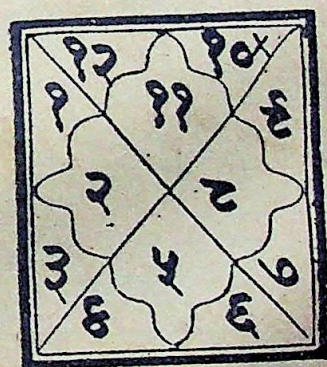
# मीन लग्नान्तर भाग्योदय कारक, नवग्रह व समय फल

## मीन लग्न फलादेश नम्बर २७६
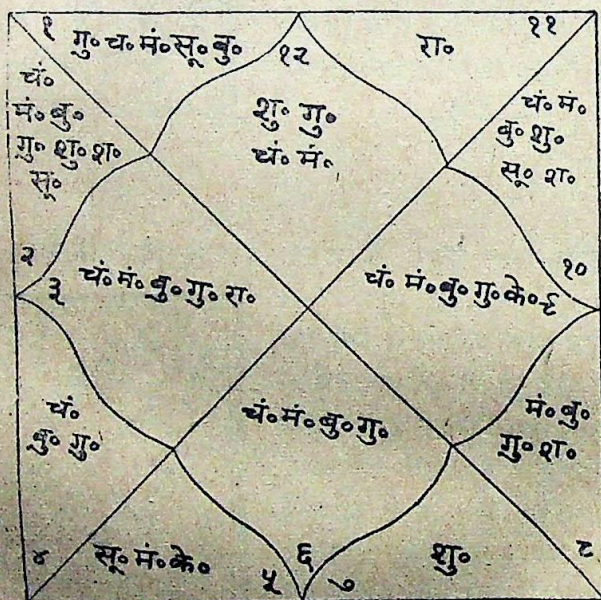
जिस-जिस समय में मीन लग्न वाले प्राणियों को ऊपर स्थित कुण्डली के अनुसार यह नवग्रह पंचांग गति की गोचर प्रणाली से जब-जब कभी एक ही समय में, प्राय: सभी ग्रह इस-इस प्रकार की राशियों में आवेंगे तब-तब ही मीन लग्न वाले प्राणियों का भाग्योदय विविध प्रकार से होता रहेगा।

सू०—वृष, सिंह, मकर, मेष इन ४ राशियों पर कहीं भी हों।

चं०—मीन, मेष, वृष, मिथुन, कर्क, कन्या, धन, मकर, इन राशियों पर कहीं भी हों।

मं०—मीन, मेष, वृष, मिथुन, सिंह, कन्या, वृश्चिक, मकर, धन इन राशियों पर कहीं भी हों।

बु०—मेष, वृष, मिथुन, कर्क, कन्या, वृश्चिक, धन, मकर इन राशियों पर कहीं भी हों।

गु०—मीन, मेष वृष, मिथुन, कर्क, कन्या, वृश्चिक, धन इन राशियों पर कहीं भी हों।

शु०—मीन, वृष, तुला, मकर इन राशियों पर कहीं भी हों।

श०—वृष, वृश्चिक, मकर इन राशियों पर कहीं भी हों।

रा०—मिथुन, कुम्भ इन दो राशियों पर कहीं भी हों।

के०—सिंह, धन इन दो राशियों पर कहीं भी हों।

अर्थात्—जिस-जिस साल, मास, पक्ष व दिनों में यह नवग्रह उपरोक्त-उपरोक्त राशियों में एक साथ जब-जब आवेंगे तब-तब ही भाग्यकारक व सुखकारक साबित होंगे किन्तु कोई भी ग्रह सूर्य से अस्त नहीं होना चाहिये क्योंकि उसका फल प्रबल नहीं होता है।

---

**नोट**—यदि राहू या केतू दोनों में से कोई भी जब-जब कभी मकर राशि पर आवेंगे तब-तब इस मीन लग्न वालों को धन के लाभ करने में सहयोग व सफलता देंगे किन्तु बुद्धि और संतान पक्ष में कुछ अशांति पैदा करेंगे।

## मीन लग्नांतर अनुकूल ग्रह-फलम

फलादेश नं० २७७

जिस-जिस समय में मीन राशि पर गुरु, शुक्र, मंगल, चन्द्र इन चार ग्रहों में से जब-जब कभी कोई आवेंगे, तब-तब देह को मान-सम्मान, प्रभाव, प्रतिष्ठा, गौरव, ऐश्वर्य, उन्नति, आत्मबल इत्यादि योग प्रदान करते हैं और यदि गुरु-देव, मीन, मेष, वृष, मिथुन, कर्क, सिंह, कन्या, धन वृश्चिक इन नौ, राशियों पर जब-जब कभी आवेंगे तब-तब ही कुछ अन्य विषयों के अतिरिक्त उपरोक्त विषयक फल भी प्रदान करते हैं।
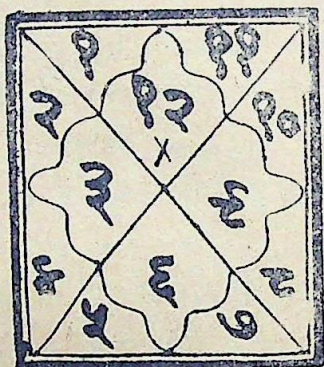
फलादेश नं० २७८

जिस-जिस समय में मेष राशि पर गुरु, मंगल, बुद्ध, चन्द्र, सूर्य इन पांच ग्रहों में से जब-जब कभी कोई आवेंगे तब-तब धन स्थान की वृद्धि तथा कौटुम्बिक प्रभाव पैदा करते हैं और यदि मंगलदेव, कर्क, सिंह, तुला, कुम्भ इन चार राशियों पर जब-जब कभी आवेंगे तब-तब कुछ अन्य विषयों के अतिरिक्त उपरोक्त विषयक फल भी प्रदान करते हैं।
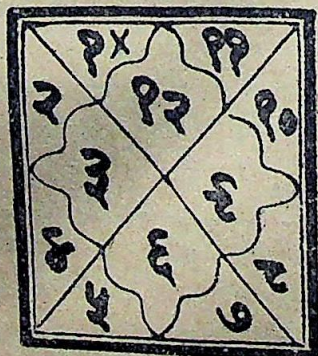
फलादेश न० २७९

जिस-जिस समय में वृष राशि पर गुरु, बुद्ध, मंगल, शुक्र, चन्द्र इन पांच ग्रहों में से जब-जब कभी कोई आवेंगे तब-तब भाई-बहन के स्थान में शक्ति पैदा करते हैं और बाहुबल के द्वारा किये हुये पुरुषार्थ की सफलता करते हैं और यदि शुक्रदेव, मिथुन, कर्क, वृश्चिक, धन, मकर, मीन, वृष इन सात राशियों में जब-जब कभी आवेंगे तब-तब भी कुछ अन्य विषयों के अतिरिक्त उपरोक्त विषयक फल भी प्रदान करते हैं।
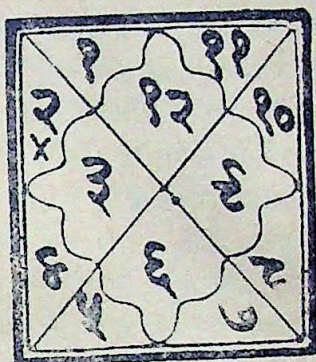
फलादेश नं० २८०

जिस-जिस समय में मिथुन राशि पर बुद्ध, चन्द्र, मंगल, गुरु इन चार ग्रहों में से जब-जब कभी कोई आवेंगे तब-तब मातृस्थान में सुख, सफलता, स्फूर्ति, मान और शांति तथा मकान भूमि आदि की शक्ति, सुख प्रदान करते हैं और बुद्धदेव, मिथुन, कर्क, कन्या, वृश्चिक, धन, मकर, वृष इन सात राशियों पर जब-जब कभी आवेंगे तब-तब भी कुछ अन्य विषयों के अतिरिक्त उपरोक्त विषयक फल भी प्रदान करते हैं।
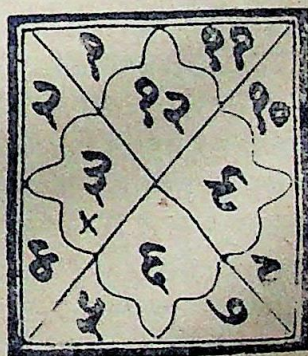
फलादेश नं० २८१

जिस-जिस समय में वृश्चिक राशि पर गुरु, बुद्ध, चन्द्र इन ३ ग्रहों में से जब-जब कभी कोई आवेंगे तब-तब संतान पक्ष में वविद्या, बुद्धि और विवेक के संबंध में उन्नति व सुख सफलता प्रदान करते हैं और यदि चन्द्रदेव, कर्क, कन्या, धन, मकर, मीन, मेष, वृष, मिथुन इन आठ राशियों पर जब-जब कभी आवेंगे तब-तब कुछ अन्य विषयों के अतिरिक्त उपरोक्त विषयक फल भी प्रदान करते हैं।
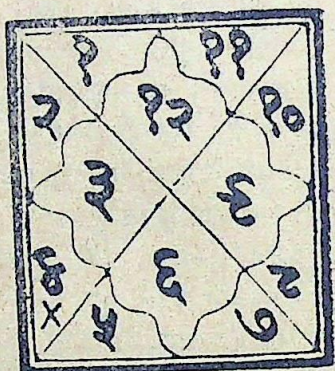
फलादेश न० २८२

जिस-जिस समय में सिंह राशि पर सूर्य, गुरु, मंगल इन ३ ग्रहों में से जब-जब कभी कोई आवेंगे तब-तब कुछ।दक्कतों के साथ न्यायोक्त रीति से शत्रुस्थान में विजय करते हैं और ननसाल पक्ष में प्रभाव पैदा करते हैं और राहु या केतू सिंह राशि पर आवेंगे तब-तब ननसाल पक्ष में तो कुछ हानि करते हैं परन्तु शत्रुपक्ष में विजय करने है और यदि सूर्यदेव, सिंह, वृश्चिक, धन, मकर, मीन, मेष, वृष इन सात राशियों पर जब-जब कभी आवेंगे तब-तब कुछ अन्य विषयों के अतिरिक्त उपरोक्त विषयक फल भी प्रदान करते हैं।
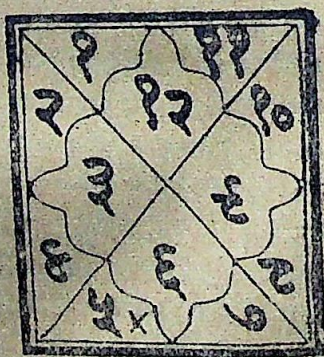
फलादेश नं० २८३

जिस-जिस समय में कन्या राशि पर बुद्ध, मंगल, गुरु, चन्द्र इन चार ग्रहों में से जब-जब कभी कोई आवेंगे तब-तब दैनिक रोजगार की लाइन में उन्नति व सफलता और स्त्री स्थान में सुख, सफलता व प्रभाव पैदा करते हैं और यदि बुद्धदेव, कन्या, वृश्चिक, धन, मकर, वृष, मिथुन, कर्क इन सात राशियों पर जब-जब कभी आवेंगे तब-तब कुछ अन्य विषयों के अतिरिक्त उपरोक्त विषयक फल भी प्रदान करते हैं।
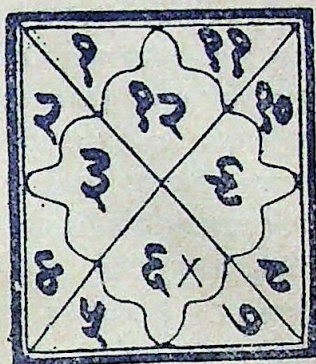
फलादेश नं० २८४

जिस-जिस समय में तुला राशि पर शुक्र, मंगल, गुरु, शनि-बुद्ध, चन्द्र इन ६ ग्रहों में से जब-जब कभी कोई आवेंगे तब-तब कुछ दिक्कतों के साथ किसी प्रकार के पुरातत्व सम्बन्धी वस्तु का लाभ तथा जीवन का लाभ पैदा करते हैं और यदि शुक्रदेव, तुला, वृश्चिक, धन, मीन, मकर, मेष, वृष, मिथुन, कर्क इन ९ राशियों पर जब-जब कभी आवेंगे तब-तब कुछ अन्य विषयों को छोड़कर उपरोक्त विषयक फल भी प्रदान करते हैं।
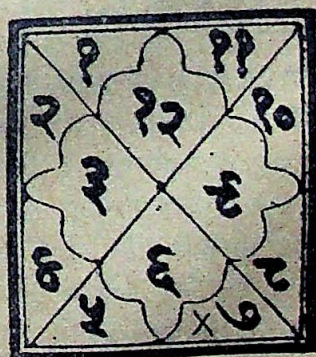
फलादेश नं० २८५

जिस-जिस समय में वृश्चिक राशि पर गुरु, मंगल, बुद्ध इन तीन गृहों में से जब-जब कभी कोई आवेंगे तब-तब भाग्य स्थान की वृद्धि तथा दैवी सफलतायें और धर्म व यश की प्राप्ति करते हैं और यदि मंगलदेव, वृश्चिक, धन, मकर, मीन, मिथुन, मेष, वृष, कन्या, सिंह इन ९ राशियों पर जब-जब कभी आवेंगे तब-तब कुछ अन्य विषयों के अतिरिक्त उपरोक्त विषयक फल भी प्रदान करते हैं।
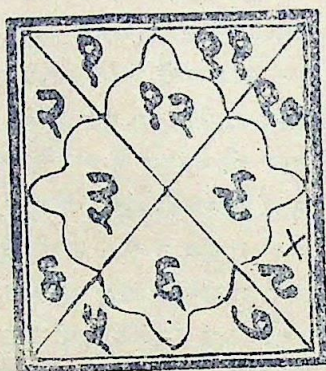
फलादेश नं० २८६

जिस-जिस समय में धन राशि पर गुरु, मंगल, बुद्ध, चन्द्र इन ४ ग्रहों में से जब-जब कभी कोई आवेंगे तब-तब कारबार के स्थान में व राज-समाज के स्थान में तथा मान-प्रतिष्ठा व पिता के स्थान सम्बन्ध में वृद्धि का योग पैदा करते हैं और यदि गुरुदेव, धन, मीन, मेष, कर्क, मिथुन, सिंह, कन्या, वृश्चिक इन ९ राशियों पर जब-जब कभी आवेंगे तब-तब कुछ अन्य विषयों के अतिरिक्त उपरोक्त विषयक फल भी प्रदान करते हैं।
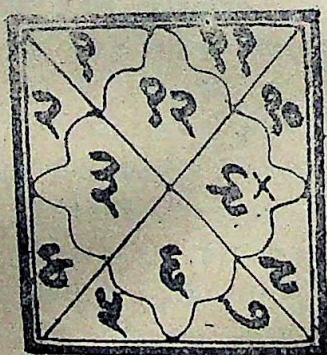
फलादेश नं० २८७

जिस-जिस समय में मकर राशि पर मंगल, शनि, बुद्ध, चन्द्र, शुक्र, सूर्य, राहू केतू इन ८ ग्रहों में से जब-जब कभी कोई आवेंगे तब-तब आमदनी की वृद्धि व आवश्यक पदार्थों की खूब प्राप्ति करते हैं और यदि शनिदेव, मकर, मीन, कन्या, वृष, मिथुन, कर्क, तुला, वृश्चिक, धन इन ९ राशियों पर जब-जब कभी आवेंगे तब-तब कुछ अन्य विषयों के अतिरिक्त उपरोक्त विषयक फल भी प्रदान करते हैं।
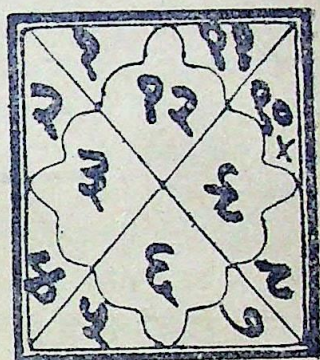
फलादेश नं० २८८

जिस-जिस समय में कुम्भ राशि पर शनि, मंगल, बुद्ध, चन्द्र, शुक्र, गुरु, इन ६ ग्रहों में से जब-जब कभी कोई आवेंगे तब-तब खर्च की अधिकता व सहूलियत करते हैं तथा बाहरी दूसरे स्थानों का सम्बन्ध, सहयोग लाभप्रद बनाते हैं। और यदि शनिदेव, मीन, वृष, मिथुन, कर्क, कन्या, तुला, वृश्चिक, धन, मकर, कुम्भ इन दस राशियों पर जब-जब कभी आवेंगे तब-तब कुछ अन्य विषयों के अतिरिक्त उपरोक्त विषयक फल भी प्रदान करते हैं।
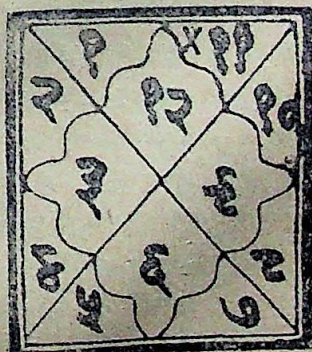
## मीन लग्नान्तर प्रतिकूल ग्रह फलम्

जिस-जिस समय में मीन राशि पर सूर्य, शनि, बुद्ध, राहू, केतू, इन ५ ग्रहों में से जब-जब कभी कोई आवेंगे तब-तब देह को फिक्र व कुछ कमजोरी पैदा करते हैं। और यदि गुरुदेव, सिंह, तुला, मकर, कुम्भ इन चार राशियों पर जब-जब कभी आवेंगे तब-तब कुछ अन्य विषयों के अतिरिक्त उपरोक्त विषयक फल भी प्रदान करते हैं।
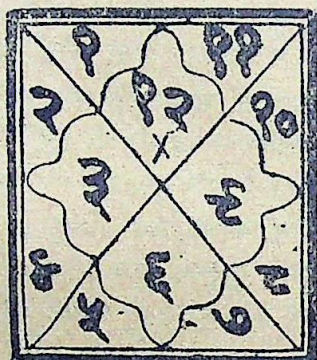
फलादेश नं० २९०

जिस-जिस समय में मेष राशि पर शनि, शुक्र, राहू, केतू इन चार ग्रहों में से जब-जब कभी कोई आवेंगे तब-तब धन स्थान की कुछ हानि व कौटुम्बिक क्लेश पैदा करते हैं। और यदि मंगलदेव, कर्क, सिंह, तुला इन चार राशियों पर जब-जब कभी आवेंगे तब-तब कुछ अन्य विषयों के अतिरिक्त उपरोक्त विषयक फल भी प्रदान करते हैं।

फलादेश नं० २६१

जिस-जिस समय में वृष राशि पर सूर्य, शनि, राहू, केतु, इन चार ग्रहों में से जब-जब कोई आवेंगे तब-तब बहन भाइयों के स्थान में कुछ वैमनस्यता व कुछ परेशानी पैदा करते हैं तथा बाहुबल के द्वारा किये गये कार्यों में कुछ थकान करके हिम्मत शक्ति देते हैं। और यदि शुक्रदेव, सिंह, कन्या, तुला, कुम्भ, मेष, इन पांच राशियों पर जब-जब कभी आवेंगे तब-तब कुछ अन्य विषयों के अतिरिक्त उपरोक्त विषयक फल भी प्रदान करते हैं।
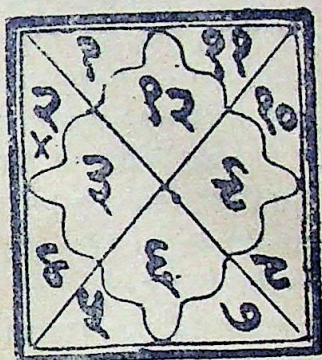
फलादेश नं० २६२

जिस-जिस समय में मिथुन राशि पर सूर्य, शुक्र, शनि, केतू, इन चार ग्रहों में से जब-जब कभी कोई आवेंगे, तब-तब मातृस्थान में व सुख-शांति के स्थान में कुछ कमी व कुछ परेशानी पैदा करते हैं। और यदि बुद्धदेव, सिंह, तुला, कुम्भ, मीन, मेष, इन पांच राशियों पर जब-जब कभी आवेंगे तब-तब कुछ अन्य विषयों के अतिरिक्त उपरोक्त विषयक फल भी प्रदान करते हैं।
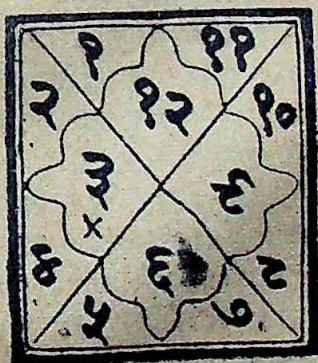
फलादेश नं० २६३

जिस-जिस समय में कर्क राशि पर मंगल, शुक्र, सूर्य, राहू, केतू, इन छै ग्रहों में से जब-जब कभी कोई आवेंगे तब-तब संतान पक्ष में व ज्ञान और विद्या के संबंध में कुछ चिंता, फिक्र व कुछ परेशानी का योग पैदा करते हैं। और यदि चन्द्रदेव, सिंह, तुला, वृश्चिक कुम्भ इन चार राशियों पर जब-जब कभी आवेंगे तब-तब कुछ अन्य विषयों के अतिरिक्त उपरोक्त विषयक फल भी प्रदान करते हैं।

फलादेश नं० २६४
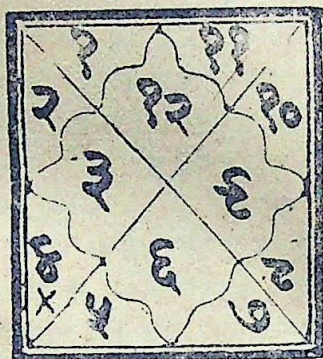
जिस-जिस समय में सिंह राशि पर, शुक्र, शनि, राहू, केतू, इन चार ग्रहों में से जब-जब कभी कोई आवेंगे तब-तब ननसाल पक्ष में कुछ कमी व शत्रु पक्ष में कुछ दिक्कतों के साथ कामयाबी करते हैं और चन्द्रमा, बुद्ध, इन दोनों में से कोई आवेंगे तब-तब ननसाल पक्ष में कुछ परेशानी करते हैं। और यदि सूर्यदेव, तुला, कुम्भ, इन दो राशियों पर जब-जब कभी आवेंगे तब-तब कुछ अन्य विषयों के अतिरिक्त ननसाल पक्ष व शत्रुपक्ष दोनों में कमी या असुविधा पैदा करते हैं।

फलादेश नं० २९५

जिस-जिस समय में कन्या राशि पर शुक्र, सूर्य, शनि, राहू, केतू, इन पांच ग्रहों में से जब-जब कभी कोई आवेंगे तब-तब स्त्री स्थान में व दैनिक रोजगार की लाइन में कुछ परेशानियाँ पैदा करते हैं। और यदि बुद्धदेव, तुला, कुम्भ, मीन, मेष, सिंह इन पांच राशियों पर जब-जब कभी आवेंगे तब-तब कुछ अन्य विषियों के अतिरिक्त उपरोक्त विषयक फल भी प्रदान करते हैं।
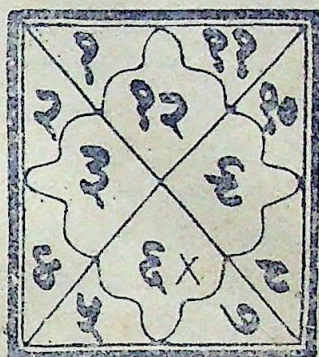
फलादेश नं० २९६

जिस-जिस समय में तुला राशि पर सूर्य, राहू, केतू, इन तीन ग्रहों में से जब-जब कभी कोई आवेंगे तब-तब कुछ उदर का विकार तथा किसी प्रकार कुछ पुरातत्व संबंधी वस्तु की हानि व जीवन को अशांतिप्रद योग पैदा करते हैं। और यदि शुक्रदेव, कुम्भ, सिंह, कन्या इन तीन राशियों पर जब-जब कभी आवेंगे तब-तब अन्य विषयों के अतिरिक्त उपरोक्त विषयक फ़ल भी प्रदान करते हैं।
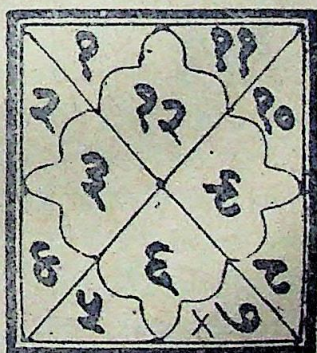
फलादेश नं० २९७

जिस-जिस समय में वृश्चिक राशि पर शुक्र, सूर्य, चन्द्र, राहू, केतू, इन ५ ग्रहों में से जब-जब कभी कोई आवेंगे तब-तब भाग्य स्थान में व धर्म स्थान में कुछ कमजोरी व कुछ अपयश की रूपरेखा पैदा करते हैं और यदि मंगलदेव, कुम्भ, कर्क, तुला इन चार राशियों पर जब-जब कभी आवेंगे तब-तब ही कुछ अन्य विषयों के अतिरिक्त उपरोक्त विषयक फल भी प्रदान करते हैं।
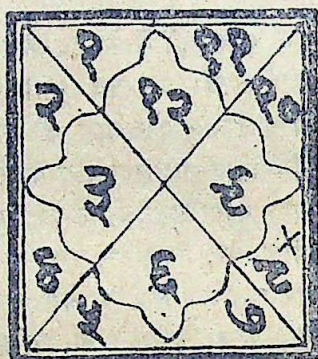
फलादेश नं० २९८

जिस-जिस समय में धन राशि पर शुक्र, सूर्य, शनि, राहू इन चार ग्रहों में से जब-जब कभी कोई आवेंगे तब-तब पिता स्थान में व कारबार के स्थान में व राज, समाज, प्रतिष्ठा, मान आदि के स्थान में कुछ त्रुटि व खराबी व कुछ परेशानी पैदा करते हैं और यदि गुरुदेव, मकर, कुम्भ, तुला इन ३ राशियों में जब-जब कभी आवेंगे तब-तब कुछ अन्य विषयों के अतिरिक्त उपरोक्त विषयक फल भी प्रदान करते हैं।
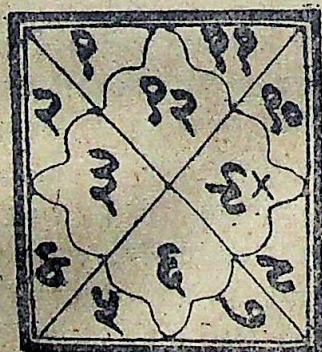
फलादेश नं० २६६

जिस-जिस समय में मकर राशि पर गुरूदेव जब-जब कभी आवेंगे तब-तब आमदनी और आवश्यक पदार्थों की प्राप्ति के सम्बन्ध के कमजोरी पैदा करते हैं और यदि शनिदेव, कुम्भ, सिंह इन दो राशियों पर जब-जब कभी आवेंगे तब-तब कुछ अन्य विषियों के अतिरिक्त उपरोक्त विषयक फल भी प्रदान करते हैं।
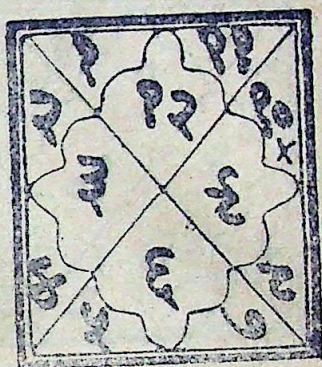
फलादेश नं० ३००

जिस-जिस समय में कुम्भ राशि पर सूर्य, राहू, केतू इन ३ ग्रहों में से जब-जब कभी कोई आवेंगे तब-तब खर्च के स्थान में कुछ कमजोरी व कुछ परेशानी तथा बाहरी दूसरे स्थानों के संबंध में कुछ खराबी पैदा करते हैं और यदि शनिदेव, मेष, सिंह इन दो राशियों पर जब-जब कभी आवेंगे तब-तब कुछ अन्य विषयों के अतिरिक्त उपरोक्त विषयक फल भी प्रदान करते हैं।
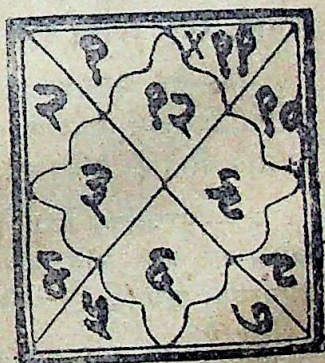
## मेष लग्न ग्रह ज्ञान
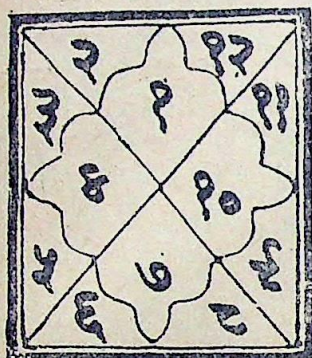
मेष लग्न वाले प्राणियों की कुण्डलियों में कौन-कौन ग्रह खास तौर से किस-किस विषय का फल प्रदान करने के अधिकारी हैं।

सू०–विद्या, सन्तान, वाणी, ज्ञान, विवेक, तेज इत्यादि योगों की शक्ति प्रदान करते हैं।

चं०—मनोबल का सुख, माता, मातृभूमि, सुख, मकान, जमीन, स्नेही व्यक्ति इत्यादि योगों की शक्ति प्रदान करते हैं।

मं०—देह, आत्मबल, स्वरूप, आयु, मृत्यु, पुरातत्व शक्ति, ख्याति, दिनचर्या, उदर का सम्बन्ध, दूर के स्थानों का सम्बन्ध इत्यादि योगों की शक्ति प्रदान करते हैं।

बु०—पुरषार्थिक कार्य, बाहुबल की शक्ति, बहन, भाई, विवेक-बल, शत्रु, रोग, पाप, झगड़ा, ननसाल, भाई बहन की वैमनस्यता इत्यादि योगों की शक्ति प्रदान करते हैं।

गु०—भाग्य, धर्म, यश, दैवी लाभ, खर्च, दूसरे स्थान का सम्बन्ध, हृदयबल की दूरदर्शिता इत्यादि योगों की शक्ति प्रदान करते हैं।

शु०—धनकोष, कुटुम्ब, स्त्री, दैनिक रोजगार, भोग, धन-वृद्धि की चतुराई इत्यादि योगों की शक्ति प्रदान करते हैं।

श०—पिता, राज्य, कारबार, मान, प्रतिष्ठा, धन लाभ प्राप्ति आवश्यक पदार्थ लाभ इत्यादि योगों की शक्ति प्रदान करते हैं।

रा०—दिमागी परेशानी, दिमागी गुप्त प्रपंच, कुछ कष्ट, कुछ कमी, दुर्लभ वस्तु को प्राप्त करने की सूझ इत्यादि योगों की शक्ति प्रदान करते हैं।

के०—बाहुबल की व हृदयबल की गुप्त शक्ति, कुछ कष्ट, कुछ कमी, दुर्लभ वस्तु को प्राप्त करने की हिम्मत इत्यादि योगों की शक्ति प्रदान करते हैं।

नोट—मेष लग्न वाले व्यक्तियों को ऊपर लिखे प्रकरणों के सम्बन्ध में कौन-कौन ग्रह, राशि और स्थान तिथि के भेद से व दृष्टि से किस-किस व्यक्ति को कौन-कौन फल निश्चित रूप से प्रदान करते हैं। इसकी पूरी-पूरी जानकारी हमारी भृगुसंहिता पद्धति में कुण्डली नं० १ से लेकर १०८ तक में देखिए।
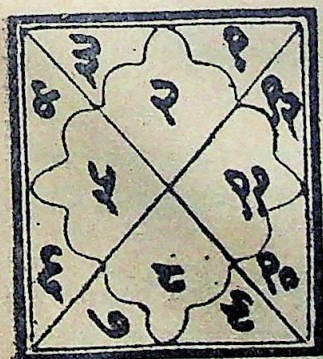
## वृष लग्न ग्रह ज्ञान

वृष लग्न वाले प्राणियों की कुण्डलियों में कौन-कौन ग्रह खास तौर से किस-किस विषय का फल प्रदान करने के अधिकारी हैं।



सू०—माता, मातृभूमि, मकान, जमीन, सुख, तेज, स्नेही मनुष्य इत्यादि योगों की शक्ति प्रदान करते हैं।

चं०—बहन, भाई, मनोबल, बाहुबल, व्यक्तित्व, ताकत इत्यादि योगों की शक्ति प्रदान करते हैं।

मं०—स्त्री, दैनिक रोजगार, भोग, गृहस्थ, खर्च, दूसरे स्थानों का सम्बन्ध इत्यादि योगों की शक्ति प्रदान करते हैं।

बु०—विद्या, सन्तान, विवेक, वाणी, धनकोष, कुटुम्ब इत्यादि योगों की शक्ति प्रदात करते हैं।

गु०—आमदनी, आवश्यक पदार्थ. आयु, मृत्यु, पुरातत्व शक्ति, उदर सम्बन्ध, दिनचर्या, दूर के स्थानों का सम्बन्ध, बड़प्पन इत्यादि योगों की शक्ति प्रदान करते हैं।

शु०—देह, स्वरूप, शत्रु ख्याति, ननसाल, झंझट, रोग, पाप, दिक्कत, प्रभाव इत्यादि योगों की शक्ति प्रदान करते हैं।

श०—भाग्य, धर्म, यश, कर्म, राज्य, पिता, कारबार, दैवी सफलता, वरक्कत, मान, प्रतिष्ठा इत्यादि योगों की शक्ति प्रदान करते हैं।

रा०—दिमागी चिंता, दिमागी गुप्त प्रपंच, कुछ कष्ट, कुछ कमी, दुर्लभ वस्तु को प्राप्त करने की सूझ इत्यादि योगों की शक्ति प्रदान करते हैं।

के०—बाहुबल की व हृदयबल की गुप्त शक्ति, कुछ कष्ट, कुछ कमी, दुर्लभ वस्तु को प्राप्त करने की हिम्मत इत्यादि योगों की शक्ति प्रदान करते हैं।

नोट—वृष लग्न वाले व्यक्तियों को ऊपर लिखे प्रकरणों के सम्बन्ध में कौन-कौन ग्रह, राशि और स्थान स्थिति के भेद से किस-किस व्यक्ति को कैसा-कैसा फल निश्चित रूप से प्रदान करते हैं इसकी पूरी-पूरी जानकारी हमारी भृगुसंहिता पद्धति में कुण्डली नं० १०६ से लेकर २१६ तक में देखिये।

## मिथुन लग्न ग्रह ज्ञान
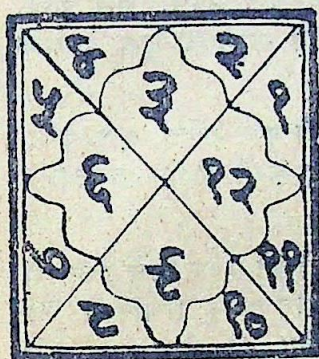
मिथुन लग्न वाले प्राणियों की कुण्डलियों में कौन-कौन ग्रह खास तौर से किस-किस विषय का फल प्रदान करने के अधिकारी हैं।

सू०—भाई, बहन, बाहुबल, तेजबल, डीलडौल, हिम्मत, मेहनत इत्यादि योगों की शक्ति प्रदान करते हैं।

चं०—धनबल, मनोयोग, कुटुम्ब इत्यादि योगों की शक्ति प्रदान करते हैं।

मं०—आमदनी, आवश्यक पदार्थ, रोग, शत्रु झगड़े-झंझट, ननसाल, क्रोध, पाप इत्यादि योगों की शक्ति प्रदान करते हैं।

बु०—देह, स्वरूप, आत्मबल, माता, मातृभूमि, ख्याति, मकान, जमीन, सुख इत्यादि योगों की शक्ति प्रदान करते हैं।

गु०—स्त्री, दैनिक रोजगार, भोग, ऐश्वर्य, राज, समाज, मान, प्रतिष्ठा, पिता, कारबार, हृदयकर्म इत्यादि योगों की शक्ति प्रदान करते हैं।

शु०—विद्या, संतान, विवेक, वाणी, ज्ञान, चतुराई, खर्च, दूसरे स्थानों का सम्बन्ध इत्यादि योगों की शक्ति प्रदान करते हैं।

श०—आयु, मृत्यु, पुरातत्व शक्ति, दिनचर्या, भाग्य, धन, यश, दैवी लाभ, कष्ट, दूर के स्थानों का संबंध इत्यादि योगों की शक्ति प्रदान करते हैं।

रा०—दिमागी परेशानी, दिमागी गुप्त प्रपंच, कुछ कष्ट, कुछ कमी, किसी दुर्लभ वस्तु को प्राप्त करने की सूझ इत्यादि योगों की शक्ति प्रदान करते हैं।

के०—बाहुबल को व हृदयबल की गुप्त शक्ति, कुछ कष्ट, कुछ कमी, किसी दुर्लभ वस्तु को प्राप्त करने की हिम्मत इत्यादि योगों की शक्ति प्रदान करते हैं।

नोट—मिथुन लग्न वाले व्यक्तियों को ऊपर लिखे प्रकरणों के सम्बन्ध में कौन-कौन ग्रह, राशि और स्थान स्थिति के भेद से व दृष्टि भेद से किस-किस व्यक्ति को कैसा-कैसा फल निश्चित रूप से प्रदान करते हैं, इसकी पूरी-पूरी जानकारी हमारी भृगुसंहिता पद्धति में कुण्डली नं० २१७ से ३२४ तक में देखिये।
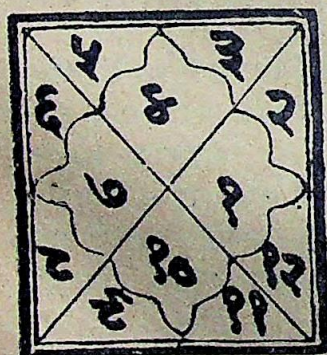
## कर्क लग्न ग्रह ज्ञान

कर्क लग्न वाले प्राणियों की कुण्डलियों में कौन-कौन ग्रह खास तौर से किस-किस विषय का फल प्रदान करने के अधिकारी हैं।

सू०—धनकोष, कुटुम्ब, तेज इत्यादि योगों की शक्ति प्रदान करते हैं।

चं०—देह, स्वरूप, आत्मबल, मनोबल, ख्याति इत्यादि योगों की शक्ति प्रदान करते हैं।

मं०—संतान, विद्या, वाणी, विवेक, राजबुद्धि, पिता, कारबार मान प्रतिष्ठा, ऐश्वर्य, पदवी इत्यादि योगों की शक्ति प्रदान करते हैं।

बु०—बाहुबल, विवेकबल, भाई, बहन, खर्च दूसरे स्थानों का सम्बन्ध, वीरत्व में कुछ कमजोरी इत्यादि योगों की शक्ति प्रदान करते हैं।

गु०—भाग्य, धर्म, यश, हृदयबल, दैवबल, पाप, पुण्य, शत्रु, ननसाल, झगड़े झंझट, बड़प्पन इत्यादि योगों की शक्ति प्रदान करते हैं।

शु०—माता, मातृभूमि, मकान, जमीन, सुख, आमद, आवश्यक पदार्थ, लाभ, सुख प्राप्ति की चतुराई इत्यादि योगों की शक्ति प्रदान करते हैं।

श०—स्त्री, गृहस्थ, दैनिक रोजगार, आयु, मृत्यु, दिनचर्या, गूढ़शक्ति, पुरातत्व शक्ति, दूर के स्थानों का सम्बन्ध, गृहस्थ कष्ट इत्यादि योगों की शक्ति प्रदान करते हैं।

रा०—दिमागी परेशानी, दिमागी गुप्त प्रपंच, कुछ कमी, कुछ कष्ट, किसी दुर्लभ वस्तु को प्राप्त करने की सूझ इत्यादि योगों की शक्ति प्रदान करते हैं।

के०—बाहुबल व हृदयबल की गुप्त शक्ति, कुछ कमी, कुछ कष्ट, किसी दुर्लभ वस्तु को प्राप्त करने की हिम्मत इत्यादि योगों की शक्ति प्रदान करते हैं।

नोट—कर्क लग्न वाले व्यक्तियों को ऊपर लिखे प्रकरणों के सम्बन्ध में कौन २ ग्रह, राशि और स्थान स्थिति के भेद से व दृष्टि भेद से किस २ व्यक्ति को कैसा-कैसा फल निश्चित रूप से प्रदान करते हैं। इसकी पूरी-पूरी जानकारी हमारी भृगुसंहिता पद्धति में कुण्डली नं० ३२५ से ४३२ तक में देखिए।

## सिंह लग्न ग्रह ज्ञान
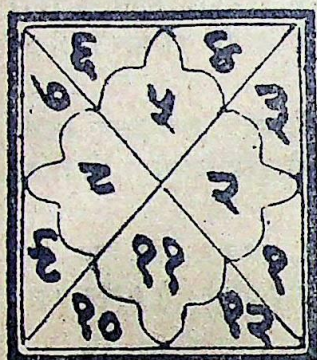
सिंह लग्न वाले प्राणियों की कुण्डलियों में कौन-कौन ग्रह खास तौर से किस-किस विषय का फल प्रदान करने के अधिकारी हैं।

सू०—देह स्वरूप, आत्मबल, तेजबल, ख्याति इत्यादि योगों की शक्ति प्रदान करते हैं।

चं०— खर्च, दूसरे बाहरी स्थानों का सम्बन्ध, मनोबल की दूरदर्शिता इत्यादि योगों की शक्ति प्रदान करते हैं।

मं०—माता, मातृभूमि, मकान, जायदाद, सुख, स्नेही बन्धु, भाग्य, धर्म, यश, शांति, दैवबल की शक्ति इत्यादि योगों की शक्ति प्रदान करते हैं।

बु०—धनकोष, कुटुम्ब, आमदनी, आवश्यक वस्तु, धन सम्बन्धी विवेक इत्यादि योगों की शक्ति प्रदान करते हैं।

गु०—विद्या, संतान, वाणी, हृदय में जीवन-निर्वाहक ज्ञान, आयु, मृत्यु, पुरातत्व शक्ति, दूर के स्थानों का सम्बन्ध, चिंता, बुद्धि में अहंकारता इत्यादि योगों की शक्ति प्रदान करते हैं।

शु०—भाई, बहन, बाहुबल की कार्य शक्ति, प्रभाव, पिता, मान, प्रतिष्ठा, राजकाज, कारबार, उन्नति करने की चतुराई, इत्यादि योगों की शक्ति प्रदान करते हैं।

श०—स्त्री, दैनिक रोजगार, भोग, रोग, झगड़े-झंझट, शत्रु, ननसाल, परिश्रम, पाप, गृहस्थ झंझट, हठयोग इत्यादि योगों की शक्ति प्रदान करते हैं।

रा०—दिमागी परेशानी, दिमागी गुप्त प्रपंच, कुछ कमी, कुछ कष्ट, किसी दुर्लभ वस्तु को प्राप्त करने की सूझ इत्यादि योगों की शक्ति प्रदान करते हैं।

के०—बाहुबल व हृदयबल की गुप्त शक्ति, कुछ कमी, कुछ कष्ट, किसी दुर्लभ वस्तु को प्राप्त करने की हिम्मत इत्यादि योगों की शक्ति प्रदान करते हैं।

नोट—सिंह लग्न वाले व्यक्तियों को ऊपर लिखे प्रकरणों के सम्बन्ध में कौन-कौन ग्रह, राशि और स्थान स्थिति के भेद से व दृष्टि भेद से किस-किस व्यक्ति को कैसा-कैसा फल निश्चित रूप से प्रदान करते हैं, इसकी पूरी-पूरी जानकारी हमारी भृगुसंहिता पद्धति में कुण्डली नं० ४३३ से ५४० तक में देखिए।

## कन्या लग्न ग्रह ज्ञान
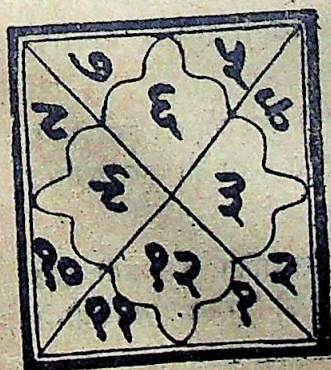
कन्या लग्न वाले प्राणियों की कुण्डलियों में कौन-कौन ग्रह खास तौर से किस-किस विषय का फल प्रदान करने के अधिकारी हैं।

सू०—सर्व दूसरे बाहरी स्थानों का सम्बन्ध, तेज इत्यादि योगों की शक्ति प्रदान करते हैं।

चं०—आमदनी, आवश्यक पदार्थ, लाभ प्राप्ति का मनोबल, इत्यादि योगों की शक्ति प्रदान करते हैं।

मं०—भाई, बहन, बाहुबल की शक्ति, आयु, मृत्यु, दिनचर्या पुरातत्व शक्ति, महनत, दूरदेश का सम्बन्ध, कठिनाई इत्यादि योगों की शक्ति प्रदान करते हैं।

बु०—देह, स्वरूप, आत्मबल, कर्मबल, विवेकबल, पिता, राज, समाज, मान-प्रतिष्ठा, कारबार, ख्याति, पदवी, इत्यादि योगों की शक्ति प्रदान करते हैं।

गु०—माता, मातृभूमि, मकान, जायदाद, भोग, सुख, स्नेही बन्धु, स्त्री, दैनिक रोजगार, गृहस्थ सम्बन्धी मनोबल इत्यादि योगों की शक्ति प्रदान करते हैं।

शु०—धनकोष, कुटुम्ब, भाग्य, धर्म, यश, दैवीलाभ उन्नति की चतुराई इत्यादि योगों की शक्ति प्रदान करते हैं।

श०—विद्या, संतान, वाणी, बुद्धि की तिरछी चाल, जिद्द, शत्रु, ननसाल, रोग, झगड़े, पाप, परेशानी इत्यादि योगों की शक्ति प्रदान करते हैं।

रा०—दिमागी परेशानी, दिमागी गुप्त प्रपंच, कुछ कमी, कुछ कष्ट, किसी दुर्लभ वस्तु को प्राप्त करने की सूझ इत्यादि योगों की शक्ति प्रदान करते हैं।

के०—बाहुबल व हृदयबल की गुप्त शक्ति, कुछ कमी, कुछ कष्ट, किस दुर्लभ वस्तु को प्राप्त करने की हिम्मत इत्यादि योगों की शक्ति प्रदान करते हैं।

नोट—कन्या लग्न वाले व्यक्तियों को ऊपर लिखे प्रकरणों के सम्बन्ध में कौन-कौन ग्रह, राशि और स्थान स्थिति के भेद भेव

दृष्टि भेद से किस-किस व्यक्ति को कैसा-कैसा फल निश्चित रूप से प्रदान करते हैं, इसकी पूरी-पूरी जानकारी हमारी भृगुसंहिता पद्धति में कुण्डली नं० ५४१ से ६४८ तक में देखिये।

## तुला लग्न ग्रह ज्ञान

तुला लग्न वाले प्राणियों की कुण्डलियों में कौन-कौन ग्रह खास तौर से किस-किस विषय का फल प्रदान करने के अधिकारी हैं।
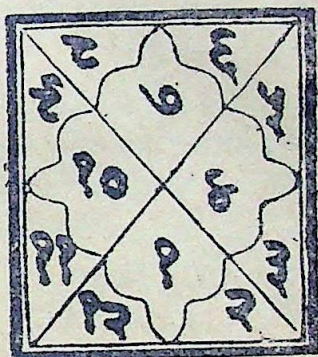
सू०—आमदनी, आवश्यक पदार्थ, लाभ सम्बन्धी प्रकाश इत्यादि योगों की शक्ति प्रदान करते हैं।

चं०—पिता, राज समाज, कारबार, मान-प्रतिष्ठा, मनोबल, कर्म, प्रभुता इत्यादि योगों की शक्ति प्रदान करते हैं।

मं०—धनकोष, कुटुम्ब, स्त्री, दैनिक रोजगार, गृहस्थ बंधन की शक्ति, भोग इत्यादि योगों की शक्ति प्रदान करते हैं।

बु०—भाग्य, धर्म, दैवी लाभ, खर्च, दूसरे बाहरी स्थानों का सम्बन्ध, दूरंदेशी, विवेक, भाग्य व धर्म की कुछ कमजोरी इत्यादि योगों की शक्ति प्रदान करने के अधिकारी हैं।

गु०—भाई, बहन, बाहुबल की शक्ति, शत्रु, ननसाल, रोग, पाप, परिश्रम, हृदयबल इत्यादि योगों की शक्ति प्रदान करते हैं।

शु०—देह, स्वरूप, आत्मबल, ख्याति, आयु, मृत्यु, दिनचर्या, पुरातत्व सम्बन्ध, गूढ़ युक्ति, कठिनाई, दूर के स्थानों का संबन्ध, इत्यादि योगों की शक्ति प्रदान करते हैं।

श०—माता, जन्म भूमि, मकान, जायदाद, सुख, स्नेही बन्धु, विद्या, सन्तान, वाणी, शान्ती इत्यादि योगों की शक्ति प्रदान करते हैं।

रा०—दिमागी परेशानी, दिमागी गुप्त प्रपंच, कुछ कमी, कुछ कष्ट, किसी दुर्लभ वस्तु को प्राप्त करने की सूझ इत्यादि योगों की शक्ति प्रदान करते हैं।

के०—बाहुबल व हृदयबल की गुप्त शक्ति, कुछ कमी, कुछ कष्ट, किसी दुर्लभ वस्तु को प्राप्त करने की हिम्मत इत्यादि योगों की शक्ति प्रदान करते हैं।

**नोट**—तुला लग्न वाले व्यक्तियों को ऊपर लिखे प्रकरणों के सम्बन्ध-में कौन-कौन ग्रह, राशि और स्थान स्थिति के भेद से व दृष्टि भेद से किस-किस व्यक्ति को कैसा-कैसा फल निश्चित रूप से प्रदान करते हैं, इसकी पूरी-पूरी जानकारी हमारी भृगु-संहिता पद्धति में कुण्डली नं० ६४६ से ७५६ तक में देखिये।

## वृश्चिक लग्न ग्रह ज्ञान

वृश्चिक लग्न वाले प्राणियों की कुण्डलियों में कौन-कौन ग्रह खास तौर से किस-किस विषय का फल प्रदान करने के अधिकारी हैं।

सू०—पिता, राज, समाज, पदवी, ऐश्वर्य, मान, प्रतिष्ठा, कारबार, कर्म का प्रकाश इत्यादि योगों की शक्ति प्रदान करते हैं।

चं०—भाग्य, धर्म, यश, दैवी सफलता, मनोबल, तत्वज्ञान इत्यादि योगों की शक्ति प्रदान करते हैं।

मं०—देह, स्वरूप, आत्मबल, ख्याति, शक्ति, शत्रु, रोग, ननसाल, झगड़े-झंझट, परिश्रम, पाप इत्यादि योगों की शक्ति प्रदान करते हैं।

बु०—आमदनी, आवश्यक पदार्थ, आयु, मृत्यु, दिनचर्या, पुरातत्व लाभ, गूढ़ विवेक, कठिनाई, दूर के स्थानों का सम्बन्ध इत्यादि योगों की शक्ति प्रदान करते हैं।

गु०—धनकोष, कुटुम्ब, विद्या, सन्तान, वाणी, हृदय का ज्ञान, धनवृद्धि की बुद्धि इत्यादि योगों की शक्ति प्रदान करते हैं।

शु०—स्त्री, दैतिक रोजगार, भोग, खर्च, बाहरी स्थानों का सम्पर्क, दैनिक कार्य की चतुराई व कमी इत्यादि योगों की शक्ति प्रदान करते हैं।

श०—माता, जन्म भूमि, मकान, जायदाद, सुख, भाई बहन, बाहुबल की शक्ति, धैर्य इत्यादि योगों की शक्ति प्रदान करते हैं।

रा०—दिमागी परेशानी, दिमागी गुप्त प्रपंच, कुछ कमी, कुछ कष्ट, किसी दुर्लभ वस्तु को प्राप्त करने की सूझ इत्यादि योगों की शक्ति प्रदान करते हैं।

के०—बाहुबल व हृदयबल की गुप्त शक्ति, कुछ कमी, कुछ कष्ट, किसी दुर्लभ वस्तु को प्राप्त करने की हिम्मत इत्यादि योगों की शक्ति प्रदान करते हैं।

**नोट**—वृश्चिक लग्न वाले व्यक्तियों को ऊपर लिखे प्रकरणों के सम्बन्ध में कौन-कौन ग्रह, राशि और स्थान स्थिति के भेद से व दृष्टि भेद से किस-किस व्यक्ति को कैसा-कैसा फल निश्चित रूप से प्रदान करते हैं, इसकी पूरी-पूरी जानकारी हमारी भृगु-संहिता पद्धति में कुण्डली नं० ७५७ से ८६४ तक में देखिए।

## धन लग्न ग्रह ज्ञान

धन लग्न वाले प्राणियों की कुण्डली में कौन-कौन ग्रह खास तौर से किस-किस विषय का फल प्रदान करने के अधिकारी हैं।
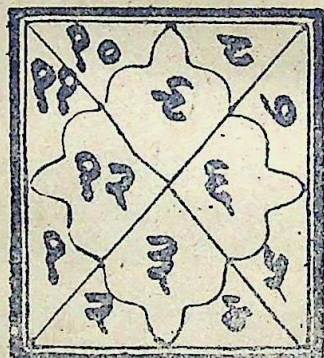
सू०—भाग्य, धर्म, यश, दैवी सफलता, तेज दूरदर्शिता इत्यादि योगों की शक्ति प्रदान करते हैं।

च०—आयु, मृत्यु, पुरातत्व शक्ति का मनोबल, दिनचर्या, दूर के स्थानों का सम्बन्ध इत्यादि योगों की शक्ति प्रदान करते हैं।

मं०—विद्या, सन्तान, वाणी, खर्च, बाहरी स्थानों का सम्बन्ध, बुद्धि व सन्तान पक्ष की कुछ कमजोरी व हेकड़ी इत्यादि योगों की शक्ति प्रदान करते हैं।

बु०—पिता, राज समाज, कारबार, मान, प्रतिष्ठा, दैनिक रोजगार, स्त्री, भोग, लौकिक, विवेक शक्ति इत्यादि योगों की शक्ति प्रदान करते हैं।

गु०—देह, स्वरूप, ख्याति, आत्मबल, हृदयबल की शांति, माता, सुख, मकान, जायदाद इत्यादि योगों की शक्ति प्रदान करते हैं।

शु०—आमदनी, आवश्यक पदार्थ, शत्रु, रोग, ननसाल, पाप, परिश्रम, गुप्त युक्ति व चतुराई, झगड़े-झंझट इत्यादि योगों की शक्ति प्रदान करते हैं।

श०—धनकोष, कुटुम्ब, भाई बहन, बाहुबल, वीरत्व, कीमती मेहनत इत्यादि योगों की शक्ति प्रदान करते हैं।

रा०—दिमागी परेशानी, दिमागी गुप्त प्रपंच, कुछ कमी, कुछ कष्ट, किसी दुर्लभ वस्तु को प्राप्त करने की सूझ-बूझ इत्यादि योगों की शक्ति प्रदान करते हैं।

के०—बाहुबल व हृदयबल की गुप्त शक्ति, कुछ कमी, कुछ कष्ट, किसी दुर्लभ वस्तु को प्राप्त करने की हिम्मत इत्यादि योगों की शक्ति प्रदान करते हैं।

**नोट**—धन लग्न वाले व्यक्तियों को ऊपर लिखे प्रकरणों के सम्बन्ध में कौन-कौन ग्रह, राशि और स्थान स्थिति के भेद से व दृष्टि भेद से किस-किस व्यक्ति को कैसा-कैसा फल निश्चित रूप से प्रदान करते हैं इसकी पूरी-पूरी जानकारी हमारी भृगुसंहिता पद्धति में कुण्डली नं० ८६५ से ९७२ तक में देखिये।
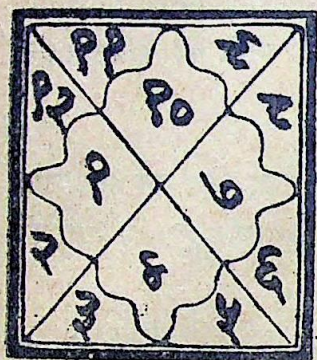
## मकर लग्न ग्रह ज्ञान

मकर लग्न वाले प्राणियों की कुण्डलियों में कौन-कौन ग्रह खासतौर से किस-किस विषय का फल प्रदान करने के अधिकारी हैं।

सू०—आयु, मृत्यु, दिनचर्या, उदर संबंध, पुरातत्व सम्बन्ध, तेजी, गूढ़ प्रकाश इत्यादि योगों की शक्ति प्रदान करते हैं।

चं०—स्त्री, दैनिक रोजगार, भोग, गृहस्थिक मनोयोग इत्यादि योगों की शक्ति प्रदान करते हैं।

मं०—माता, मातृभूमि, सुख, मकान, जायदाद, आवश्यक पदार्थ, आमदनी इत्यादि योगों की शक्ति प्रदान करते हैं।

बु०—भाग्य, धर्म, पुण्य, पाप, यश, अपयश, शत्रु, ननसाल, रोग, दैवी विजय, परिश्रम, झगड़े-झंझट, पेचीदा विवेक इत्यादि योगों की शक्ति प्रदान करते हैं।

गु०—भाई बहन, बाहुबल, खर्च, बाहरी स्थानों का संबंध, हृदयबल की कुछ कमजोरी इत्यादि योगों की शक्ति प्रदान करते हैं।

शु०—विद्या, संतान, बुद्धि की कला, पिता, राज, समाज, कारबार, मान, प्रतिष्टा, पदवी, कायदे कानून की चतुराई

इत्यादि योगों की शक्ति प्रदान करते हैं।

श०—देह, स्वरूप, आत्मबल, धनकोष, कुटुम्ब, ख्याति, अमीरी इत्यादि योगों की शक्ति प्रदान करते हैं।

रा०—दिमागी परेशानी, दिमागी गुप्त प्रपंच, कुछ कमी, कुछ कष्ट, किसी दुर्लभ वस्तु को प्राप्त करने की सूझ इत्यादि योगों की शक्ति प्रदान करते हैं।

के०—बाहुबल व हृदयबल की गुप्त शक्ति, कुछ कमी, कुछ कष्ट, किसी दुर्लभ वस्तु को प्राप्त करने की हिम्मत इत्यादि योगों की शक्ति प्रदान करते हैं।

नोट—मकर लग्न वाले व्यक्तियों को ऊपर लिखे प्रकरणों के संबंध में कौन-कौन ग्रह, राशि और स्थान स्थिति के भेद से व दृष्टि भेद से किस-किस व्यक्ति को कैसा-कैसा फल निश्चित रूप से प्रदान करते हैं इसकी पूरी-पूरी जानकारी हमारी भृगुसंहिता पद्धति में कुण्डली नं० ९७३ से १०८० तक में देखिये।

## कुम्भ लग्न ग्रह ज्ञान

कुम्भ लग्न वाले प्राणियों की कुण्डलियों में कौन-कौन ग्रह खास तौर से किस-किस विषय का फल प्रदान करने के अधिकारी हैं।

सू०—स्त्री, दैनिक रोजगार, भोग, दैनिक कार्य का प्रभाव इत्यादि योगों की शक्ति प्रदान करते हैं।

चं०—शत्रु, रोग, पाप, ननसाल, मनोबल की शक्ति व परिश्रम, झगड़े-झंझट इत्यादि योगों की शक्ति प्रदान करते हैं।

मं०—बाहुबल की शक्ति, भाई, बहन, पिता, राज, समाज, मान, प्रतिष्ठा, कारबार, पदवी इत्यादि योगों की शक्ति प्रदान करते हैं।

बु०—विद्या, संतान, वाणी, आयु, मृत्यु, पुरातत्व ज्ञान, गूढ़ विवेक, दिनचर्या, दूर देश का संबंध, बुद्धि की कठिनाई व परिश्रम इत्यादि योगों की शक्ति प्रदान करते हैं।

गु०—धनकोष, कुटुम्ब, आमदनी इत्यादि आवश्यक पदार्थ, हृदयबल, बड़प्पन से धनोपार्जन इत्यादि योगों की शक्ति प्रदान करते हैं।

शु०—माता, मातृभूमि, सुख, मकान, जायदाद, भाग्य, धर्म, यश, दैवी सफलता, दैवी सुख, सतोगुणी चतुराई, शांति इत्यादि योगों की शक्ति प्रदान करते हैं।

श०—देह, स्वरूप, आत्मबल, खर्च बाहरी स्थानों की सम्बन्ध शक्ति, दैहिक कमजोरी इत्यादि योगों की शक्ति प्रदान करते हैं।

रा०—दिमागी परेशानी, दिमागी गुप्त प्रपंच, कुछ कमी, कुछ कष्ट, किसी दुर्लभ वस्तु को प्राप्त करने की सूझ इत्यादि योगों की शक्ति प्रदान करते हैं।

के०—आहुबल व हृदयबल की गुप्त शक्ति, कुछ कमी, कुछ कष्ट, किसी दुर्लभ वस्तु को प्राप्त करने की हिम्मत इत्यादि योगों की शक्ति प्रदान करते हैं।

**नोट**—कुम्भलग्न वाले व्यक्तियों को ऊपर लिखे प्रकरणों के सम्बन्ध में कौन-कौन ग्रह, राशि और स्थान स्थिति के भेद से व दृष्टि भेद से किन-किन व्यक्तियों को कैसा-कैसा फल निश्चित रूप से प्रदान करते हैं, इसकी पूरी-पूरी जानकारी हमारी भृगु-संहिता पद्धति में कुण्डली नं० १०८१ से ११८८ तक में देखिये।

## मीन लग्न ग्रह ज्ञान

मीन लग्न वाले प्राणियों की कुण्डलियों में कौन-कौन ग्रह खास तौर से किस-किस विषय का फल प्रदान करने के अधिकारी हैं।
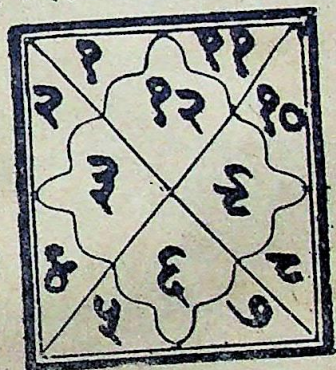
सू०—शत्रु, रोग, ननसाल, प्रभाविक शक्ति, झगड़े-झंझट, विजय इत्यादि योगों की शक्ति प्रदान करते हैं।

चं०—विद्या, संतान, वाणी, मनोविज्ञान, शान्ति इत्यादि योगों की शक्ति प्रदान करते हैं।

मं०—धनकोष, कुटुम्ब, भाग्य, धर्म, यश, बरकत, शक्ति, न्यायोक्त धन, सकाम भक्ति इत्यदि योगों की शक्ति प्रदान करते हैं।

बु०—माता, मातृभूमि, मकान, जायदाद, सुख, स्त्री, भोग, ग्रहस्थ विवेक, दैनिक रोजगार इत्यादि योगों को शक्ति प्रदान करते हैं।

गु०—देह, स्वरूप, आत्मबल, कर्मबल, हृदयबल, पिता, राज, समाज, कारबार, मान, प्रतिष्ठा, पदवी इत्यादि योगों का शक्ति प्रदान करते हैं।

शु०—वाहुबल, भाई वहन, आयु, मृत्यु, दिनचर्या, पुरातत्व शक्ति, गूढ़ चतुराई का बल इत्यादि योगों की शक्ति प्रदान करते हैं।

श०—आमदनी, आवश्यक पदार्थ, खर्च, बाहरी स्थानों का सम्बन्ध इत्यादि योगों की शक्ति प्रदान करते हैं।

रा०—दिमागी परेशानी, दिमागी गुप्त प्रपंच, कुछ कमी, कुछ कष्ट, किसी दुर्लभ वस्तु को प्राप्त करने की सूझ इत्यादि योगों की शक्ति प्रदान करते हैं।

के०—बाहुबल व हृदयबल की गुप्त शक्ति, कुछ कमी, कुछ कष्ट, किसी दुर्लभ वस्तु को प्राप्त करने की हिम्मत इत्यादि योगों की शक्ति प्रदान करते हैं।

**नोट**—मीन लग्न वाले व्यक्तियों को ऊपर लिखे प्रकरणों के सम्बन्ध में कौन-कौन ग्रह, राशि और स्थान स्थिति के भेद से व दृष्टि भेद से किस-किस व्यक्ति को कैसा-कैसा फल निश्चित रूप से प्रदान करते हैं इसकी पूरी-पूरी जानकारी हमारी भृगुसंहिता पद्धति में कुण्डली नं० ११८१ से १२९६ तक में देखिये।

## भृगु संहिता पद्धति

इस ग्रंथ के अन्दर दुनिया भर के आदमियों की कुण्डलियों के प्रत्येक ग्रहों का पूरा २ फलादेश, सत्य सिद्ध साबित होने वाला सरल हिन्दी के अन्दर लिखा हुआ है। इस पुस्तक के द्वारा थोड़ी सी हिन्दी का जानकार भी बगैर ज्योतिष सीखे अनेक जन्म कुण्डलियों के जीवन भर के फलादेश सहज ही में मालूम कर सकता है और वह गलत जन्म कुण्डलियां सहज में ही सही की जा सकती हैं, जोकि बच्चे की पैदाइश के वक्त घड़ियों की गलती या औरतों की असावधानी के कारण सही टाइम न मिलने से गलत बन जाती हैं। बड़े-बड़े विद्वानों और पंडितों ने इसकी बहुत प्रशंसा की है। इस बात की हमारी गारंटी है कि आप सैकड़ों रुपयों की ज्योतिष पुस्तकें एक साथ खरीद करके भी इतना सच्चा व सरल और इतनी बड़ी तादाद में विस्तृत रूप से लिखा हुआ फलादेश प्राप्त नहीं कर सकते।

जिल्द पक्की, पृ० ७७०, मूल्य केवल १०)। डाक खर्च अलग।

## शरीर सरवांग लक्षण

इस पुस्तक में मनुष्य शरीर की बनावट के ऊपर चोटी से लेकर एड़ी तक विभिन्न अंग, प्रत्यंग, गुप्त अंग, हस्त रेखा, चेहरे की समस्त बनावट व आकृति, कद, रंग, रूप, स्वभाव, चाल, अंग फड़कन अर्थात् सम्पूर्ण अंगों की बनावट के ऊपर अनुभव सिद्ध फलादेश सरल हिन्दी में लिखे हैं। यह एक अद्वितीय चीज है। जिल्द पक्की, कागज ग्लेज, लगभग १०० पृष्ठ, मूल्य डाक खर्च सहित १।।)।

**देहाती पुस्तक भंडार, चावड़ी बाजार, दिल्ली ६**

**ज्योतिष विज्ञान**—यह अमूल्य ग्रंथ ज्योतिष विद्या के माननीय पंडित विशुद्धानन्द जी गौड़ ज्योतिषाचार्य से बड़े परिश्रम से तैयार कराया गया है।

इस पुस्तक द्वारा जन्म-जन्मान्तर का हाल कहना, जन्म कुण्डली जानना और उनका फल कहना, मौत व जिन्दगी बताना, गुप्त प्रश्नों अथवा मूक प्रश्नों का ठीक-ठीस उत्तर देना, वर्षफल बनाना, माल की तेजी, मन्दी तथा भविष्य का फल कहना, सब प्रकार के मुहूर्त्त और शकुन बताना, विवाह शोधना, बिना देखे जन्म समय का हाल कहना, सूर्य, चन्द्रमा आदि ग्रहों का स्पष्ट करना, हस्त रेखा ज्ञान, गणित और फलित आदि ज्योतिष के तमाम गूढ़ रहस्यों को सरल भाषा में समझाया है। थोड़ा हिन्दी पढ़ा मनुष्य भी ज्योतिष की पूरी विद्या प्राप्त कर सकता है। मूल्य ६) रुपया, डाक व्यय ।।।) अलग।

**व्यापारियों के लिए**—यदि आप तेजी, मन्दी का शौक करते हैं और सुनहरी चांस जानकर फायदा उठाना चाहते हैं तो हमारी पुस्तक **व्यापार चमत्कार** तेजी मन्दी सट्टा नामक पुस्तक पं० रतीराम कृत मंगा कर मालामाल बनिये। इसका नम्बर खाली नहीं जाता। धातुओं तथा गुड़, खांड़, खसखस, मसाला, किराना, जवाहरात, घृत, तेल, सरसों, गेहूँ, चावल, खली, बिनौला आदि हर एक वस्तु की तेजी-मन्दी के सुनहरी चांसों के योग गृह, तिथि, नक्षत्र द्वारा शोधकर हिन्दी भाषा में लिखे गए हैं। मूल्य ५) रुपया।

वी० पी० द्वारा पुस्तकें मंगाने का पता:—

**देहाती पुस्तक भंडार, चावड़ी बाजार, दिल्ली-६**

## विश्वकर्मा प्रकाश

अंगूठी, पिलर, छत, फर्श, डाट, मेहराब आदि और मारबल चिप्स के अपटू-डेट माडर्न डिजाइन दिए गए हैं। मूल्य १२) बारह रुपए।

सहस्रों रुपया लेकर नहीं बताने वाले भेद

## सोप मेकर्ज गाइड (साबुन इण्डस्ट्री)

पृष्ठ संख्या २७२, चित्र संख्या ३१, मूल्य ६) डाक व्यय १।।)

यदि आप साबुन का कारखाना खोलना चाहते हैं तो पहले इस पुस्तक का खरीदें। साबुन में हर प्रकार की खुशबू का हाल, देसी तथा अंग्रजी साबुन बनाने के सुगम और नवीन योग लिखे गये हैं, जिनसे आप कुछ घण्टों में हर प्रकार का अति उत्तम चिकना सस्ता और चमकदार साबुन बना सकते हैं, जैसे लाइफब्वाय, महारानी सोप, सनलाइट हमाम सोप, इत्यादि।

## छ: रुपये में मैट्रिक पास

(प्रैक्टिकल हिन्दी-इंगलिश टीचर)

लेखक—राजेश्वर कुमार गुप्त, एम० एस० सी०, डी० लिट्०

दुनियाँ के एक कोने से दूसरे कोने तक अंग्रजी बोली जाती है। संसार के छोटे-बड़े व्यापारों में, मिलों और कारखानों में और साइन्स के नवीन आविष्कारों में विश्वव्यापी अंग्रेजी भाषा का बोलबाला है। आप अंग्रेजी नहीं जानते तो आप दुनियाँ से अलग पड़े रहेंगे। सीखिए, अंग्रजी सीखना बहुत ही सरल है। अंग्रजी परिवार में जिस प्रकार बच्चे अपनी माताओं से अंग्रेजी सीख लेते है, आप भी उस ईश्वरीय देन के मुताबिक केवल एक घण्टा प्रतिदिन हमारी इस पुस्तक को पढ़कर तीन माह में याद कर सकते हैं। मूल्य ६) छः रुपया, डाक खर्च माफ।

## बड़ा मुकलावा बहार (सुसराल आनन्द) —मोहनलाल

इनके भीतर खास मारवाड़ी भाषा में विवाह से लेकर दूसरे, तीस साल तक के गुप्त रहस्य, जीजा और साली के सवाल-जवाब और साली के मजाक को समझने, हर प्रकार की पहेली का उत्तर देने, पानी आदि खोलने बांधने गुप्त रीति से पत्र लिखने और हर प्रकार की सौन्दर्य की चीजें बनाने, रोग दूर करने के नुस्खे, काम वासना तेज करने के लिए दिलखुश कहानियाँ आदि सब कुछ ही लिखा हैं। जब पहली बार जंवाई सासरे जाते हैं तो ऐसी पुस्तक की बड़ी जरुरत रहती है। सजिल्द पुस्तक का मूल्य साढ़े चार, रुपया डाक खर्च १।)

देहाती पुस्तक भण्डार, चावडी बाजार, देहली-६

सेक्स व कामकला की अधिकृत वैज्ञानिक जानकारी कराने वाली
गृहस्थोपयोगी सचित्र तीन पुस्तकें

## (१) प्रेम सूत्र   कांशीराम चावला

दाम्पत्य-जीवन को स्वर्ग तुल्य बनाने में सहायक पुस्तक जो आप की आपसी अनबन दूर कर देगी, आपकी पत्नी को आप की सेविका, आप के पति का आप का गुलाम बना देगी, घर में धन-दौलत, प्यार मुहब्बत और हँसी-खुशी का सागर लहरें मारने लगेगा। मूल्य ३) तीन रुपया, डाकव्यय १)

## (२) काम सूत्र   ले० कांशीराम चावला

इसमें बताया गया है कि आप किस प्रकार कामकला के सम्बन्ध में अपना ज्ञान बढ़ाकर और इसके सिद्धान्तों को क्रियात्मक रूप में अपने आप पर लागू करके समाज में आदरणीय स्थान प्राप्त कर सकते हैं और अपने दाम्पत्य जीवन को सुखी बनाकर एक आदर्श गृहस्थ का उदाहरण समाज के सामने उपस्थित कर सकते हैं। मूल्य ३) तीन रु०, डाक व्यय १)

## (३) गर्भसूत्र   ले० कांशीराम चावला

हृष्ट-पुष्ट, निरोग और दीर्घायु सन्तान उत्पन्न करने के वैज्ञानिक उपाय, बिना कष्ट के प्रसव, शिशु का पालन-पोषण मातकला और सन्तति नियंत्रण फैमली प्लानिंग के सरल उपाय आदि। मूल्य ३) तीन रुपया, डाक व्यय १) अलग

तीनों पुस्तकें एक साथ मँगाने पर डाक खर्च माफ अर्थात नौ रु० की V P की जावेगी।

एकान्त में बैठकर पढ़ने वाली पुस्तक

## प्रेम भरे पत्र (बृहद लवलैटर्ज)

नदी के किनारे की वे सब बातें, कुञ्जों का मिलन, यौवन की सुनहली बातें, मीठे २ पत्रों का आदान प्रदान, शोखियाँ, हसरतें आखिर लेखक की पैनी दृष्टि से ये सब कहाँ तक बच सकते हैं। सच्चे चित्र खींचे गये हैं तूफानी संसार की हसरत भरी बातें। तड़पते अरमान, वे चाँदनी रातें, चुटकीले व्यंग, यहाँ तक कि यौवन की मस्त हिलोरें, कालेज के रोमांस, बुढ़ापे क जलन बीबी के प्रेम पत्र, गँवारों की अटपटी भाषा, हवाई किले, उत्तम क विता आज ही खरीदिए, सरल भाषा में रोमांस का बेजोड़ ग्रन्थ ४०० पृष्ठों का सजिल्द पुस्तक का मूल्य केवल ५) पाँच रु०, डाक व्यय १।।)

देहाती पुस्तक भण्डार, चावड़ी बाजार, देहली-६

## मानसिक ब्रह्मचर्य तथा कर्मयोग—सेठ फकीरचन्द

प्रेमी और प्रेमिका को काम क्रीड़ा में आनन्द दिलाने वाली पुस्तक जिसमें प्रेमिका या प्रेमी में सम्मिलन नहीं करने वाले मनुष्य के वियोग के कारण तपित रोगा का इलाज किया गया है। अवश्य मंगाइये। सुन्दर कपड़े की जिल्द। पृष्ठ ६२५, कीमत छः रुपया, डाक व्यय १।।) अलग।

विद्यार्थियों की नैतिक प्रबलता के हेतु शिष्टाचार के लिये

## विद्यार्थी शिष्टाचार—(ले० रामचन्द्र भारती)

शास्त्रों ने बालक का प्रथम गुरु माता को माना है। दूसरा पिता को और तीसरा आचार्य को। बालक के हृदय और मस्तिष्क पर माता की शिक्षा के जो संस्कार पड़ जाते हैं, वह जीवन पर्यन्त नहीं हटते।

माताओं में शिक्षा के अभाव की पूर्ति यह पुस्तक कर देगी और समस्त देश के लोगों के लिये एक अनुपम उपहार है। मूल्य १।।) डेढ रुपया, डाकव्यय पृथक्।

## उपनिषद्-प्रकाश श्री स्वामी दर्शनानन्द जी

अर्थात् ईश, केन कठ प्रश्न, मुण्डक और माण्डूक्य उपनिषद् मूल संस्कृत—भाषानुवाद एवं विस्तृत व्याख्या तथा अनेक रोचक दृष्टान्तों सहित प्रश्नोत्तर के रूप में यह अद्वितीय ग्रन्थ आपके पास अवश्य होना चाहिए। सजिल्द मूल्य ६) डाक व्यय १।।)

## म्यूजिक व आर्ट की पुस्तकें (डाकखर्च अलग)

फिल्मी वायलिन गाइड, तबला गाइड, दिलरुबा गाइड, फिल्मी जलतरंग गाइड, शास्त्रीय कंठ संगीत, कबीर संगीत भजनामृत, सूर संगीत भजनामृत, तुलसी संगीत भजनामत, गुरु नानक संगीत भजनामृत, सहजोबाई संगीत भजनामृत, मीरा संगीत भजनामृत, दादू संगीतामृत, राष्ट्रीय हारमोनियम गाइड, बाँसुरी गाइड, मधुर कंठ—प्रत्येक का मूल्य २।।) फिल्मी हारमोनियम गाइड २।) हारमोनियम पुष्पांजली ३) संगीत सरोवर १०।।) संगीत वाटिका ३) भक्ति संगीत प्रकाश १०।।) म्यूजिक टीचर ३)

**अन्य पुस्तकें**—नक्काशी आर्ट शिक्षा ४।।) बढ़ई का काम ४।।) राजगीरी शिक्षा ४।।) विश्वकर्मा प्रकाश १२) फर्नीचर कैटलाग २) मिस्त्री डीजायन बुक २४) चित्रकारी ४।।) पेन्टरी ४।।) साबुन इन्डस्ट्री ६२) कपड़ों की रंगाई धुलाई छपाई ।।।) किचन गार्डन १।।।)

**देहाती पुस्तक भंडार, चावड़ी बाजार, देहली-६**

# अन्य टैक्नीकल पुस्तकें

| नाम पुस्तक | मूल्य | नाम पुस्तक | मूल्य |
|---|---|---|---|
| इलैक्ट्रिक इंजीनियरिंगबुक | १५-०० | इलैक्ट्रिक मोटर्स | ८-२५ |
| इलैक्ट्रिक वायरिंग | ४-५० | वर्कशाप गाइड | ३-०० |
| मोटरकार वायरिंग | ४-५० | साईकिल रिपेयरिंग | २-५० |
| इलैक्ट्रिक लाईटिंग | ८-२५ | हारमोनियम रिपेयरिंग | २-५० |
| इलैक्ट्रिक सुपरवाईजर पेपर्ज | १०-०० | सिलाई मशीन रिपेयरिंग | २-५० |
| आयल व गैस इंजन गाइड | १५-०० | ग्रामोफोन रिपेयरिंग | २-५० |
| आयल इंजन गाइड | ६-०० | रेडियो मास्टर | २-५० |
| क्रूड आयल इजन गाइड | ४-५० | सर्वे इन्जीनियरिंग बुक | १२-०० |
| वायलैस रेडियो | ६-०० | इलैक्ट्रिक तथा गैस वैल्डिंग | ८-२५ |
| रेडियो सर्विसिंग (मैकेनिक) | ८-२५ | फाउन्ड्री प्रैक्टिस | ८-२५ |
| घरेलू बिजली रेडियो मास्टर | २-५० | इलैक्ट्रोप्लेटिंग | ४-५० |
| फिटिंग शाप प्रैक्टिस | ७-५० | वीविंग गाइड | ४-५० |
| इलैक्ट्रिक मीटर्स | ८-२५ | सुपरवाईजरी शिक्षा | ६-०० |
| छोटेडायनेमोइलै०मोटरबनाना | ४-५० | लोकास्ट हाउसिंग टैक्निक | ५-२५ |
| प्रैक्टिकल आर्मेचर वाइंडिंग | ७-५० | लोको शैड फिटर गाइड | १२-०० |
| रैफरीजरेटर गाइड | ८-२५ | मोटर ड्राइविंग पृष्ठ ३२० | ४-५० |
| बृहत रेडियो विज्ञान | १५-०० | मोटरकार इन्स्ट्रक्टर | ११-५० |
| ट्रांसफार्मर गाइड | ६-०० | मोटर साईकिल गाइड | ४-५० |
| जनरल मैकेनिक गाइड | १०-०० | आटोमोबाइल इंजीनियरिंग | १२-०० |
| मोटर कार ओवरहालिंग | ६-०० | प्लम्बिग व सेनीटेशन गाइड | ६-०० |
| सर्किट डायग्राम्ज आफ रेडियो | ३-७५ | बिन बिजली का रेडियो | १-२५ |
| फरनीचर बुक | १२-०० | फरनीचर डिजायन बुक | १२-०० |
| वर्कशाप प्रैक्टिस | १०-०० | स्टीम बायलर्स और इंजन | ८-२५ |
| स्टीम इन्जीनियर्स गाइड | १०-०० | आइस प्लांट (बर्फ मशीन) | ४-०० |
| सीमेंट की जालियों के डिजाइन | ६-०० | ब्लैकस्मिथी (लुहार गाइड) | ४-५० |
| हैंडबुक बिल्डिंग कन्स्ट्रक्शन | ३६-०० | हैंडबुक स्टीम इंजीनियरिंग | १८-०० |
| कारपेन्ट्री मैनुअल | ४-५० | मोटर परिचय प्रश्नोत्तर में | ६-०० |
| स्कूटरगाइड (आटारिक्शा गाइड) | ४-५० | लोकोशेड फिटरगाइड | १५-०० |

**देहाती पुस्तक भण्डार, चावडी बाजार, देहली-६**

# स्वस्थ व सुन्दर बने रहने के रहस्य बताने वाली पुस्तक
## सदा जवान रहो (ले० कांशीराम चावला)

प्रत्येक स्त्री और पुरुष के लिए समान रूप से उपयोगी पुस्तक जिसमें १०० वर्ष की आयु तक स्वस्थ, शक्तिशाली और सुन्दर बने रहने के वैज्ञानिकों के परीक्षित उपाय बताये गये हैं। अविवाहित लडकों, लड़कियों तथा नव विवाहित जोड़ों को जावन में सफलता पाने के लिए उपयोगी गुरु और नुक्ते लिखे गये हैं। पृष्ठ संख्या लगभग १०००, चित्र संख्या लगभग २००, क्लाथ वाइंडिग, मल्य केवल १२ रुपये। डाक खर्च २ रुपये पृथक।

कुण्डलियों द्वारा फलादेश तथा विचार बताने वाला ग्रन्थ

## अखण्ड त्रिकालज्ञ ज्योतिष (ज्योतिष शास्त्र) भगवानदास मित्तल

मृगु संहिता के आधार पर अत्यन्त लाभप्रद और नवीन ग्रन्थ जिसमें पंचाँग के ग्रह गोचर प्रणालियों, ग्रहों का राशि परिवर्तन तथा गोचर प्रणाली, बारह लग्नों के अन्तर्गत ग्रहों की स्थिति राशियों के अनुकूल और प्रतिकूल ग्रहों का पूर्ण विवेचन किया गया है जिससे प्रत्येक व्यक्ति ग्रह, राशि, नक्षत्र, लग्न व फल का हिसाब सही-सही जान सकता है। मूल्य ४।।) साढ़े चार रुपया, डाक व्यय १।।)

ज्योतिष से सम्बन्धित प्रत्येक व्यक्ति के काम की पुस्तक

## ग्रह दशा सारिणी (पं० हाथीराम शास्त्री)

२५५० पृष्ठों में ७४६३ सारिणी द्वारा विश्व के प्रत्येक मनुष्य का भूत, भविष्य, वर्तमान, शुभाशुभ फल के राशि घन्टे-घन्टे का है। इस ग्रन्थ के अन्दर योगिनी दशा तथा अन्शोत्तरी तथा विंशोत्तरी महादशा, अन्तर्दशा, प्रत्यन्तदशा तथा अन्तिम प्राणदशा तक की सारिणी पूर्ण संशोधन करके लिखी गई है। इस ग्रन्थ के द्वारा सिर्फ ५ मिनट में फलादेश करेंगे जिसे देख व सुनकर आप स्वयं ताज्जुब करेंगे। पुस्तक प्रेस में छप रही है। मूल्य ५०) पचास रुपया, डाक खर्च ५) अलग।

## श्री भृगु संहिता ग्रन्थ

ज्योतिष महाशास्त्र सम्पूर्ण ग्रन्थ भाषा टीका सहित छपकर तैयार हो गया है। इस बार कुण्डली खण्ड संवत १०६१ सेसम्वत् २०२० तक की कुण्डली छापी गई हैं। चिकना कागज स्पष्ट व शुद्ध छपाई पर विशेष ध्यान दिया गया है। ११ खण्डों में सम्पूर्ण ग्रन्थ का मूल्य ५०) डाक खर्च ६) अलग।

देहाती पुस्तक भण्डार, चावड़ी बाजार, दिल्ली-६